योग दिवस पर...

प्रतिफलन

करीं किरिन से आचमन
उगत सुरूज के ध्यान
साँसन में उर्जा भरीं
फेरु करीं प्रस्थान !
देखीं अइसन
कि उगे जोति आ/उजियार भरे
देखीं अइसन
कि झरे दीठि से
शीतल झरना....
भूख आ प्यास मिटे
मन के उदबेग घटे
रोग आ दुःख हरे
जोग आ क्षेम करे !
देखीं अइसन कि उगे जोति
आ उजियार भरे !!

साध के साधि लीं एतना कि मन
भरल लागे
काँट-कुस के डहर अनुकूल
आ सरल लागे
घाम, बरखा, हवा, जल-सोत पर
सबकर हक बा
सोच ईहे रहे कि
होय भल सबकर इहवाँ
माई के, बाप के, पुरूखन के
असिरबाद फरे
दीठि से नेह झरे
रोग आ दुःख हरे
जोग आ क्षेम करे !
देखीं अइसन कि उगे जोति आ
उजियार भरे !

खोजीं अपने में/कवनो ठाँव, जहाँ
नेकनीयत से बसे/अउर रसे गाँव उहाँ
अपनपन, प्रेम के उमंग उठे
शब्द के प्रान मिले
सुर जगे, तान मिले
राग-रसायन पाके
भोर के सुरूज भरे तेज
ललाई झाँके
सबका अधरन प' हँसे फूल
निकाई बिहँसे
लय बने जल-तरंग/दाह ताप शान्त करे
रूह में रंग भरे
लोग बूड़े आ तिरे !

हो सके ना अगर त मौन धरीं
मूनि लीं आँखि/गहिर साँस भरीं
साँच का आँच के स्वीकार के/महसूस करीं
नीक लागे अगर/त नीक के महसूस करीं...
देखीं अइसन कि/झरे दीठि से
उमगत झरना...
भूख आ प्यास मिटे/मन क उदबेग घटे
जोग आ क्षेम करे।।

अशोक द्विवेदी

अथ कटहर पुरान

गंगा प्रसाद 'अरुण'

जाहो निझाइल जवानी! एह भरल बसंत के भोरहरिया में इयादो आवे के रहले त रामेटहल काका आ कपार पर चकरघिन्नी खात उनकर कहटर पुरान! असल में अभी निनिआइले रहीं कि सुतले–सुतले सुरता पर चढ़ गइले भोजपुरी के अमर गायक खलील जी अपना पूरा लय–सुर में भोलानाथ गहमरी जी के सरब सुखकर गीत– 'प्रीत में ना धोखा देई, प्यार में ना झाँसा, प्यार करीं अइसन जइसे कटहर के लासा' – प्रीत–परेम के एगो अजगुत बरनन। आ एह फागुन में के ना प्रीत–परेम के इयादे से बिखिया जाला! अइसहूँ त कहल जाला 'भर फागुन बुढ़वा देवर लागे' आ 'बासियो कढ़ी फफा जाय फगुनहटा के आँच लगले'। फिर ई 'कटहर के लासा, केकरा के नहिं फाँसा?'

अबहीं परेम–वरेम के परे धरीं, कटहर से हमार परेम खानदानिए हऽ। हमार बाबा रहलीं पूरा–पूरा कटहरिया। कतहूँ कवनो गाछ पर लेंढा लउकल ना कि 'गाछे कटहर, ओठे तेल' अइसन उनका मन पर चढ़ जाय कटहर। अइसे ऊ बड़ा गेआनी रहले आ हरमेसे कहत रहलें– 'कटहर हऽ केहू खातिर 'कष्टकर', त केहू खातिर 'कष्टहर'' – बाबा खातिर त पूरा–पूरी 'कष्टहर'। आ एह कटहर–प्रेम के कई–कई प्रेरक–पीड़क प्रसंग आइल हमरो जिनिगी में। गहमरी जी ई गीत गवला–बजवला से त एकबेर हमरा पड़ोसिये से कहासुनी–तनातनी हो गइल – 'का दो उनकर सेआन लइकी के देख के ई, उनका विचार में, फूहर गीत पर हमार साहित्यिक साथी लोग के गोल अलगे धुमगज्जर मचवले बा।' जाकी रही भावना जैसी! छोड़ीं एह बतंगड़ के – 'ग्वाल बेचारा बिरहा टेरे, भँइस बइठ पगुराय'।

अब देखीं ना, हमरा सोचावट के अमावट पर लाल मिरचाई के झाल आ गइल। कहानी त शुरू भइल रामटहल काका से कहाँ बीच में 'जिनि करुना मँह बीर रस, आइ गएउ हनुमान' अइसन टपक पड़ले गहमरी जी। रामटहल काका के सुरता पर चढ़ले बरबस उनका बगान में तब विराजमान कटहर के ऊ फेंड़ इयाद में दोल्ह मारे लागेला आ तब हमार रामटहल काका सुघर–निखर के 'रामकटहल' काका हो जालन। हिन्दी से भोजपुरी में आवत–आवत कटहल 'कटहर' हो जाला। ई कटहर 'वैष्णव' लोगन खातिर फगुआ के दिने माँस–मछरी–मुरगा से कम ना होखे। ओह दिन उनका मनसा में कटहरे के लहार–बहार। पता ना कइसे हाथ के अँगूठा एकर प्रतीक–पर्याय बन गइल– 'अब का लेब, बाबाजी के कट (कटहर)'!

एह कटहर–प्रसंग में रामटहल काका के लंगोटिया इयार मुरली बाबू के इयाद कइसे ना आवे? असल में काका के गाछ से कटहर के जतना मूअल लेंढ़ा गिरे, सब चुन–बचा–जोगा के राखल जाय उदारतापूर्वक मुक्त–हस्त से बाँटे खातिर। कहल गइल बा– 'उधिआइल सातू पितरन के' आ 'सूखल सीठी, पंडीजी के लीटी'।

बूझ जाईं भाई साहेब कि कटहर के मूअल लेंढा के उदरदानी रहलें काका। मजाल कि ऊ गाछ के साबुत कटहर दे देस केहू के! घरहीं में रहबत ना होइत। एक बेर बंदी–करफू के बेर सब्जी–भाजी के ना मिलला के चलते आ गइलन, एक जाना दाँत चिहरले– 'एगो कटहर मिल जाइत त.....'। ऊ का बोलतें, उनकर बड़के बेटा बोल गइल– 'फलना परसाद, जानत नइखऽ, सब कटहर पाके खातिर नूँ छोड़ल जाला!' – आ फलना परसाद के बोलती बंद। अइसे मालूम होत रहे एने–ओने से कि भर–भर बोरी कटहर पार्सल होला गाँवे, बस से चुपका चोरी। डिठार में त बस वाला का दो लदबे ना करेलन स कटहर।

हँ, त भर झोरा मूअल लेंढ़ा एक बेर अपना लंगोटिया दोस्त मुरली बाबू के जबरदस्ती धरवलें– 'ले जा मुरली, आज तोहरो चुहानी गमके।' मुरली बाबू उछाहे घरे अइलें– 'सुनत बाड़ू, रामटहल भाई ई कटहर दिहले ह। तनी परेम से बनइहऽ एकरा के।' मरल लेंढ़ा देखते मेहरारू के मन मउराइल– 'एजी, ई कुल्हि त मरल–सरल बाड़े स, एकर तीयन–तरकारी के त तेलो–मसाला बरबादे होई।' अब गरमइले तनी मुरली बाबू– 'तोर बाप–दादा खइले बाड़न कबो कटहर! रामटहल भाई जतना परेम से देले बाड़न, ओतने परेम से बनावऽ एकरा के।' बेचारी अनबोलता धन का करस! बनवली आ परोसली डबलाहे मुरली बाबू के। पहिला टूक मुँह में डालते मुरली बाबू झवान– 'ई त अरघाते नइखे हो, ठीके कहत रहलू तूँ।' उनकर गइयो ओह कटहरदम के सूँघिये के भाग गइल। तब से रामटहल भाई मुरली बाबू के नजर में 'हरामकटहल' गोसाई हो गइलन।

खैर, कटहर पाके के समय आ गइल– पाकल के भोज के जोगाड़ भइल– 'पांडेजी, रउरा अपना घरे से पूआ पकवा ले आइब, दस–पनरह आदमी खातिर। कटहर के कोआ हम ले आइब। भाँग रहबे करी। चानी रात में पहाड़ी पर पिकनिक के चनन–मनन रही। मन के मूअल मुरली बाबू के माथे छोटहन तसली में कोआ के जिम्मेदारी। पांड़े जी के कठवत भर पूआ। सभे भंग के तरंग में गोताइल। एकक आदमी के हिस्सा में दुदुइयो गो कोआ ना। पांड़े जी के पुअवे सम्हरलस ओह पिकनिक के।'

– 'का मुरली भाई, अइसन बहार में, एक मधुर–मदिर बयार में आ ऊपर आसमान में खिलखिलात चाननी के लहार में कवनो गीत–गवनई ना होई।' अब भला मुरली बाबू से अड़ाव! अपना 'रामकटहल' के आदेश पर, पिहिंक उठले– 'चान निकलल, चननिया निकलल, बाकिर नाहीं निकलल रे कटहरिया' – 'हवा डोलल, बेयरिया डोलल, बाकिर नाहीं डोलल रे कटहरिया' – हई निकलल, हऊ निकलल, बाकिर नाहीं निकलल रे कटहरिया–कटहरिया–कटहरिया' – भंग के तरंग में मुरली बाबू के दिल–दिमाग पर जइसे कटहरिया छोड़ के अउर कुछ रहले ना रहे। देर रात के ओह पिकनिक के सराहत–सरापत सभे अपना–अपना घरे। हँ, अतना त भुलाइये गइलीं कि पाकल कटहर के मुंगड़ी आ कोआ के बीया घरहीं रखा गइल रहे रामकटहल जी के, – दू–चार साँझ तीयन–तरकारी के उबार होई।

'हरि अनंत, हरिकथा अनंता' अइसन ई कटहरो पुरान अनंते रहित, बाकिर अइसन भइल ना। केहू सलाह दिहल रामकटहल काका के कि समय–समय पर कटहर के फेड़ के डेहुंगी–टहनी के जतने छेंवटल जाय, ओह में ओतने बतिया–लेंढ़ा लागी। आ ऊ कके का जे जादे से जादे लाभ पावे के सुझाव बूझ ना पावे। आदमी एह काम पर लगावल गइल आ गाछ के डाढ़े–डेहुँगी काहे, ओकर फुलुंगी–मथेला तक छेंवटा गइल। कटहर के गाँछ त अपने टुनुकाह, फिर कवनो गाँछ त पतइये से नू आपना भोजन बनावेला। जादे फरावे के लोभ में गछिये सुखा गइल आ एह अनन्त कटहर–पुरान के एगो दुखद अंत हो गइल। रामकटहल काका के जिनिगी भर एकर अफसोस रहल। ●●

❑ 21बी, रोड-1, जोन-4, बिरसानगर टेल्को,
जमशेदपुर-831019

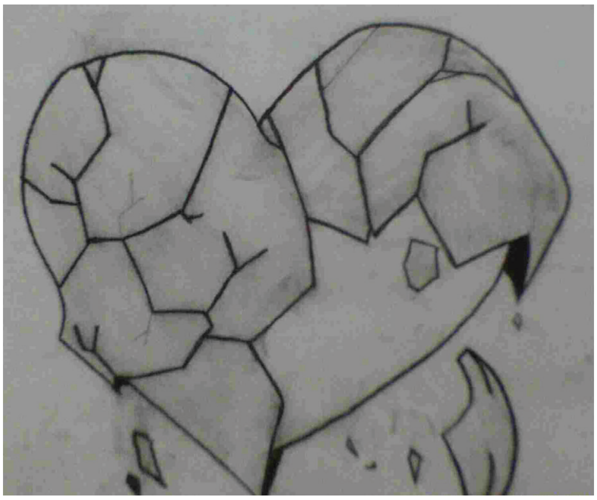

आइल चइत सुभ दिनवाँ

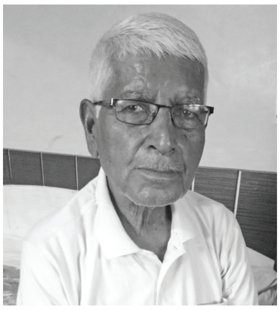

डॉ0 आद्या प्रसाद द्विवेदी

फागुन के पुन्नवासी आ रंगन के त्यौहार फगुवा बीतत–बीतत प्रकृति में ऋतुवन के राजा ऋतुराज बसंत के धमाकेदार पइसारी हो जाला। ऋतुराज बसंत के अवते, शिशिर आपन जाल समेट के, साल भर खातिर, कवनो कोना–अँतरा में दुबकि जाला। बारह महीना में बसंत के पाला में दू महीना आवेला– चइत–बैशाख। संस्कृत में कहल गइल बा – 'मधु माधवः बसंतः', मधु नाँव चइत के हवे आ माधव नाँव वैशाख के। चइत माह के संगे जब धरती प बसंत के पैठ होला तब सगरी धरती क रूप–रंग बदल जाला। जड़–चेतन सभ, आपन पुरनका चोला बदलि के टटका रूप में दिखाई देवे लागेला। काहें से कि ई ऋतु उत्साह लेके आवेले, उमंग आ अल्हड़पन छिटकावत आवेले। बसंत अइला के बाद विक्रमी संवत के पहिलका महीना चइत से शुरू होला। ई चइत महीना आवेला प्रकृति में नया रंग भरे, रस भरे आ जिनगी में गति भरे। चइत महीना के अवते पेड़, फूल, फसल सब के सब नया–नया कोंपलन से प्रकृति रानी के सिंगार–पटार कके ओकरे सुघराई में चार चाँद लगा देले। कतहूँ खेतन में पीयर–पीयर फुलाइल सरसों के मदिर–मदिर महक एगो सरेह में बिखर उठाला, त कहीं आम के गदराइल बौरन से टप–टप रस धरती पर चुवे लागेला आ कही महुआबारी में महुआ के कोंचा से टपकत रस, कहीं दूर–दराज के बनन में लाल–लाल खिलल पलाश विरहिन बदे आग के दहकत अंगारा नियर दिखाई देवे लागेला, कहीं गेहूँ के जवान होत बाली हवा के संगे मदमस्त होके खेतन में अठखेलियाँ करत दिखाई देवे लागेले। चइत अवते दूर अमराई से कोकिल के कू–कू आ पपिहरा गूँज उठेला। कवि पद्माकर अपने एक पद में येह रितु के रोचक बरणन करत कइले हवें–

कूलन में, केलिन, कछारन में, कुँजन में
क्यारिन में, कलित, कलीन किलकन्त है।
कहै पद्माकर परागन में पौन हूँ में
पावन में, पकिन में, पलासन पगन्त है।
द्वार में, दिसान में, दूरी में, देस–देसन में
देखी दीप दीपन में, दीपत निगंत है।
वीथिन में, ब्रज में, नवेलिन में, बेलिन में
बनन में, वागन में बगर्‌यो बसंत है।

चइत के मताइल महीना, फूलन पर झूम–झूम के रस पीअत मताइल तितली, आम के बौर से टपकत मताइल महक, दखिनहियाँ बयार, कोयल के कूहू, पपिहा के मन के हूक जड़–चेतन सभ के मन में एगो अलगे प्रकार के मस्ती अउर रस भीनल महक घोर देला, संयोगिनि औरत भाग प इठला उठेले, लेकिन वियोगिनि अपने भाग्य पर आठ–आठ आँसू चुवावेले। ऊ सब अपने जिअले के भरोसा छोड़ि

बइठेली। ऊ सोचि उठेले कि अगर प्रियतम बसन्त बीतत–बीतत अइबो करिहें त का तबले प्रान शरीर में रहबो करी?

प्रकृति रानी अउर रसीला बसंत के मिलन केतना मदहोस करे वाला होला, एकर टहकार चित्र एक कविता में उरेहल गइल बा

रसे–रसे बहेले बयारि, कि रतिया रसे–रसे डोले।
रसे–रसे घुँघटा उघारे, चइतवा रसे–रसे बोले।
रसे–रसे ढरकेला चान, चँदनियाँ रसे–रसे काँपे।
रसे–रसे अँखिया उघारे, पलकिया रसे–रसे ढाँपे।

महुवा टपक–टपक के सगरी बाग–बगइचा के मदहोस बना के, चइत महीना अइले के ढिढोरा पीटि देला आ मधुमास नाँव के सार्थक बना देला। कविवर मोती बी0ए0 जी अपने 'महुवाबारी' कविता में कहले हवें–

असों आइल महुवावारी में बहार सजनी।
कोंचवा मातल भूइयाँ छूबे, महुवा रसे–रसे चूवे।
महुआ अइसन अगरइले। जरी पुलुई से
कोंचइले, लागल डाढ़ी–डाढ़ी
डोलिया–कँहार सजनी।

चइत के महीना में जहवाँ एक ओर गोहूँ के गोर गाल गुनगुना के, पाकल सरसों पैंजनी बजा–बजा के फसल काटे खातिर बनिहारन के नेवता परोस रहल बा त कहीं काटि–काटि के फसल खरिहान में गँजात जात बा, त दुसरकी तरफ मादक बयार से सिहरा देवे वाली चइत के रात विरहिन के मन में काम के नगाड़ा भी बजा रहल बा। कठोर कठकरेजी पति खातिर कवनो विरहिन के ई ओरहन केतना दर्द से भरल बा–

आइल चइत उतपतिया ये रामा, नाहीं भेजे पतिया
विरही कोइलिया सबद सुनावे, कल न पड़े
अब रतिया हो रामा।

रसगर माह के रसगर बखान लोकगीतनों में खूब भइल हवे। लोकगीतन में विरहिन के दर्द बहुत चटक रंग से उभारल गइल बा। एक लोकगीत में पपिहरा अपने तान में मगन कबो बागन में, कबो फुलवारी में, कबों नेबुला के डारन पर, कबो कुँअना के मुंड़ेर पर बोल रहल बा। जब विरहिन अपने सेजिया पर सूते के कोसिस बा, तबो ऊ पाखी मानत नाहीं बा, उड़ि–उड़ि के चौतरफा बोलि रहल बा। ओकर दर्द भरल स्वर विरहिन के मन में ओकरा प्रिय के इयाद उदबेगि रहल बा–

बोले स्याम पपिहा के बोली, हमें रात नींद न आवे
बाग में बोले, बगइचा में बोले, नेबुला पर डोल–डोल बोले।
हमें रात नींद न आवे, कुँअना पर बोले, जगतिया पर बोले
सेजो सोए पर बोले, हमें रात नींद न आवे।

मिथिला के एक लोकगीत में कवनो विरहिन कहति बा कि जब चइत माह बीति जाई तब हमार मूरख पति अइबो करी त का आई? हम देखत बानी कि अमराई के बौर में टिकोरवा निकरि आइल बा, लाल–लाल पल्लवन के गहना से डार–डार लहसि उठलि बा लेकिन पिय नाहीं अइबे–

चैत बीति जयतइ हो रामा
तब पिया की केर अवतइ।
अरे अमवाँ मोजरि गेल
फर गइल टिकोरवा
डारे पाते मतवलवा हो रामा।

प्रकृति के गदराइल रूप चइते, महीना में दिखाई देला। चैत के दिन ओतना रसगर त नाहीं होला, लेकिन एह महीना क रात बड़ मदमाती होले। साँझ होते नीम के गाँछ के फूल गजब के महक वातावरण में बिखेर देले। छिटकल चाँदनी रात में चारो ओर बगराइल महक वियोगिनी के मन के थरथरा देला आ कवनो संयोगिन औरत अपने पिया के प्रवास में गइले के चरचा मात्र से घबड़ा जाले–

चित चैत की चाँदनी चाह भरी,
चरचा चलिबो की चलाइये ना।

पूर्वी उत्तर प्रदेश के कई क्षेत्रन में चइत महीना में लोक–गायकन द्वारा गाँवें–गाँवें लोकप्रिय विधा चैता के गायन होला। चैता के ढेर गीतन में कवनो विरहिन औरत के दर्द के ज्यादा चित्र उकेरल गइल रहेला, जइसे एह पारंपरिक चइता में देखल जाय–

रामा चइत की रतिया बड़ बैरिनियाँ
सूतल बलमुआँ नाहीं जागे हो रामा
रामा साँझहि के सूतल, फूटलि किरनियाँ हो रामा
तबो नाहीं जागेला हमरो बलमुआ हो रामा
रामा तोरा लेखे ननदी तोर भइयो
निंदिया के मातल हो
रामा मोरे लेखे चान सुरुज छपित भइलें हो रामा।

'मधुमाधवः बसन्तः' में मधु के अर्थ 'चइतो' होला, दूसर अर्थ 'अमृत' होला। चैत के बासन्ती बयार

अमृत से पगल–रचल रहेले। ई बयार जड़–चेतन के जगा देले। जगले पर हमार आँखि खुलि जाले।

चैती बयार शीत महीना के आह हवे, जेवन अपने विदा भइले के सूचना देत पयान करेले। सँगे–सँगे मानुष जाति के नया उछाह में डूबि के आगे बढ़े खातिर, उछाह बढ़ावेले। कवनो समय रहे जब देस में गरीबी आपन पाँव गहराई तक जमवले माथ–फागुन के दिन लोग कवनो बेंवत लगा के एह आस में काटत रहें कि चइत अवतें उनकर भाग्य के दिन लवटि आई। लोक में कहावत प्रचलित रहे कि "जब आइल चइतवा राना त घुरओ पर दू दाना।" मतलब ई रहे कि चइत अवते किसान आपन अनाज घर में ले आई त छिटा के घूरो पर अनाज के दाना पड़ जाई। किसान के दिन लवटी। पचास–साठ बरिस पहले किसान के सब आसरा अपने खेतिये का भरोस पर पूरन होखे।

आजु के समय में लोगन के मन में भारतीय परम्परा के नयका साल चइत के प्रति कवनो उछाह नाहीं बा। अब सब ईसाई परम्परा के नवका साल मनावे खातिर अपने बनावटी उछाह में पागलपन के हद तक चल जात बा। अब के नवकी पीढ़ी पर पछुवा बयार के अइसन गहिर असर पड़ल बा कि आपन रीति–रिवाज, संस्कृति आ आचरन सब छोड़ि बइठल बा। अब चइत के अइले पर उछाह से मन उमगत नाहीं, रीझत नाहीं। जइसे चमड़ा सीझेला अइसहीं अन्दर अन्दर मन सीझ रहल बा। मन जब उछाह से भरल रहेला, तबे प्रकृति के सुघराई सुहाला। कहावत कहल गइल बा कि 'मन चंगा त कठौती में गंगा'। आजु के समय के हिसाब से लोकगीत के एह पंक्ति पर फेरू से सोचे के परी कि 'आइल चइत सुभ दिनवाँ' कहल केतना सार्थक बा। ●●

❑ मालती कुंज, सिद्धार्थ इन्केलेव विस्तार,
तारामण्डल, गोरखपुर

सौरभ पाण्डेय के दू गो गजल

(एक)

साफ बोले में बा हिनाई का ?
काहें बूझीं पहाड़-राई का ?

चाँद-सूरज में दोस्ती कइसन ?
धंधा-पानी में 'भाई-भाई' का ?

सब इहाँ जी रहल बा स्वारथ में
हम्हुँ जीहीं त जग-हँसाई का ?

सूर्य हऽ ऊ, भला सितारन के -
कवनो इहवाँ सभा बोलाई का ?

आजु साहित्य का मुनाफा हऽ
गीत कइसन ? गजल-रुबाई का ?

मुट्ठिये के पकड़ बतावे ले
फेर में ई बिया कलाई का ?

खुदकुशी के हुनर में माहिर हम
कामना का ? कहऽ बधाई का ?

खून मूँहे जे कवनो के लागल
हमरा मालूम बा दवाई का ?

(दू)

फलनवा बन गइल मुखिया रँगाइल गोड़ माथा ले।
बनल खेला बिगाड़े के.. चिलनवा ठाढ़ लाठा ले।

बड़ा अउलाह झामा-झम भइल बरखा सनूखी में
दलानी से चुल्हानी ले अशरफी लूटु छाता ले !

सियासत के बगइचा में तनी मोका भेंटाए तऽ
जे बकरी पात पऽ निखुराह.. ऊहे गाँछ ले खाले।

भले कतनो पड़ऽ गोड़े, निहुरि करि दऽ कमानी देहि
नजर में तूँ अगर नइखऽ गुनाहे बा रहल पाले।

फजीरे रोज ऊ आसा-भरोसा में निकल जाला
किरिन डूबत पलट जाला पिराते देहि-माथा ले।

चलन आखिर भला काहें रहल संसार के, कहियो -
बथाने नेह पोसल गाइ, पगहा तूरि चल जाले।

बुझा जाला तुरंते भाव 'सौरभ' बाप के का हऽ
जबे बेटी फुदुकते आ.. सटावे गाल से गाले। ●●

❑ एम-2/ए-17, ए० डी० ए० कॉलोनी,
नैनी, प्रयागराज - 211008

आम बनल खास

✍ भगवती प्रसाद द्विवेदी

जनतंतर के एह महापरब पर भला केकरा गरब ना होई। तबे नू जइसे घूरा के दिन फिरेला, ओइसहीं हर तरे दबाइल–मिसाइल–कचराइल “आम–अदिमी” आजु फेरु पाँच बरिस पर महान आ खासमखास हो गइल बा। ओकरा धुरियाइल गोड़ पर माथ टिकावल जा रहल बा। उहे अदना आम अदिमी चुनावी जंग के महारथियन खातिर ‘त्वमेव सर्वम् मम देव–देवः’ हो गइल बा।

खास आ खासमखास– सबके खिंचाव का केन्द्र में बा आम अदिमी। राजनीति के मँजल खेलाड़िन के त बाते निराला बा। ओह लोग खातिर सोना के अंडा देबे वाली मुर्गी लेखा बा “आम–अदिमी”। कइसन नायाब झुनझुना बा ई खासन खातिर, जवना के मन बहलावे का गरज से बजावे में कवनो हरज ना होला। अबरा के जोरू, सभकर भउजाई! सांच पूछीं त अबरा के जोरुए होला आम अदिमी। “आम–अदिमी” माने “जनसामान्य” भा “जनता जनार्दन”। निचिला तबका के शोषित–उत्पीड़ित जानवरनुमा मनई। जइसे मेहरारू के देवी कहेके चलन बा, त ओकर आबरू लूटे के छूटो बा, कुछ ओइसहीं ई “आम–अदिमी” जनतंतर के मजबूत पायाहोला, त लात मारू जीवो होला। जबरा मरबो करे आ रोवहूँ ना देइ।

“आम” आ “आम–अदिमी” – दूनों एके नियर होला। फलन के सरताज होला ‘आम’, त जनआन्दोलन के सिरमउर होला “आम–अदिमी”। पाकल आम के भरपूर चूसीं आ चटनी, कूंचा, अंचार भा पन्नाा से सवाद बदली। ‘आम के आम आ अंठिली के दाम’ वाली कहाउत त जगजाहिर बड़ले बा। अपना मन–मरजी से आमो अदिमी के जवना रूप में चाहीं, इस्तेमाल करीं। दरअसल लोकतंत्र के रीढ़ के हड्डी होला “आम–अदिमी”। चाहे ओकरा के आम लेखा चूसत रहीं, चटनी नियर चट कऽ जाईं भा अंचार–अस चटखार ले–लेके चाटत रहीं, ऊ मरदवा पोंछि सुटुकावत–हिलावत हरदम रउरा खिदमत में हाजिर रही। बस, नया–नया लोकलुभावन नारा आ लालच के हरियरी फेंकिके ओकरा के अपना मायाजाल में अझुरवले राखीं। खाली जियते जिनिगी–भर ना, बलुक मरि–खपि गइला का बादो बेजान अंठिली नियर “आम–अदिमी” सियासत के मोहरा बनावल जाला।

खासन के अहमियत तबे ले बा, जब ले ई “आम–अदिमी” बा। आमे अदिमी जब ना रही, त आम–खास के बीच के देवाल अपने आप ढहि जाई आ सभ–के–सभ खास बनि जाई। कइसन लाजवाब तरीका बा ई! गरीबन के खात्मा करीं, गरीबी खुदे खतम हो जाई। सभ दिक्कत के जरि बा आमे अदिमी। अगर “आम–अदिमी” रहबे ना करी, त मए मोसकिल अपने आप आसान हो जइहन स। तबे त खाली बेमारी–हेमारी, महामारी, कुदरती आफत–विपतिए में ना, बलुक दंगा–फसाद, सामूहिक

नरसंहार, बाढ़, अकाल, भुखमरी नियर विभीषिको में खाली आमे अदिमी आ ओकर हीत–नात मुवेलन। बाकिर तबो ओकर समूल नाश कहां हो पावेला! एगो के खतम होते खदबदात अनगिनत जनमि जालन स–रक्तबीज जइसन। कइसन जांबाज जिन्न बाड़न स ई कमबख्त "आम–अदिमी"।

देश के पंचसाला जोजना होखे भा तरक्की के प्रोग्राम, परिवार के नियोजित राखे के नया–नया तौर–तरीका होखे भा साक्षरता के नित नूतन प्रयोग, खेती के आधुनिक तकनीक होखे भा गरीबी दूर करेके सरकारी उपाय– सभ के जरि में बा "आम–अदिमी"! एकर सोरि अतना गहिर बा कि एकरा के जरी–सोरी खतम कइल मोसकिले ना, नामुमकिनो बा।

बाकिर तनी सोचीं त सही, अगर "आम–अदिमी" के सँाचों के सफाया हो जाई, त मए सरकारी जोजना आ कार्यक्रमन के का होई? केकरा खातिर बड़–बड़ मोट रकम उगाहल जाई? केकरा नांव पर रहनुमा लोग चानी काटी? तब चुनावी मुद्दा केकरा खातिर बनावल जाई? नेतन खातिर धरना, प्रदर्शन, लेखन के फेरु का उपयोगिता रहि जाई? तब खास लोगन के का खासियत रहि जाई? मीडिया के ललचावे वाला इश्तहार फेरु केकरा के रिझाई? हमनीं के जनतांत्रिक मसीहा लोग बुझिला एह बारे में गहिर पइसि के सोचले–विचरले होखसु। तबे त "आम–अदिमी" खातिर चले वाली जोजना आ तरक्की के प्रोग्रामन के भनको ओह लोग ना पहुंचे दिहल जाला, जवना से कि आम अदिमी के अस्तित्व बरकरार रहे आ कवनो कीमत पर ऊ खास जनि बनि पावे। शतरंज के एह मोहरा के बदउलते त सभकर राजनीतिक दोकान फरत–फुलात रहेले आ गोटी लाल होत रहेले।

महान लोकतंत्र के ई बन्हुआ मजूर, "आम–अदिमी" बेचारा त होला, बाकिर बेचारगी एकर गहना होला। राजनेतन के एकरा के बरगलावे के हक हासिल बा। जाति–धरम के नांव पर बांटि–काटि के बहत गंगा में हाथ धोवल कतना आसान होला! फूट डालऽ आ राज करऽ! पुलिस–परशासन के एह "आम–अदिमी" नाँव के जीव पर रोब झारे आ आपन उरुवा सोझ करे के अधिकार बा। रखवार के त भकोसेवाला होखहीं के चाहीं!

भावना–भावुकता में बहि रहल बा "आम–अदिमी", बाकिर घरियारी लोर बहा रहल बाड़न रहनुमा लोग। देश खातिर शहीद हो रहल बा "आम–अदिमी", हर खतरा से खेलत आपन जान तरहत्थी प लेके आगा–आग चलत बा "आम–अदिमी", बाकिर भितरे–भीतर खउलत "आम–अदिमी" चुप्पा काहें कहला? जब ओकर खउलत खून अगिया बैताल हो जाला, त बड़–बड़ इंकलाबी बदलाव करवट लेबे लागेला। सभके हंसावे–गुदगुदावे वाला लबार के दिली रोवाई बुझिला रउआं ना महसूसले होखब। मगर अब अपना जायज हक खातिर खीसि के इजहार करे लागल बा "आम–अदिमी"। आगा–आगा देखीं, का होत बा।

इहवाँ' त अभी जबाइल कोल्हू के बैल बा "आम–अदिमी"। गदहा अस बुद्धू "आम–अदिमी"। धोबी के कुकुर, ना घर के, ना घाट के। चुनाव में रिझावल जा रहल बा "आम–अदिमी"। फुसिलावल जा रहल बा "आम–अदिमी"। पटावल जा रहल बा "आम–अदिमी"। फँसावल जा रहल, पीटल–घसेटल आ दुरदुरावल जा रहल बा "आम–अदिमी"। रेतल जा रहल बा, मुआवल आ दफनावल जा रहल बा "आम–अदिमी"। घोड़ा बेचिके सुतावे का गरज से दूरदर्शनी अय्याशी में डुबावल जा रहल बा "आम–अदिमी"। दिशाहीन बनाके भटकावल जा रहल बा, खास बने के दिन के सपना देखाके भटकावल जा रहल बा "आम–अदिमी"। कुल्हि मिलाके, बलि के बकरा बनावल जा रहल बा "आम–अदिमी"। देखीं, ओकर माई कब ले खैर मनावत बिया। बाकिर केकर माई? बकरा के, आम के? आ कि बलि देबे वाला के? खास के? अबहीं त राजनीति में आम के खास बतावल जा रहल बा आ खास बनल चाहत बा 'आम'। ●●

❑ शकुंतला भवन, सीताशरण लेन,
मीठापुर,पो०बा०-115, पटना, बिहार

काशी कऽ पत्रकारिता

(स्वाधीनता आ भाषा खातिर छटपटात निर्भीक कलम)

डॉ0 अर्जुन तिवारी

काशी 'काश्' से बनल बा। 'काश्' माने ज्योतित भइल, आ प्रकाशित कइल। मनुष्य के निर्वाण पथ के प्रकाशित करे वाली धरती 'काशी' हऽ। महादेव शिव के परमसत्ता, जहाँ प्रकाशित होला ऊहे काशी हऽ। शंकराचार्य जी कहले बाड़े–

"काश्यां हि काश्यते काशी, काशी सर्वप्रकाशिका।
सा काशी विदिता येन तेन प्राप्ता हि काशिका।।"

सर्वप्रकाशिका काशी प्रकाशपुंज हऽ, भौतिक, आध्यात्मिक ज्ञान के प्रकाश स्रोत ईहे नगरी हऽ। ब्रह्म प्रकाश भा ब्रह्म ज्ञान भइला पर काशी के पावल जा सकेला। मिर्जा गालिब कहले बाड़े–

"त आल अल्लाह बनारस चश्म–ए–बद्दूर।
बिहिश्त–ए–'खुर्रम–ओ–फिरदौस ए–मामूर।।"

(बनारस एगो हरा भरा सुन्दर स्वर्ग हऽ। अल्लाह एकरा के बुरी निगाह (नजर) से बचवले रखें।)

काशी के कण–कण भगवान शंकर के बास बा, एही से कहल जाला–

"खाक भी जिस जमीं का पारस है
शहर मशहूर वो बनारस है।।"

एही बनारस से 'बनारस–अखबार' (1845 ई.), 'सुधावर' (1650 ई.), 'कवि वचन सुधा' (1867 ई.) निकलल। आधुनिक हिन्दी के नायक भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र लिखले बाड़े– "हम लोग सर्वान्तर्यामी, सब स्थल में वर्तमान, स्वद्रष्टा और नित्य–सत्य परमेश्वर को साक्षी देकर यह नियम मानते हैं और लिखते हैं कि हमलोग आज के दिन से कोई विलायती कपड़ा नहीं पहिनेंगे।" (कवि वचन सुधा–23 मार्च, 1874 ई.)।

'हरिश्चन्द्र मैगजीन' (1873 ई.), 'बालाबोधिनी' (1874 ई.), 'हरिश्चन्द्र चन्द्रिका' – ई सब पत्रन के एके गो मंत्र रहे–

जपहुँ निरन्तर एक जबान, हिन्दी, हिन्दू, हिन्दुस्तान।

'पीयूष पत्रिका' (1884 ई.), 'धर्मप्रचारक' (1884 ई.), 'धर्मसुधा वर्षण' (1889 ई.) जइसन तीन पत्रन से हिन्दी भाषा के स्वरूप निर्धारित भइल। नागरी प्रचारिणी सभा से 'सरस्वती' के प्रकाशन 1900 ई. में शुरू भइल, जवना के चलते राधाकृष्ण दास, कार्तिक प्रसाद खत्री, जगन्नाथदास रत्नाकर, किशोरी लाल गोस्वामी, श्यामसुन्दरदास हिन्दी भाषा आ साहित्य के पल्लपित पुष्पित कइलें। जयशंकर प्रसाद के साहित्यिक प्रतिभा के मूल में 'इन्दु' पत्रिका बा, जवना के 1909 ई. में अम्बिका प्रसाद गुप्त निकलले।

हिन्दी पत्रकारिता के पर्याय 'आज' हऽ, जवन शिवप्रसाद गुप्त के साधना के प्रामाणिक नमूना सिद्ध भइल। 22 अक्टूबर, 1920 ई. के सम्पादकीय टिप्पणी के शब्दन पर ध्यान लगाईं– "... आज विजयादशमी है। पराजित, पीड़ित, निर्बल

भारत भी विजयदशमी का उत्सव मना रहा है। कैसी विडम्बना है? कैसे अर्थ का अनर्थ हो रहा है?.... भारत! जागो! देखो तुम्हारी क्या दुरवस्था हो रही है? तुम्हारे सिर पर पराधीनता की तलवार लटक रही है और तुम सो रहे हो?"

पराड़कर जी, दिनेशदत्त झा, खाडिलकर, मुकुन्दीलाल, ठाकुर प्रसाद सिंह, ईश्वरचन्द सिन्हा, लक्ष्मीशंकर व्यास, जइसन उत्कृष्ट विद्वान सम्पादकन के लेखनी के प्रसाद से 'आज' पत्रकारिता के गौरव स्तम्भ बनल।

भारत के आजादी के आन्दोलन के कुचले खातिर प्रेस–आर्डिनेंस आ अनेक तरह के सरकारी जोर–जुलुम ढाहल गइल, जवना के मुकाबला में भूमिगत क्रांतिकारी पत्र छापल गइल। सन् 1930 ई. में 'रणभेरी' निकलल जवना के पुकार रहे– "रणभेरी बज उठी वीर, वर/पहनो केशरिया बाना।"

25 अगस्त 1930 ई. के अंक में छपलस– "अखबारों के दमन के लिए जब काला कानून जारी कर दिया गया, तब बहुत ही कम साइक्लोस्टाइल वाले परचे निकलते थे। पर जब से इन परचों के खिलाफ भी कानून बना दिया गया– तब से इनकी तादाद बेतरह बढ़ती जाती है। ऐसा कोई शहर नहीं है, जहाँ से 'रणभेरी' जैसा परचा न निकलता हो...., ... दमन से द्रोह बढ़ता है, इसका यह एक अच्छा सुबूत है पर नौकरशाही के गोबर भरे गंदे दिमाग में इतनी समझ कहाँ? वह तो शासन का एक ही शस्त्र जानती है– बन्दूक।"

एक दूसर पत्र 'रणडंका' बापू के अहिंसा के कट्टर समर्थक रहे ओकर लक्ष्य पर ध्यान देबे लायक रहे– "हो उथल–पुथल अब देश बीच औ खौले खून जवानों का/बलिवेदी पर बलि चढ़ने को अब चले झुंड मर्दानों का।।" हिंसा के समर्थक पत्र 'तूफान' के उद्घोष इहे रहे– "लाल क्रांति की ज्वाला भभके, चले साथ भीषण तूफान/राज सिंहासन दहल उठे, हो चूर–चूर धनिकों का मान।।"

उपन्यास सम्राट प्रेमचन्द जी 1930 ई में 'हंस' के प्रकाशन शुरु कइनीं। साहित्यिक पत्रकारिता के संवर्द्धन में प्रेमचन्द बेजोड़ भइले जेकरा बारे में पराड़कर जी के लेखनी बतवलस– ".... प्रेमचन्द ने हिन्दी साहित्य को जनता का साहित्य बना दिया। उसके निर्मल जीवन में जनवर्ग के प्रतिबिम्ब दिखाई देने लगे हैं। प्रेमचन्द के पात्र जनवर्ग के प्रतिबिम्ब हैं। प्रेमचन्द के विचार वर्गों को उठाने और मिलाने के भगीरथ प्रयत्न के द्योतक हैं। स्वयं प्रेमचन्द जनता के प्रतीक हैं, पर उनका यह उज्ज्वल प्रतीक तब तक रहेगा जब तक हिन्दी रहेगी और उसके बोलने वाले रहेंगे।"

भारतेन्दु बाबू जवन साहित्यिक पत्रकारिता के बीज डलनी ओह परम्परा में 'इन्दु', 'भौजी', 'भूत', 'तरंगिणी', 'अजगर', 'तरंग', 'चिनगारी' जइसन पत्र प्रकाशित भइल। शिवपूजन सहाय जी के सम्पादन में 'जागरण' निकलल, जवना के प्रथम सम्पादकीय देखे लायक बा– "भगवान भरोसे : हम में न चमत्कारपूर्ण प्रतिभा है, न कोई विलक्षण शक्ति, है केवल औढरदानी विश्वनाथ का अटल भरोसा, जिसकी राजधानी से यह जागरण प्रकट हो रहा है। उसी की प्रेरणा है, वहीं इसे सम्हालें....। 'जागरण' को शुद्ध साहित्यिक पत्र बनाने की इच्छा है। अभी हमारी दृष्टि से ही इसमें बहुत–सी त्रुटियाँ हैं। ..... साहित्यिक दलबन्दी और ईर्ष्या–द्वेष को मिटाने में कभी कोताही न करेगा। ईश्वर से प्रार्थना है कि यह साहित्य–संसार में पारम्परिक बन्धुता और सौहार्द्र फैलाने में समर्थ हो।"

'जागरण' के सम्पादक अपना समय के पत्र–पत्रिका के विवेचनो कइले बाड़े– "हमारे मुखारबिन्द की ऐसी महिमा है कि जहाँ जाते हैं चापड़ कर डालते हैं। पहले–पहल 'मारवाड़ी सुधार' का बण्टाधार किया। फिर 'आदर्श' और 'उपन्यास तरंग' का छत्र–भंग किया। यदि 'बालक' और 'गंगा' को न छोड़ते तो उन्हें भी ले बीतते। और यदि 'जागरण' को प्रेमचन्द जी अपना पोसपुत्तर न बना लेते, तो शायद इसकी भी खैर न थी। पर अब किसी की मिट्टी खराब नहीं करेंगे। हमने बहुत से पापड़ बेले हैं, अब एकतारा लेकर केवल यही भजन गाया करेंगे– /अब लौं नसानी अब ना नसैहों/ राम कृपा भव–निसा सिरानी, आगे फिरि न डसैहों/"

काशी के 'संसार' कार्यालय से 'संसार दैनिक', 'संसार साप्ताहिक', 'संसार–रविवार– संस्करण', 'ग्राम–संसार अर्द्धसाप्ताहिक', 'आंधी', 'युगधारा', 'आप बीती' निकलत रहे। 'संसार' सुभाष बाबू के भल रहे। अपना दूसरा पेज पर इहे लाइन छापत रहे– "सुनायी अब यही पड़ता चलो दिल्ली चलो दिल्ली/किसी के कान में गड़ता चलो दिल्ली चलो दिल्ली।"

25 मई, 1944 ई. के 'संसार' में सम्पादकाचार्य पराड़कर जी के दृढ़ विश्वास पर ध्यान देबे लायक बा– "फिर भी हम समझते हैं कि भारत में अरुणोदय होने जा रहा है। इसका कारण यह है कि समस्या जब अत्यन्त जटिल और असहज हो जाती है तब उसका निबटारा हो ही जाता है। रोग आप अपनी दवा बन

जाता है। हमारा विश्वास है कि इस रोग से भारत मुक्ति पा जायगा, भय का स्थान आत्म–विश्वास ग्रहण करेगा... जगत में भारत अपना पद पा जायगा।"

आजादी के बाद काशी से खँचियन भर दैनिक पत्र–पत्रिका निकलल। हिन्दी के कहो, भोजपुरी अवधी, मैथिली, बंगाली, मराठी में पत्रिका प्रकाशन के लड़ी लागल बा। खाली भोजपुरी के बात कइल जाव, त पता चली कि 'भोजपुरी कहानियाँ', (1964 ई., डॉ. स्वामीनाथ सिंह, डॉ. रामबली पांडेयय, गिरिजाशंकर राय 'गिरिजेश'), 'भोजपुरी जनपद' (1968 ई., राधामोहन राधेश), 'पुरवइया' (1968 ई., रामबली पांडेय), 'काशिका' (1969 ई., विनोदचन्द्र सिन्हा) जइसन पत्रिका निकल के भोजपुरी आ हिन्दी के बढ़न्ती में पुरबिहा भाई लोग लागल बा। पत्रकारिता के मूल सच्चाई हऽ जवना के प्रति समर्पित सम्पादक डॉ. अशोक द्विवेदी जी अपना 'पाती' के सम्पादकीय में लिखले बानीं– "साँच उघारल जरूरी बा : ..... हम भोजपुरी धरती क सन्तान, ओकरे धूरि–माटी, हवा–बतास में अँखफोर भइलीं। हमार बचपन आ किशोर वय ओकरे सानी–पानी आ सरेहि में गुजरल। भोजपुरी बोली–बानी से हमरा भाषा के संस्कार मिलल, हँसल–बोलल आ रोवल–गावल आइल। ऊ समझ आ दीठि मिलल, जवना से हम अपना गँवई लोक के साथे, देश के इतिहास भूगोल समझनी, आनो के आपन मननी। .... आपन धरती, हवा–पानी, डँड़ार–सिवान, नदी–ताल, बाग–बन आ बोली–बानी केकरा ना रास आवे, केकरा ना रुचे? हमरो अपना ओह सगरे क गरब–गुमान बा, जवन हमरा के रचलस–ओरिचलस।"

आपन माटी, माई आ मातृभाषा के बुलन्दी तबे होई जब हिन्दी आ भोजपुरी के साहित्य समृद्ध होई आ एकरे खातिर जरूरी बा कि काशी क्षेत्र के पत्रकारिता दिन पर दिन नित–नूतन चिन्तन, मनन से चेतना के स्वर फूँकत रहे। ●●

❑ पूर्व निदेशक, काशी पत्रकारिता पीठ, वाराणसी

इयाद

स्व. मोती बी०ए० : मृगतृष्णा

(जन्म-01 अगस्त 1919, मृत्यु- 18 जन. 2009)

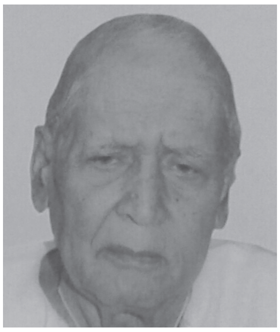

नाचत बाटे घाम रे हिरना बा पियासा
जेठ की दुपहरी में रेत के बा आसा
रेतिया बतावे दूर नाहीं बाटे धारा।
तनी अउरी दउरऽ हिरना, पा जइबऽ किनारा!

पछुआ लुवाठी लेके चारू ओर धावे
रेतिया के भउरा बनल देहिया तपावे
भीतर बा पियास ऊपर बरिसेला अंगारा। तनी
अउरी दउरऽ... ....

फेड़ नाहीं, रुख नाहीं, नाहीं कहूँ छाया
कइसन पियास, बिधना काया में लगाया
रोआँ-रोआँ फूटे, मुँह से फेकेलऽ गजारा। तनी अउरी
दउरऽ... ....

खर, पतवार लेके मड़ई छवावें
दुनिया के लोग दुपहरिया मनावें
मारल-मारल फिरे एगो जिउवा बेचारा। तनी
अउरी दउरऽ... ....

दरद तहार दुनिया, तनिक न बूझे
कहेले गँवार तोहके झुठहूँ के जूझे
जवना में न बस कवनो, ओमे कवन चारा। तनी अउरी
दउरऽ... ....

दुनिया में केहू के न मेहनति बेकार बा
जेही धाई, ऊहे पाई, एही के बजार बा
छोड़ऽ सबके कहल-सुनल, आपन लऽ सहारा।
तनी अउरी दउरऽ हिरना पा जइबऽ किनारा!! ●●

आनन्द संधिदूत के कुछ कविता

(एक)

झार-पोंछ जवन मतभेद उचिलवली
ओही दुखे दिल के केंवाड़ी ओठँघवलीं।
केकरा के नीक आ जबून केके कहितीं
बड़-छोट फूल के फुलल देखि सोचलीं।
जवन नाहीं मान करे हमरा बिसास के
ओकरा दुआरे नाहीं लाचियो उठवलीं।
मीठ रहे एतना माहुर परिवाद के
लाते मार अमिय कलस ढरकवलीं।
दिल खोल मिलली जवाब नाहीं पवलीं
लाज बरे, अपने के अपने बिरवलीं।
हँस के बिससुए जो सात पीढ़ी दुसमन
ओकरो चउकठा पर मुँह जुठिअवलीं।
बरकित घिरना कि ओकरा से पहिले
घिरना से जाइ के पिरीत बरकवलीं।

(दू)

पहिले भगा के चोर फेर हल्ला मचावल जाय
लुटाइल देस के हँस-हँस के बस अइसे चलावल जाय
हटावल ध्यान मुख्य मुद्दा से बा आसान अब बहुते
जहाँ हो साफ ओहिजा झाड़ू ले फोटो खिचावल जाय
अगर बिजुली के चोरी लोकतंत्र में धइल मुश्किल
जे देता ओही प बिजुली के बिल अउरो बढ़ावल जाय
बहारल आ सजावल देस रउरा बस के बात नइखे
बहुत होखे त आपन ल्युटियन्स एरिया सजावल जाय
सफाई दिल के पहिले हो कि पहिले भूमि गन्ही के
न सुलझे खुद त इक आयोग एकरा पर बिठावल जाय
केहू के लेपटाप-टेबलेट केहू के देके नकदी अब
सियासत के चले दोकान लेमनचूस बाँटल जाय
समय अनुरूप जवना हाथ में पिस्तौल चाहत बा
उहाँ देके मोबाइल हाथ में गुस्सा भँजावल जाय
मुलुक आजाद बाटे सब कहल त हमहूँ कह दिहलीं
नहीं त एह आजादी से गुलामी नीक मानल जाय
सासन गाँव के बा देस पर, पर गाँव उजरल जाय
सहर उग गइल खेते खेत ई तस्वीर तोरल जाय।

(तीन)

गइल नसीब के तरई-नखत कहाँ के कहाँ।
हम इन्तजार में बइठल हई जहाँ के तहाँ।
बहुत न चाही बा बस्तर बिछौना आ ओढ़न
धइल बा सामने भोजन बदन छहाँत छहाँ।
जुटइबऽ ढेर त सन्तान अलसिया जाई
रकम हो काम भर, बाटे कवन रहे के इहाँ।
हुकुम बा सख्त उहाँ जाना साथ कुछ ना जाय
कफन त छोड़ी सरीरो न संग जाय उहाँ।
कुल्ही भइल अब देखीं मौत आपन कब आके
पुछेले हउअऽ आ तइयार, त कहे के बा हाँ।
सफर में प्रेम का डर-डर के कदम का रखले
कहीं समाज के रिश्ता न हमसे जाय कोहाँ।
सफर बा इश्क करारे का बारि पर नाचल
गिरी त एक ओर खन्दक आ दूसरी ओर कुआँ।

(चार)

चाहे हमरे पर होखे ई गम नइखे।
साँच कहला में तनिको सरम नइखे।

हम चुपाइल हईं कि बोलीं रउरा कुछ
ए बतकही में लागत रकम नइखे।

रउरा कण-कण में बाकी ई साबित भइल
साफ लउकत बा कवनो बहम नइखे।

रउरा हमरा के खाईं आ हम रउरा के
तथ्य रोचक के समझत धरम नइखे।

रउरा दीपक के हिल हम फतिंगा के दिल
एहमें अब सक-सुबहा सनम नइखे।

मान-सम्मान रुचुए त अपमान भी
केहू कहो जिन होखत हजम नइखे।

दिल बेहाल बा आँखि भर आइलि बा
जबकी बरखा के कौनो मौसम नइखे।

दिन बदे होत कुर्बान तरई के गाँव
सूर्य का देस कवनो मातम रइखे।

न कहत के थके न सुनत के ऊबे
राउर किस्सा जे होखत खतम रइखे। ●●

❑ पदारथलाल की गली, वासलीगंज, मिर्जापुर

गंगा प्रसाद अरुण के
कुछ 'मनगीत'

(1)
छंद-सबद-आखर के
कइसन परतीत
सिहिकेला भाव अउर कुहुकेला गीत!

ना करघा-ताना-भरनी
चरखा-सूत
बीनेला बहतर
कलाबिन के पूत
का दुनियादारी! आ का जग के रीत!

कबिरा के कान्ही पर
किलके कमाल
सात रंग पनसोखा
शतरंजी चाल!
कलजुग में कौरो के पांडो पर जीत!

बाकी-बकियौटा पर
बानर के बाँट
करके करेजा में
जटही के काँट
अनसाइल जीव जरल घोंट रहल पीत!

मन बोले गीतन से-
बिसुरे का मीत
झेलत उपहास-जहर
मीठा आ तीत
साध रहे, केहू कुछ दीहित, कुछ लीत!

(2)
पतइयन पर
सीत बुनका-अस
छिंटा गइलीं!

ना कबो खिस्सा-कहानी
ना कबो सूखा-फुटानी
डाढ़ि से चूकल मरकटा
कहाँ गार्यी? का बखानी?
जल निकासल
पोठिया मछरी
पटा गइलीं!

दंभ के दरबार पा के
कुटिल कुल अँकवार पा के
बीच-बिचवानी बरावत
सहजता के सार पा के
मूल अंगद
सूद में सेतिहे लुटा गइलीं!

बढ़ी कइसे, बान्ह बन के
सामने आ आन्ह बन के
माथ ऊपर तार गुजरे
ऊँच ताकत, लोकजन के
राह अवरोधी
मथेला से
कटा गइलीं!

हाट बिहँसे, बाट बोले
नदी, पसरल पाट बोले
ऊ ठसक, ऊ ठाट केने
चेट, पेवन-टाट बोले
कुछ सवालन पर
समय के
बस छँटा गइलीं!

(3)
खरहा-कछुआ साँठ-गाँठ में
जन-घोंघा टकटोई
गिरगिट-भरबितना के
जनता कवना दिन तक ढोई!

ऊहो खइलें, ईहो खालें
आपन नजर सवाली
रजवा के कुल स्विसे-बंक में
अपना घर कंगाली
मइनी चले गोहारत सगरो
सगरी आँख मुदाइल
एगो दाना खातिर
खूँटा काहे फाटी लोई!

चिरईं के बाचा के चारा
रोज पुष्टई पाकी
तिलचट्टा-झिंगुर-बिछउतिया
अजगुत चूल्हा-चाकी
चलनी के बिस्तरा बिछा के
सूप ओढ़ि के बनल निफिक्रिर
कब ले बिलरी चूल्हि दुआरे
टाँग पसरले सोई!

चलीं, बता दीं बटमारन के
रकत-आँसु जन रोईं
ओका-बोका, तीन तड़ोका
लउआ-लाठी टोईं
हरकाईं हँकड़त हुँड़ार के
बानर-बाँट बुझाला सब के
इहवाँ आज उहे कुल काटी
जवने कुछ जे बोई! ●●

❑ 21 बी. रोड- जोन-4, संडे मार्केट,
बिरसानगर टेल्को, जमशेदपुर-831019

बिपिन बिहारी चौधरी के कुछ कविता

(एक) उधार

उलझन
समस्या आ सवाल
बुन रहल बा जाल
घेराइल आदमी
जी रहल बा
जिनिगी उधार!

(दू) अन्तहीन जात्रा

कतना कुछ गुजर जाला
अँखियन के सामने
पल भर में
का से का हो जाला।

उठ जाला
आ सुरू हो जाला
सपना के शव-यात्रा
चरमरात बेवस्था
अपाहिज वर्तमान
आ बीमार दिन
हम रोज-रोज देखीला...
शिक्षा के बोझ ढोवत
लोगन के भीड़
नापत दूरी दिशाहीन
लक्षहीन
अन्तहीन जात्रा।

(तीन) ओखरी के धान

ओखरी के धान बानी हम
कतना गिरी मूसर
अनजान बानी हम।

पीठि पर लादल भारी बोझ
भइल कमर ना कबहीं सोझ
पेट से लड़त परेसान बानी हम।

गाड़ी का बैल नियर चलत
दाबू ओलार के सहत
जीयत इन्सान के पहिचान बानी हम।

भेड़ियन का रूप में मिलल
जेही पावल हीक भर नोचल
तबो बड़-बड़ घरन क शान बानी हम।

सपना बिखर गइल सब
होई बिहान जाने कब
अन्हारे से लड़त हरान बानी हम।
ओखरी के धान बानी हम!! ●●

❑ जिमखाना क्लब के पीछे, श्रीराम
एन्क्लेव, बूटी मोड़, राँची (झारखण्ड)

कबीर : लोकज भाषा के सिद्ध सन्त

('जगरम', (बक्सर) मार्च, 1997, अंक-9 में प्रकाशित।)

डॉ0 अशोक द्विवेदी

'कबीर कूता राम का/मुतिया मेरा नाउँ।
गले राम की जेंवड़ी/जित खैंचे, तित जाउँ।।'

कबीर उत्तर भारत के अइसन फक्कड़ मौला सन्त रहलन, जे अपना सहज लोकचर्या आ ठेठ बोली–भाषा के कारन सबसे अलग पहिचान बनवलन। उनका कविता में 'अनुभूत सत्य' का प्रेम पगल भक्ति के अलावा अगर कुछ अउर बा त, ऊ बा आदमी क आदमीयत बचावे बनावे खातिर विचार, सलाह; झिड़की आ दू टूक खुलासा करे वाली एगो ('अपढ़ संत' के) सहज बानी। ऊ 'बानी' जे भाषा के मोहताज नइखे। कबीर 'कागद की लेखी' से ना बलुक 'आँखिन देखी' से अनुभव आ अभिव्यक्ति कइलन। उहो आँखि हृदय के आँखि रहे। एही से उनका बानी में जथारथ के रूखर रूप–अपना सुभाव में आंतरिक विसंगति का साथे प्रगट भइल। एही से उनकर कविता छिछिल भावुकता आ दिमागी कारीगरी के बजाय गहिर अनुभूति में पगल।

नामी गिरामी आलोचक उनका कविताई आ भाषा के अपना अनुसार अलग–अलग ढंग से देखल लोग। बहुत लोग उनका लोकज भाषा के अनगढ़ रूप देखि के, ओके 'सधुक्कड़ी', पंचमेल आ मेझरा भाषा कहल आ एके उनकर कमी मानि के तुलसी, सूर आ जायसी से अलगा पाँति में बइठावे के कोशिश कइल। बहुत लोग भाषा छोड़ि उनका कथ कहनाम प बोल–बतिया के रहि गइल। एगो अनपढ़ जोलहा से सन्त बने तक के उनकर सफर सांसारिक होइयो के, मन आत्मा से असंसारिक रहे। उनका साखी, सबद, पदावली में भाषा के जवन भदेसपन आ रुखराहट बा ऊ सिद्ध करत बा कि ऊ बोले–बतियावे, गावे–सुनावे में जवना भाषा के प्रयोग कइलन, ऊ ओऽघरी के जनभाषा रहे, जवन अवधी से जोरियाइल एगो विशाल भोजपुरी क्षेत्र में बोलल जात रहे।

भाषा से काम लेत खा कबीर के कबो सोचे, टोवे भा हकलाए के ना परल। जवन मन में आइल, ऊ भाषा से दरेर के कहवा लिहलन। उर्दू, फारसी से लगाइत पंजाबी, राजस्थानी तक के शब्द आप से आप उनका जबान प आ गइल। हिन्दू से बतियावत खा हिन्दूआनी शब्द, शैली आ मुसलमान से बतियावत खा उर्दू फारसी के शब्द सहजे उनका भाषा में मिल गइल। ओघरी के प्रचलित काव्य भाषा के शब्द होखेऽसन भा संत–समागम में भेंटाइल शब्द। कबीरदास जी के आपन बात कहत खा, उनहन के शामिल करे में कवनों गुरेज ना बुझाइल। बोले बतियावे भा गावे गुनगुनाए में उनके कबो असुविधा एसे ना भइल काहे कि ऊ भाषा के जरूरत का मोताबिक गढ़ बना लेसु। शब्दन के तूरे मरोरे में उनका कबो संकोच ना बुझाइल। डॉ0 हजारी प्रसाद द्विवेदी जी के विचार रहे कि कबीर जवन बात जवना तरीका से कहेके रहे, भाषा से कहलवा लिहलन। बन परल त सोझ–सोझ, नाहीं त 'दरेरा' देके। भाषा प अपना एही जबर्दस्त पकड़ का बदौलत ऊ अइसन काव्य–संपदा दे

गइलन, जवन ऊ समाज के दिहल चाहत रहलन। लोक जीवन के लोकज रूप के ओकरा सहज सोभाव में अभिव्यक्त करत खा कबीर साधारण आदमी के बात–व्यौहार क तरीका अपना लेसु। प्रेम आ भक्ति में समर्पित विनयी हो जासु। ईहे कारन रहे कि ऊ सहजे, गूढ़ दार्शनिक तत्त्व के निरूपणो क दिहलन।

कबीर के विद्रोही सुभाव ओघरी अउर प्रखर हो गइल बा जब ऊ समाज में व्याप्त विसंगति आ पाखण्ड पर क्षोभ से चोट कइले बाड़न। कर्मकाण्डी पूजा आझुठिया साधना के ढोंग उनका ना सुहाइल। अपना धारदार आ आक्रामक भाषा का जरिये कबीर नकलीपन आ ढोंग प चोट कइलन– पोंगापंथी, ढोंगी, पंडित आ मुल्ला मोलवी केहू उनका से ना बाँचल। झुठिया टीका फाना करे आ माला फेरे वाला पाखण्डी लोगन के ऊ तनिको ना बकसलन। ऊँच–नीच आ जाति पाँति के देवाल खड़ा करे वालन के ऊ कतने बेर फटकार लगवलन। उनका एह लट्ठमार भाषा आ तौरतरीका से बहुत लोग का बुझाला कि ऊ घमंडी समाज सुधारको रहलन। बाकि ना। ऊ त खाली सीख आ सलाहे देले बाड़न। निहायत अपनाइत से मीठ झिड़की देत ऊ आगा बढ़ि गइल बाड़न। जवना–जवना बात के लेके लोगन में गलतफहमी आ अझुरा लउकल बा, ओके बहुत सादगी से सझुरा देले बाड़न, आ ईहो कहे से नइखन चुकल कि–

पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ पंडित भया न कोय ।
ढाई आखर प्रेम का पढ़े सो पंडित होय ।।

....

काजी कौन कतेब बखाने ।
पढ़त-पढ़त केते दिन बीते गति एकै नहिं जानै ।।

पोथी–पतरा आ सास्तर–वेद क अझुरहट से अलगा, बाहरी आचार आ संस्कार क परपंच छोड़ि के, ऊ सोझ सोझ प्रेम–भगति आ सहज साधना के पंथी बने में विश्वास कइलन। समाज–सुधारक ना खालिस भक्त। समर्पित आ निष्ठावान भक्त। सहज अनुभूति से रचाइल उनका भावबोध में जवन सादगी बा ऊ अनुभव कइल जथारथ के चलते बा। गुरु आ ईश्वर के प्रति उनका अडिग प्रेम आ निष्ठा के चलते ईहे सादगी मूरख से मूरख के राह दिखा दिहलस– गूढ़ से गूढ़ बात सोझ आ सीधा सादा ढंग से समझा दिहलस। ई 'सादगी' कबीर का काव्य भाषा आ बानी के मूल शक्ति बा।

कबीर शिक्षित त रहलन ना, बाकी बड़–बड़ सन्त ज्ञानी लोग का सत्संग से उनकर अन्तर्दृष्टि आ विश्लेषण शक्ति दूनों प्रखर भइल। अनुभूति से उपजल भाषा उनका प्रेम के 'अढ़ाई आखर' के अउर विस्तार आ गहिराई देले बिया। तबे ऊ 'प्रेम के अकथ कहानी' के समुझा बुझा सकल बाड़न। उनका उलटवाँसियनों में गूढ़ अर्थन के सृष्टि भइल बा। कबीर का खर आ रुखर भाषा में जवन भदेसपन बा ऊ लोक जथारथ के रुखर मार्ग अनुसरण कइला का कारन बा। ऊ जथारथ के जतना कठोर आ रुखर रूप देखले बाड़न ओके आत्मा का गहिराई ले महसूसो कइले बाड़न। 'आँखिन देखी' के साँच अभिव्यक्ति में ऊ संकोच नइखन कइले। एही से उनका खरोपन में एगो खास किसिम के मिठास बा। जइसे ऊखि के कड़ेर पोर छीलि के ओकरा गुल्ला में भिनल रस के मिठास के अनुभव कइल जा सकेला, ओइसहीं एह सन्त कवि के भाषा में लोकज सहजता आ मिठास के अनुभव कइल

जा सकेला। श्यामसुन्दर दास जी एही मिठास के कबीर के ऊ भाषिक विशेषता मनले बाड़न जवना में उनका अभिव्यक्ति के गँवारूपन डूबि जाला। आदमी के आदमीयत बनल रहो एकरा खातिर ऊ गँवारूए ढंग से साफ, सोझ कहलन। एह कहनाम में कहीं रूखर कठोरता त कहीं मार्मिक मधुरता बा– कहीं–झिड़की बा त कहीं बेलाग लपेट के सोझ साफगोई–

एक बूँद, एक मल मूतर, एक चाम एक गूदा
एक जाति थै सब उपजा कौन ब्राह्मण कौन सूदा।

....

साकत बाँभण मति मिलै बेष्नों मिलै चंडाल
अंकमाल दे भेंटिये मानी मिले गोपाल ।

....

कहे कबीर एक राम जपहु रे, हिन्दु तुरक न कोई ।

मनुष्य के मानुष धरम बनल रहो, ऊँच–नीच आ जाति–पाँति के भेद भाव मिटो, सब एक दोसरा से प्रेम करो, ईहे कबीर चाहत रहलन। फिजूल के ढोंग, पूजा, छुआछूत, रोजा, व्रत, नमाज, तीरथ बरत ई कूल्हि कबीर के ना रुचल– ऊ आडंबर आ पाखण्ड से अलगा सहज साँच प्रेम आ भगतिए के मनले बाड़न। जनमे से केहू बाभन, शूद्र, भा हिन्दू–मुसलमान ना होला।

जो तूँ बाँभन बँभनी जाया ।
तो आन बाट ह्वै काहें न आया ।।
जौ तूँ तुरक-तुरकनी जाया ।
तौ भीतर खतना क्यों न कराया ?

जनम का बाद समाज आ करमकांड क घेरा कबीर के कइसे रुचित? आखिर सब जीवे ह– हाड़ माँस के पिण्ड– सभका भीतर ऊहे खून दउरत बा। सब कवनो न कवनो माइये का कोख से जनमल बा, फेर कइसन भेदभाव? कइसन छुआछूत?

काहैं को कीजै पांडे छोति विचारा ।
छोतिहि तै उपजा संसारा ।।
हमारे कैसे लोहू तुम्हारे कैसो दूध ।
तुम कैसे बाम्हन पांडे हम कैसे सूद ?

सब एक्के ईश्वर के बन्दा ह। नाम भलहीं अलगा–अलगा होखे। ओके रिझावे आ मनावे के तरीको अलगा–अलगा हो सकेला बाकि ऊ हर तरह से कबीर–खातिर एक्के बा। ऊ 'मस्जिद चुनाइ' के मुल्ला अस 'बाँग' नइखन देत, ना 'पूजा–अरचा' क के बउरात बाड़न–

हमरे राम रहीम करीमा, कैसे अलह राम सति सोई ।
बिसमिल मेटि बिसंभर एकै, और न दूजा कोई ।।

निर्गुन ब्रह्म के सूखल दर्शन वाला रास्ता छोड़ि के कबीर, 'प्रेम–भगति' क राह पकड़ल ज्यादा ठीक समझलन। ई राह उनका अस मेहनत मसक्कत से

कपड़ा बीनि बेचि के जिए खाये आ रहे वाली लौकिक राह रहे। गृहस्त जीवन में रहि के कामधाम कइके– लोकरीति आ धर्म के अपनावत सहज ढंग से साधना कइले का कारन ऊ सन्त कहइलन। ऊ दोसरा साधु–फकीर–महात्मा लेखा ना जियलन, आपन अरजल खइलन आ अपना प्रिय से प्रेम के लौ लगवलन। लौकिक गृहस्थ का राह से गइले में ऊ अच्छा–बुरा, नीक–जबून के चिन्हलन। माया उनहूँ के भरमवलस, एही से ऊ ओसे बराबर सजग रहे क सीख देहलन–

इक डाइन मेरे मन बसै ।
नित उठि मोरे जिय को डसै ।।
या डाइन के लरिका पाँच रे ।
निसदिन मोंहि नचावै नाच रे ।।

पाँच लइका– काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर–कौनों एक दुसरा से कम ना आ ऊपर से ऊ खुदे 'तिरगुन फाँस' लेले डोलि रहलि बिया माया 'ठगिनी'। अपना 'मधुरी बानी' का कारन ऊ जगहो बना लेले बिया। एसे निस्तार पावे खातिर कबीर सभका बीचे रहियो के, कूल्हि लौकिक ढंग ढर्रा का बीच, कूल्हि से विमुख हो गइलन। ऊ कुछ पकड़लन ना– छोड़त चलि गइलन, जल में 'अउँधा घड़ा' बन गइलन– ओमें ना त पानी भरी, ना ऊ डूबी– 'औंधा घड़ा न जल में डूबे'– पवँरत पवँरत देखलन कि 'नलिनी' कुम्हिलाइल बिया– उनका जिज्ञासा भइल, पुछलन–

जल में उतपति जल में बास
जल में नलिनी तोर निवास ।
ना तनि तपति न ऊपर आगि,
तोर हेतु कह का सनि लागि ?

गुरु–ज्ञान आ उनका कृपा से उनके एह 'माया जल' आ 'माया दीपक' से उबार मिल गइल। 'राम' आ 'रघुनाथ' का सिरजल माया से छुटकारा रामे दिया सकेलन। उनके राम का नाँव से शक्ति मिलल ऊ धन्य हो गइलन– 'हरि तजि जियरा बटहूँ ना जासी'। कबीर के इ सच नीके समुझ में आ गइल रहे कि जवन कुछ लउकत बा ऊ बाहरी व्यौहारे ह, 'राम' त अगम अपार हउवन। शरीर में दउरत लोहू आ सुन्दर चाम झूठ आ नाशवान ह, साँचा रामे हउवन, जेके हर घरी अपना भीतरे देखल जा सकेला–

कहे कबीर विचारि करि जिनि कोई खोजे दूरि
ध्यान धरौं मन सुद्ध करि राम रह्या भरपूरि ।
कहै कबीर विचारि करि झूठा लोही चाम
जा या देही रहित है सो है रमिता राम ।

ऊ अपना संगे–संगे दोसरो के चेतवलन 'लोका जानि न भूलो भाई!' फेर कहलन 'सहजै सहजै सब गये, सुत–वित–कामिणि–काम। एकमेक है मिलि रह्या हासि कबीरा राम।' ऊ राम से 'लौ' लगा लिहलन आ धन्य हो गइलन, बाकिर एकरा खातिर ओह गुरु के धन्यवाद देबे से ना चुकलन जेकरा प्रेरना से उनकर अज्ञान दूर भइल–

तोहिं मोरि लगन लगाए फकिरवा ।
सोवत ही मैं अपने मन्दिर में,
शब्दन मारि जगाए रे फकिरवा ।

'अनचिन्हार' के 'चिन्हावे' वाला, अगम अकथ 'हरि' के प्रेम–भगति–रस पियावे वाला ओह गुरु कृपा का आगा कबीर हमेसा विनयी आ कृतज्ञ रहलन। ऊ 'पुरइनि' के 'पात' नियर जल में 'पइसार' कइलो पर जल से विरत रहलन। जइसे पुरइनपात पर जल छटकि जाला, कबीर ओइसही अपना के बना लिहलन। प्रेम–भगति – रस के सवाद आ आनन्द गुरुवे का कृपा से मिलल। आ ऊ अब एकहाली मिलि गइल त फेर कहाँ छूटे मान के रहे। कबीर रस पियत–पियत ओही 'महारस' में बहि गइलन–

धावत जोनि जनम भ्रमि थाके,
अब दुख कै हम हारयौ रे ।
कहि कबीर गुरु-मिलन महारस,
प्रेम-भगति विस्तारयो रे ।।

एक लेखे एकदम खालिस भक्त रहलन कबीर। एही से अपना अकथ, अरूप आ अगम ब्रह्म के समझे आ बतावे खातिर उनके प्रचलित शब्द, संकेत आ प्रतीकन के प्रयोग करे के परल। अनिर्वच खातिर बड़–बड़ ज्ञानी लोग के वाणी काम ना करे– कबीर त भरसक बतावे के कोसिस कइलन आ ऊहो समकालीन प्रचलित लोक भाषा के काम भर गढ़ि के। उनका काव्य भाषा में जवन पछाही भदेसपन आ लोकरंग चटक होके उभरत बा ऊ कबीर के सुनल सुनावल आ समझल बूझल शब्द–शक्ति का कारन बा। अवधी के एगो खास छाँही लेले ई भाषा ओह घरी के भोजपुरिये ह जवना के कबीर 'पूरबी' कहि के संकेतित कइले बाड़न–

हम पूरब के पुरबिया जात न पूछे कोय ।
जात पात सो पूछिये, धुर पूरब का होय ।।

कुछ विद्वान लोग का मोताबिक एह पूरबीपन के कारन– 'अध्यात्मिको' बा– 'पूरब दिसा हंस गति' आ ओकरा 'सन्धि' के बूझे खातिर ई जाने के परी कि ई 'हंस–गति' आ 'सन्धि' का ह? साँच पूछीं त ई गति जीव के प्रेम–भगति वाली गति ह जवन ध्यान आ समाधि का जरिया 'सन्धि' करे जा रहलि बिया। ई संधिये ऊ अलौकिक अनुभूति हऽ जवना के कबीर कई बार जिकिर कइले बाड़न आ कई ढंग से। एह स्थिति के सभे ना बूझी। ऊहे बूझी जे एह स्थिति से गुजरि के ओकर अनुभव कइले होई। ई 'गूंगा के गुड़' ह– प्रेम–मिलन के अकथ कहानी एकरे से जामल बा– ई इसारा वाली वाणी से कुछ कुछ समझावल जा सकेला। ऊहो पूरा पूरा ना–

अकथ कहानी प्रेम की कछू कही ना जाइ ।
गूँगे केरी सरकरा बैठा ही मुसुकाइ ।।
....
सैना बैना करि समुझावो, गूँगे का गुड़ भाई रे !

कबीर एह प्रेम–मिलन आ भगति के समझावे खातिर संसारिक तरीका एही से चुनलन कि लोग ओके सहजे बूझी आ जानी, भलहीं एह संसारिक

तौर–तरीको में रहस–भेद छिपल रहे। उनका खातिर पुरुष त एकही बा– ऊ उनकर प्रिय–प्रियतम पिया। ऊ ओकर बहुरिया हउवन– 'हरि मोरे पिउ मैं राम की बहुरिया'। प्रेम के लौ लगवला के ई सबसे सुगम तरीका रहे। ऊ एही पिया के राह ताकसु, ओकरा प्रेम में मगन होखसु आ ओकरा बिरह में सुनुगस, जरस तड़पस–

बालम आवो हमारे गेह रे । तुम बिन दुखिया देह रे ।।

....

जाग पियारी अब ना सोवै। रैन गई दिन काहे को खोवे ।।

....

अजब तरह का बना तमूरा तार लगै मन मात रे
खूंटा टूटी तार विलगाना कोऊ न पूछै बात रे
हँस हँस पूछो मात पिता सों, भोरें सासुर जाब रे
जो चाहै सो वो ही करिहै पत वाही के हाथ रे ।।

....

साँई के संग सासुर जाई
संग ना रही स्वाद ना जानी, क्यों जोबन सुपने की नाई ।
सखी-सहेली मंगल गावै, सुख-दुख माथे हरदी चढ़ाई ।।
भयो बियाह चली बिन दूलह बाट जात समधी समझाई ।।

लोकरंग, राग आ रीति के मुताबिक कबीर अपना प्रेम भगति के बखान कइलन बाकि एम्मे रहस्य रहे– बहुत झीना रहस्य– तनिकी धेयान दिहला पर बुझा जाए वाला। उनका 'पिया मिलन' के राह बहुत कठिन रहे। ऊपर से संसारिक माया मोह के भ्रमजाल। ऊ मिलन के आस लिहले घर से निकलि परलन–

अविनासी दुलहा क मिलिहौ भक्तन के रछपाल ।
जल उपजौ जल ही सों नेहा, रटत पियास पियास ।
मैं ठाढ़ी बिरहन मग जोऊँ प्रियतम तुम्हारी खास ।

मिलन के ई तड़प जस जस बढ़े शरीर चरखा हो जाय–'तन–मन रहँट अस डोले।' एह बिरह–व्याकुलता आ संसारी–व्याकुलता के वर्णन कबीर लौकिकढंग से कई कई बेरि कइले बाड़न–

तलफै बिन बालम मोर जिया ।
दिन नहिं चैन रात नहिं निंदिया
तलफ तलफ के भोर किया ।
तन मन मोर रहँट अस डोले सून सेज पर जनम छिया ।

प्रियतम अगर छिनो भर खातिर भेंटा गइलन त कलावंत मेहरारू अस ऊ उनके बान्हे–रिझावे में लागि गइलन–

नैनों की करि कोठरी, पुतरी पलँग बिछाय
पलकन की चिक टारि के, पिय को लिया रिझाय ।
प्रीतम को पतिया लिखूँ जो कहुँ होय बिदेस
तन में मन में नैन में ताको कहा संदेस ।।

....

सूतल रहलूँ मैं नींद भरि हो, पिया दिहले जगाय ।

चरन-कँवल के अंजन हो, नैना ले लूँ लगाय ।
जासो निदिया न आयै हो नहि तन अलसाय ।
पिया के वचन प्रेम सागर हो चल चलीं हो नहाय ।

कबीर अपना भाव आ अनुभूति के व्यक्त करे खातिर भलहीं लौकिक शृंगारिकता के माध्यम बनवलन बाकिर उनकर उद्देश्य दोसर रहे। ऊ संसार में रहियो के संसारिक तौर तरीका से जवन बात कइलन ओमें गूढ़ दर्शन आ आध्यात्मिकता छिपल रहे। अपना 'निरगुन' पदन का जरिये ऊ लोक मानस में गहिरे पइठि गइल रहलन। अभिधा, लक्षणा, व्यंजना तीनू उनका काव्य भाषा में झलकेला। लोकरुढ़ियन आ मान्यता मिलल प्रतीकन के ऊ भरपूर प्रयोग कइले बाड़न। शब्द शक्तियन के इस्तेमाल में ऊ साइते चूकल होइहें। पाँच तत्व के चुनरी ऊहो नीरँग। पिय–मिलन खातिर जाए के बा आ ओहू में दाग परि गइल। का कहिहें ऊ? ई संसार अन्हार कोठरी– मनवो के मइल करे वाला पचड़ा से भरल। कबीर उकसावत बाड़न–मिलन में कवन लाज, कवन सँकोच, उनका से मिलते कूल्हि दाग छूटि जाई– कूल्हि अन्हार मेटि जाई–

अन्हियरवा में ठाढ़ गोरी का करेलू ?
जब लगि तेल दिया में बाती
येहि अँजोरवा बिछाय घलतू ।
भोजपुरी-रचना आ आलोचना ३७
संगहि अछत पिय भरम भुलइली
मोरे लेखे पिया परदेसहि रे की ।
....
मोरि चुनरी में परि गयो दाग पिया ।
पाँच तत्त की बनी चुनरिया
सोलह सै बंद लागे जिया ।
यह चुनरी मोरे मैंके तें आई,
ससुरा में मनुवाँ खोय दिया ।
....
तोरा हीरा हिराइल बा किचड़े में ।
कोई ढूँढ़े पूरब, कोई ढूंढ़े पच्छिम,
कोईढूँढ़े पानी-पथरे में ।
दास कबीर ये हीरा को परखै
बाँध लिहले जियरा के अँचरे में ।
....
हमरी ननद निगोड़िन जागे ।
कुमति लकुटिया निसिदिन व्यापे,
सुमति देखि नहि भावै ।
....
कौन ठगवा नगरिया लूटल हो ।
चंदन काठ के बनल खटोलना तापर दुलहिन सूतल हो ।

कबीर के निरगुन संसारिक छनभंगुरता के रहस भेद खोलि के अदिख साँच सोझा रखि देला। उनकर सहज भाव भाषा में लिखल पद आजुओ गाँव देहात में लोग चाव से गावेला आ डूबि के सुनेला। कुछ रूपक आ उलटवाँसियन के प्रयोग जरूर सामान्य लोगन का बस–बूता में ना रहल हालांकि ई प्रभाव ओह काल का हठयोगियन आ नाथ–सिद्धसंतन का सत्संगे के कारण कबीर पर परल बाकि कबीरदास प्रचलित रूपक आ प्रतीकन के प्रयोग कइला का साथे साथ अपने भाषा शब्दन के प्रयोग संकेत खातिर खुलि के कइलन। ई प्रचलित योग शास्त्रीय परम्परा में ना रहलन स। जइसे 'मन' के मच्छ, मीन, मतंग; 'संसार' के 'वन' सायर; 'इन्द्रिय' के सखी, सलेहरि; माया के डाइनि, ठगिनि, बिलैया, गैया, छेरी; 'जीवात्मा' के दुलहा, सिंह, पारथ, जोगी मूसा।

कबीर एगो अलगे ढंग के साधक रहलन– कूल्हि जोगपंथियन का प्रभाव का बावजूद ऊ सहज प्रेम–भगति के सहज–समाधि वाला राह पकड़लन। ओमे कवनो बाहरी आडम्बर आ बनावट ना रहे। ईहे सहज अवस्था उनका भाषा में समा गइल। एमें कवनो बनाव–सिंगार भा अलंकार करे के प्रयास नइखे। सुभाव से, अनसोहाते, अपन अनुभूति का शक्ति से ऊ ओह अकथ के कहि दिहलन, जेके बड़ बड़ लोग ओतना सहजता से ना कहि पावल। कबीर सही माने में भोजपुरी लोक आ भोजपुरी बोली–बानी के कवि रहलन।

ई सही बा कि उनका भाषा के शब्द, क्रियापद, कारक चिन्ह आदि खाँटी एकही भाषा के ना हउवनऽस– अवधी, ब्रजी, राजस्थानी, बिहारी (बनारस–गोरखपुर का ओर के) भोजपुरी आदि के क्रियापद, कारक चिन्ह आ
शब्द उनका काव्यभाषा में मिलल बाड़न स– ओमे पंजाबी, फारसी के शब्दों बाड़नसऽ, बाकिर हमरा समुझ से कबीर मूलरूप से ऊहे भाषा प्रयोग कइले बाड़न जवन ऊ बचपन से बुढ़ापा ले अपना जीवन में बोललन– ई भाषा निछक्का भोजपुरी भलहीं मत कहाव बाकि ऊ कइहबे करी जवना प कुछ पछाँही छाँही परल होखे। जइसे कवनो लोक भाषा के अलग–अलग खित्ता में अलगा–अलगा रूप मिलेला, ओही तरे कबीरो का समय में भोजपुरी में अलग–अलग खित्ता में भाषा व्यवहार होत होई। भाषा के 'बहता नीर' मानि के चले वाला कबीर एही बहता नीर में नहइले–धोवले आ खइले–अँचवले रहलन। 'बहता नीर' जेने–जेने से बहत आवेला ओने–ओने के रूप रस गंध, अच्छाई–बुराई ले ले आवेला बाकि कुल्हि का बावजूद ऊ नैसर्गिक आ सुद्ध प्राकृतिक कहाला। कबीर एही प्राकृतिक बहता नीर के लोकरूप के अपना अनुभूति आ वाणी में धारण कइले रहलन। लोकज भाषा के एह महान सन्त आ ओकरा अमर वाणी के प्रणाम! ●●

Anjoria.com
पहिलका भोजपुरी वेबसाइट

ऋचा के कुछ कविता

(1996 से, अपना लेखन से स्त्री-लेखन के धार आ गति देबे वाली ऋचा के कवनो कविता-संग्रह भले ना छपल बाकिर ऊ सार्थक कविता लिखत रहेली। समय-समय पर 'पाती' में प्रकाशित उनका कुछ कविता के जोह के उनका नया कविता के साथ प्रकाशित कइके, स्त्री लेखन के नया गति देबे के छोटहन प्रयास कइल जा रहल बा)

लोग महसूस करऽता

लोग महसूस करऽता
कि आदमी का भीतर से ऊ सोत सूख रहल बा
जवना से ऊ कुछ महसूस करत रहे
दोसरा के पीड़ा से पीड़ित हो जात रहे
कवनो कमजोर भा अबला प अत्याचार
का खिलाफ कसा जात रहे ओकर मुट्ठी
कवनो अनेत भइला प
अचके आ जात रहे जबान प बिरोध के सुर।
लोग महसूस करऽता
कि आदमी अपने छोटपन से
बहुत छोट परि गइल बा
जानवरो ले क्षुद्र।
लोग महसूस करऽता
अपना कि अस्तित्व के बचावे खातिर
अब या त पूरा ढाँचा बदले के परी
या अपने के बदले के परी
पूरा के पूरा।
ई बदलाव कब होई?
लोग सोच रहल बा!

('पाती', अंक-29, जून' 99)

'मन' पर पाँच गो मनःस्थिति के चित्र

(एक) बहुत खुश रहे, बहुत हुलसित-
मन-पाखी।
अँगना से उड़ल चहलस ऊपर-
अउर ऊपर अकास में
देखल चहलस दुनियाँ
भरल चहलस भर अँकवार
अकास के
कि जाने के, का कइल, कहाँ से
पाहन गिरल अँगना? ओकरा
ठीक बगल में....
पाँखि सिकोरि हो गइल
फेरु गुमसुम, डेराइल-
हदसल मन-पाखी।

(दू) थिर रहे मन
एकदम थिराइल झील नियर
निर्मल शांत।
अचके गिरल कँकड़ी जाने कहवाँ से-
कि हलचल मच गइल
लहर-लहर बान्हत
घेरा ओही
घेरा में घेराइ गइल 'मन'।

(तीन) चौतरफा चहल-पहल, अनगिन
खिलल खिलल चेहरन में
ना मिलल सकून
रहे भीड़ में एकला अकेल मन।
देखि के उदासी
पूछल केहू : 'का भइल?'
हँसी ओढ़त बोलल मुँह
'कुछु ना!'
आँखि में छलकि आइल
मन। विह्वल।

(चार) उड़ल परेवा
लिहले चोंच में तिनका/जइसहीं/
अनचितले केहू कइल धमाका/
सवखे भा जोम में
आ परेवा के चोंच से छूटल
तिनका
भुइयाँ आ गिरल।

(पाँच) फेरु भागल बा, होके बेकल
खरहा मन-
ताल किनारा
हरियर मैदान में भरत कुलाँच
फेरु भागल बा मन।
उड़ल बाड़ी सन
झाड़ी से लालमुनि चिरई,
कान खड़ा कइले
भटर-भटर/ताक रहल बाड़न स
मिरगा
मन खरहा ना लौटी अब
बहुत देर ले दुबकल रही
ओनिये कहीं
एह धुआँत, घरघरात
दमघोंटू शहर में
अइसहूँ ओकरा
जिये खातिर इहाँ का बा?

('पाती', अंक-18—19, दिस. 1996)

तूँ गहिर समुन्दर!

तूँ साँच हउवऽ
हम ओकर परतीति
तूँ घाम हउवऽ
आ हम भोरहरी क सीति
तूँ तेल
आ हम ओमे जरत बाती
तूँ जोति हउवऽ
आ हम ओकर उजियार।

तोहके केंतरे बखानी हम
कइसे करीं अभिव्यक्त?
तूँ हउवऽ बरफ से ढँकल पहाड़ त-
हम तोहके चारू ओर से लपेटले
ओस के चादर
हम अगर बन जाईं कठुवाइल देंह
त तूँ हो जइहऽ
मीठ गुनगुना आँच
सुरूज के।

तूँ बादल बन बरिसेलऽ
हम भींजेनी
भींजेनी बनि के धरती
तहरा गरम, शीतल, मीठ नमी के
भीतर ले महसूस करत-
तहरा जल से बनेनी हम नदी
उमड़ेनी कल-कल, छल-छल
आ तूँ
गहिर समुन्दर।

('पाती', अंक-26—27, दिस. '98)

चाह

ऊ चाहत रहे बनल मिसाल
सबका खातिर
एगो अइसन मिसाल
कि लोग इयाद करे।

बहुत सुन्दर रहे ऊ रूप से, देंहि से,
जेतने बाहर, ओतने भीतर से

बोले त झरे हरसिंगार
हँसे त खनके अशरफी
आ अपना अकास में

पाँख खोलि उड़े/त उड़ते रहि जाव।
कवनो काम में हाथ लगावे-त
चट से हो जाव पूरा।

ऊ चाहत रहे बनल
एगो तेज होनहार लइकी
अपना पूरा इस्कूल खातिर
एगो आदर्श बेटी
बाबूजी आ माई खातिर
एगो आदर्श बहिन
अपना बहिन आ भाई खातिर....
चाहत रहे कि का करे, कि का हो जाव!
अइसन करे कि लोग ओकर चर्चा करे
आ नजीर देव,
गरब करे ओकरा पर
ओकर सब आपन।
पगली
भोली रहे एतना कि ओकरा ना बुझाइल
कि खाली चहले से सब कुछ ना हो जाला
ना त दुनियाँ सरग ना बन जाइत।
एगो डँड़ार

एगो लछुमन रेखा का भीतर-
आखिर ऊ कतना उड़ित
अपना भीतरी अकास में?
भलहीं कतनो बड़ होखे ऊ
ओमे बाहरी अकास के जथारथ ना लउकेला
एही से ऊ आपन राह ना बना पवलस
आ चाह से राह का बीच में एक दिन
अचानक ऊ दिया गइल दान
एगो अपरिचित अनजान हाथ में।
ऊ छटपटाइल
कुछ दिन ले उजबुजाइल
फेरू उड़े खातिर पंख फड़फड़ावे लागल
फेरू जागे लागल ओकरा भीतर
आ नया नया चाह।
अब ऊ लागल बिया
बने खातिर एगो आदर्श पत्नी
आ आदर्श माई
लागल बिया अनथक।

कलेजा के टुकड़ा
कई महीना सींचि के अपना खून से
असह पीरा का साथ एक दिन
जनमवलस ऊ अपना कोख से
अपने एगो छोट प्रतिरूप।

प्रतिरूप, जवना में रहे ओकर आ-
ओकरा पति के साझा अक्स

एह अक्स में चमकत रहे-
ओकर अपने गुलाबी गाल के आभा
निश्छल हँसी दूध धोवल
ओकर चंचलता
ओकर शैतानी आ मासूमियत
कूल्ही में लउकत रहे ओके
अपने बचपन
ऊ निहाल रहे देखि के
आपन कलेजा के टुकड़ा।

('पाती', अंक-32—33, जून 2000)

दिन त कइसहूँ बीत जाला

मन के उछाह आहिया के ललक
कि भविष्य गढ़े का कोसिस में
आदमी जस-जस बढ़त जाला
अझुरात-घिंचात ओकरा पाछा-पाछा/
ओकर बीतल अतीत जाला
रउआँ मानीं या मत मानी
दिन त कइसहूँ बीत जाला!

हारल मन ना माने
भीतर से फेर केहू ललकारेला
त हमहूँ मुट्ठी कस लेनी
उगत सुरुज के साथ
अगिली लड़ाई खातिर
आपन डेग बढ़ाइये देनी
फेर.... खुद-ब-खुद टूट जाला, गोड़ के
बान्हें वाला सेवार-सिक्कड़/बिपरीतो
माहौल में
कुछ कर देखावे के हिम्मत बढ़ जाला
अइसहीं नऽ
हारत-हारत आदमी जीत जाला
हम ना कहब कि
दिन त कइसहूँ बीत जाला! ●●

❑ बरौंधा कछार (कार एसेसरीज के बगल में)
वाराणसी रोड, मिर्जापुर-231001

माँछी

दिनेश पाण्डेय

उहाँ का सँहहीं रहनीं। बइठार रहे त चलीं सउदा–सुलुफ का सँगे कुछ मटरगस्तियो हो जाई, एक पंथ दुइ काज। तय भइल जे किराना बाजार मुँहें चलल जाई, फेरू सब्जीहाट होते हुए लवटि आवल जाई।

अब दु अदिमी सँहें चले आ चुप रहे भा एगो बोलते जाय आ दोसरका हुँकारो ना भरे त कइसन लागी? बरदासे ना खाई, उजबुजहट होखी, एहसे कुछ होत रहे के चाहीं। कुछ होत रहे के चाहीं त आखिर का होखो? कवनों मुद्दा त रहो? अइसना बखत के एगो मुद्दा ह– 'सुखम–सितम', बाकिर ई चीझ हमबयस में जादे सोहाला। 'सुखम–सितम' आतमकहनी आ कि आपबीती के रूप ह जवन दुखात्मक होला। कुछ अनुभवी लो' के कहनाम कि कहे से पीर पातर हो जाला। ओ दिन कतो केहू कहि गइल कि भाई, भितरा बिखाद–बिकार के अधिकाई होखे त तीनिएगो राहि रहि जाला– बकरऽ, भँकरऽ आ नात जकरऽ। एकर मतलब ई कि बोल दऽ, अछुधाहि रो लऽ आ ना त जकड़ले रहऽ, साँकल में बान्हि के कहईं भुइँजबरा में कि उपराय ना। एहि में से पहिला दुइगो वमन–विरेचन के तरीका हऽ आ अंतिम दमन के। वमन–विरेचन वाला रीति में दिकदारी ई बा कि कुछ जोग शास्त्री लोग एह तकनीक के बेजायँ इस्तेमाल करे लागेले।

एह बात प एगो घटना इयाद परि गइल एसे तेकरा के सुन लियाव त आगे बढ़ल जाई।

एक दिन कोल्हुआरी में दु जने में हाराबाजी लाग गइल कि एक टीना ऊखि के रस केहू ना पी सके। उहाँ का सनिगर हईं त ताव खा गइनीं आ देखते–देखते भर कनहतर रस उदरस्त। ओ घरी इहे बूझाइल जे अगस्त मुनि के समुंदर सोखे भा जह्नु रिखी के गंगधार घोंखे वाली बात ना त अतिशयोक्ति ह ना कवनो गपोड़ी के गप। ऊखि के रस असहीं मदालस ह, ऊपर से बेहिसाब चढ़ि गइला से उहाँ का पेट आँठी अस तरख भ गइल। राह चलले लाद से टिमटाम आवाज निकले एसे अंजाद इहे भइल जे उदर का ऊपरी भाग में तनीमनी जगह अबहियों बाकी रहे बकि मन असबस करे। उहाँ के कुछ तरकीब सूझल होखी, त लघुशांका के बहाने होने झूँटी के अलोता चलि गइनीं आ निहुरिए होके नरेटी में कुछ करामात कइनीं। फेरू त लागल जइसे खलबला के घइलन पानी बहरी उझील देले होखे केहू। मन हलुक भ गइल।

एह आँतरकथा के अंत इँहवें ना भइल। जिन जने बीस रोपया से हाथ धो दिहले रहलन उनुकर मन सहजे एह बात के माने प तइयार ना रहे। आखिर ई अजगुत भइल कइसे? उहाँ का एके सुरुके कनहतर भर रस घींचि कइसे गइनीं? ऊ बेरि–बेरि उनुकर लाद आ कनहतर के आयतन के अनुमानित भेयार करस बकि दुनों में कवनों तालमेल ना बुझाय, तबहूँ आँखि के सोझे के चीझ प कवनि बात के वहम? गुर के कराह उतरल कुछ देर भ गइल रहे। खुरपा से उलट–पुलट होत

गुर के सोन्ह–मीठ गंध से ऊ अगतहीं मनभरू हो चुकल रहन। मन में आइल जे गुर त बड़ी गईुअन होखेला तुरते मुँह बन्हा जाला अदिमीं के। छटाक भरि से जादे खाए में हाथ ठाढ़ हो जाई। ऐन इहे ऊ बखत रहे जब उहाँ के फेरु नजर आ गइनीं। देखले कि बदला बदे नीमन मोका बा त दाँव खेल दिहले– ''रवों, सभे जानऽतानी जे रस पनछूछुर चीझ ह, पानी पचे में कव घरी लागेला? बाकी गुर ना चली।''

उहाँ के भाव सहजे रहल, हँ, भँव में थोरके बाँकपन जरूर आइल, ठीक ओसहीं जइसन गुर लपेटल काँप क ओरि बढ़त बगेरी के देखि के बहेलियन के भँव में होला।

''रस त पी–पचा लिहलीं, हई दु भेली गुर खा लीं त बीस रोपया राउर।''

''पक्का?''

''पक्का।''

उहाँ के शुरू भ गइल रहीं। नाधा त आधा, आध ा त साधा, ममिला खतम। देखते–देखते दु भेली टटके सुसुम गुर याने कम–से कम चार सेर पेट का भीतर।

''लावऽ हेने बीस रोपया।''

शर्त बदेवाला के मुँह उचुरुँग अस भ गइल रहे। हँ,ए बेरि फरक ई परल कि रस जइसन गुर के सहज वमन ना होखल आ उहाँ का लाद तनी बिगरि गइल।

बात होत रहे विरेचन तकनीक के दुरुपयोग के। आरे भाई, जब मनई देह बा त सुख–दुख लगले रही। चानक जइसन नीतिविद् के कहनाम जे कवन कुल में दाग ना लागल, बियाधि से के बाँचल, कामागि में के ना झुराइल आ सुख के सुरूर में हरमेसे के डूबल रहल? एहि बात के जानेला सभे बकि कुछ लोग अपना के दुनिया के सभसे दुखी जीव समुझे के अभ्यस्त होलें। एकरा पीछे सामनेवाला के सहानुभूति अरजे के लोभ कहीं भा आपन उपलब्धि के गोपित राखे के उद्देश्य। जहवें बइठिहनि कि बीपत के बखान शुरू। ए में कुछ अइसन शातिर होलें कि आपन दुख सुनावत–सुनावत सुनेवाला के सभकुछ मूँड़ ले जइहें आ पतो ना चली कि उनुका सँगे कतिना धोखा भ गइल? सुद"रन के कहनीं के खतरनाक डँकइत खडग सिंघवा एही रीति से नू बाबा भारती के घोड़ा छीनि ले गइल रहे?

ए तरे' के अरमाना गप के दोसरका मुद्दा ह परनिन्दा। परनिंदा आ परमानंद में महज कुछे धुनि के फरक बा। संत सरीखा कुछ जीव तेकर मनाही करेलें आ एहिके कुटेब के दायरा में राखेलें। असल बात कुछ अउरी बा। अदिमी जवनि चीझ से जादे खउफ खाला तेकरा से दूर रहे के कोशिश करेला आ अइसना के नाँव निखिध खाता में इंदराज क दिहल जाला। संतन के हरमेंसे ई डर सतवलस कि कहईं उनुकर भितरिया लँगउटी ना उतर जाव, एसे बाँचे बदे ऊ समूची दुनिया में मुनादी करत फिरेलें कि परनिंदा बड़ी गर्हित चीझ ह, एसे ताने रहल जाव। केहू के कुछो लउकबो करे त जुबान प ना आवे, काहे से कि ई गलीज चीझ ह नू जी। सच्चाई अइसने रहित त रहीम खानखाना जइसन सुलुझल अदिमीं निंदक के, अँगनई में मड़ई छवा के, नियरे राखे के सलाह काहे खाती दिहिते। बेगर साबुन–पानी खरचले सुभाव निरमल हो जाय त केहू का एतराज? संतत्व खाती सुभाव के निरमलता त अनिवार गुन ह फेरु निंदा से भड़के के ओजह अउ का हो सकेला? आ हई तुलसी बब्बा, उहाँ का त हदे क दिहले बानीं! छाती ठोंक के कह रहल बानीं कि हँ, उहाँ का निंदक हईं आ अइसन–वइसन ना, एह काम में उहाँ का महारत हासिल बा। ई पटुता अनकर ऐगुन के सहस्सरमुख बखाने तक लागू बा, आपन निंदा सुन के त मथफोरउवलो हो सकेला–

''जानत हौं निज निज पाप जलधि जिय, जल सीकर सम सुनत लरौं।

रज सम पर अवगुन सुमेरु करि गुन गिरि सम रज ते निन्दरौं।।''

पसगैबत के गप के अउर कइयकगो मुद्दा बाड़ँऽसँ बाकिर तेकर बखान अनेरे विस्तार दीही, काहे से कि एक त ओ में से अधिकांश के घुसपइस एही दुनो में हो जाता, दोसरे, जब कहे के मकसद पूरन हो जाय त गयरजरूरी बकवाद के का दरकार? त चलींजा ओहिजे जहवाँ बात के छोर छूटल रहे।

तय ई भइल कि किराना बाजार मुँहें जाई अदिमी आ सब्जीहाट देने होते वापिस घर लवटि जाइल जाई। त चलि देल अदिमी। कुछ देर त चुप्पा रहल फेरु उहाँ का कंठ खुलल– ''जानऽ ताड़ऽ हो?''

हामी के इंतजार के कवनो जरूरत ना रहे से उहाँ का फेरु शुरू भ गइनीं– ''ससुर जमाना बहुते खराब चल रहल बा।''

हम अचकचा के एने–ओने देखनीं कि लाम मौन के दरमियान ई जमाना कहवाँ से आ गइल? आ मान लेनीं कि आइयो गइल त ओकरा में खराबी वाली बात कुछ बुझाइल ना। हमार चेहरा प अवसि के अबूझ भाव आइल होखी तबे त उहाँ के बात साफ कइनीं– ''बूझऽ कि जे, जहवें बा, हसोथहीं में लागल बा।''

साँच कहीं त बात अभियो मगज में ना आइल रहे बाकिर उहाँ का लगवहिए शुरू रहीं– ''बस ओसरि मिले। बेटिहा बानीं त दहेज सरापय बेटहा हईं त परताप

के चिन्ह, बेरोजगार बदे भठजुग बाय बारोजगार बदे कृतजुग, जनता बानीं त कुराज बा भाईय नेता बानीं त अहह् अइसन सुराज कब भइल? विद्यार्थी पढ़ाई प कम वजीफा आ देश समाज के फिकिरे तनी जादहीं मुअत बाड़े, हम मजूरा हईं, सरकार रोजी–रोटी–आसरे काहे नइखे देत? खेतिहर के करज माफी के आस बा, चिकित्सक मनईदेह प तंत्र–साधना में लीन बाड़े, ओकील नियावघर में विधिमंत्र के सुदीरघ संपुट पाठ करऽ ताड़े, नियावदेवी के आँखि प झोंपनी बा आ उनुकर हाथ के टकौरी के पलड़ा ओजनगर देने लरक गइल बा। शिक्षक लरिकन के दिमाग के सामपट्टी प आड़ी–तिरछी डँड़ारी खाँचत दुपहरी के खिंचड़ी के जनमारू खुशबू में मगन बाड़े, बैपारी के मकसद धनजोरी रहि गइल....। कहवाँ तक ले कहीं हो? घर–घर देखा, एके लेखा। बस, गोटे में समुझ लऽ कि सभे केहू, जे जहवें बा तहवें हसोथहीं में लागल बा खाली मोका मिले के चाहीं।''

लेखन के एगो मरजादा होखेला ना त दरअसल उहाँ का समूचा बक्तब सवाँस बिहून रहे जवना में कवनों अल्प, अर्द्ध, पूर्ण विराम ना रहन सँ आ ना सवाली अथवा अचरज का भाव रहे। बतकही के ना कवनों कारन रहे ना परोजन एसे चुपचाप सुनले में भलाई रहे। असहूँ हतना कालचिंतन एके बेरि भरभरा के दिमाग में आ गइला से उहाँ हँड़होर मचल रहे, थिरता आवे तब नू कवनों प्रतिक्रिया दियाय? उहाँ का साइत प्रतिक्रिया के कवनों चाहो ना रहे एही से त बेगर इंतिजार के फेरु शुरू भ गइल रहीं– ''घनघोर काइयाँ समय बा। भरल हुजूम में आँखि मून लऽ आ झिटिकी फेंकऽ, जेकरे प गिरी नू, समुझऽ कि उहे तिसमार खाँ हवें। हर अदिमी के हाथ में कइगो चेहरा बा, किसिम–किसिम के चेहरा। एके धेय कइसे कउड़ी जोरीं? गिरहथ के गिरह गाँठे के चाह बा, संत माया ठगिनी के तिनगुनिया फाँस में परमसुख जोह रहल बाडें, सामाजिक क्रियावादी आ सुधारक समाज के गति में अरथ के खोज करत समाज के कपरकिरिया क रहल बाड़ें, चाँड़ बुधिगर लोग तापवशित घर में जर–जंगल–जमीन बदे जहरबेरी क बिचड़ा तैयार क रहल बाड़ें।''

इहाँ तक आवत–आवत या त आवेश भा बिखाद से उहाँ के सुर मंद होत गइल आ गवें–गवें निसबद परि गइल। सड़क प भीड़ जादे भ गइल रहे। दुनो किनारे के दोकान पैदल पथ तक पसर आइल रहनसँ, शेष एकतिहाई जगहा ठेला, खोमचा, फेरीवालन के दखल में रहे। बीच के थोरके जगह में पैदल, गाड़ी–छकड़ा, आवारा गाय–गोरू सभे समिलाते सरकत रहन। बिछुरे के आशंका से उहाँ प आँखि गड़वले पिठिअवले जाए के सेवाय कवनो चारा ना रहे। सारा विचारक्रम भीड़ के कोलाहल में कतो गुम भ गइल रहे।

उहाँ के चूरा के ठेला लगे मोलावत नजर अइनीं।

''का हो चूरा कइसे?'' हाथ बेलचा के शक्ल में ढल गइल रहे। दाम सुने के इंतिजार के करो? बेलचा चलल आ चूरा का ढेरि से जतिना चूरा जद में आ सकत रहे, पलक झपकते कोकाच का भीतर। ठेलावाला के कुछ कसमसहट भइल बकि ठंड परि गइल। एसे अगते कि ऊ कुछ दाम–वाम बके उहाँ का चूरा चुभुलावत बलबलइनी ठीक ओसहीं जइसे ऊँट भा कवनों पनक्कड़– ''ओहो–हो–हो, ई त बासमती नइखे बुझात। बासमती नइखऽ रखले का? अच्छा कवनों बात ना, हमरा उहे चाहत रहल ह।'' उहाँ के दोसर ठेला का ओरि बढ़ गइल रहीं।

चार–पाँच ठेला घुमला के बादो उहाँ का बासमती ना भेंटल। मन में आइल जे उहाँ का अनुभवी ठहरनीं, बासमती के पहिचान देखिए–सूँघ के हो जाला, हर बेरि बेलचा बिधि के का दरकार रहल ह? बासमती चूरा कइयक जगे रहे बाकिर ओहर उहाँ का नजर एको दफा काहे ना गइल? एक बेरि गइबो कइल त दोकानदार का लाख आ"वस्त कइला के बावजूद उहाँ का नजर में ओकर प्रभेद उन्नत ना रहला से सउदा ना पटल आ ई सभ बारीक परीक्षण बेगर बेलचा बिधि के हो ना सकत रहे।

अब ले उहाँ के चित्त से चूरा उतर चुकल रहे, एसे तेकर खरीदगी के इरादा स्थगित भ गइल। 'गुरहट्टा शुरू रहे त उहाँ के नीमन गुर के खोज में लाग गइल रहीं बाकिर उहाँ लाएक उम्दा गुर अंत ले कतो ना भेंटल। जवन 'देखल' गइल तवन बेसवाद रहे, नुनछाह, किनकिनाह रहे, सेवर, तरख ना त लटोर रहे, सोडा मारल गोर रहे ना गँवढ़ के करियठ। कहईं पसनो परल त दाम में अगलगी।

''आखिर हतना खोट अछइत खरीदगी कइसे हो सकत रहे? बेगर गुर खइले अदिमी जीही ना, अइसन कवनों बात त नइखे। अरे, तनी गुर के चाह–चुह मजिगर बनेला ना त हेने तकलो के का जरूरत?''

जाहिर बा कि अछता–पछता के सही, बकि गुर कीने के इच्छा धइले–के–धइले रहि गइल रहे। ''सइ सइ उधामत का बाद अदिमीं दु पाई जोरि पावेला, असहीं सेतिहे में ओके गँवावल के चाही? सउदा पटावल एगो कला हऽ जवन सभके वश के चीझ ना हऽ। सहता

रोवे बेरि–बेरि महँगा रोवे एके बेरि। जमाना बड़ा चंठ बा, तनिका आँखि का लागल कि डिब्बा गोल। जेकरा में चेत नइखे तेकरा के हबके में एन्हनि के कतना देर लागी? देखे जोग ई बात बा कि सभ थडकलसिया गुर रखले बाड़नसँ आ दाम चाहीं चोख, बैकूफ केहू अउरी के बनइहऽ जा, इहाँ त नाक प मछियो बइठेली त ढेर तजबीज कइला का बादे।''

आगे कुँजड़िन मोढ़ा प डगरा सजवले कँचगर चना (कचरी) बेंचत रहीजा। अबहीं अगताह रहे। ''बेमौसम के फसिल के सवाद लिहल आमजन के कूबत के चीझ ना हऽ। असहूँ बेसीजन के उपज में असली गंध आ सवाद कहवाँ? ई खालिस हिरिस ह। ई सभ दुलमरिए अदिमीं कीन पइहें, जेकरा पासे पइसा अफरात आवत बा, एकलमरिया के कहवाँ बेंवत? ऊ त पाई–पाई के रस लिहले चाही,तुच्छ जीभ के चक्कर में गाढ़ कमाई लुटावे के हिम्मत ओकरा भीर ना हो सके।''

तबहूँ जानकारी ताजा राखे के लिहाजे दाम समुझल जरूरी रहे। एहिजा बेलचा तकनीक के इस्तेमाल माफिक ना रहे त फाँका–फँकी मुफीद परल। बिना एकरा कइसे पता चली कि ई असली कचरी ह कि मोअल हरियर बूँट? ए बेरि त अगतहीं से साफ रहे कि उहाँ का कचरी कीने के कवनो इरादा ना रहे बस जानकारी ताजा करे के उद्दे"य रहे तवन दु–चारि जगे मोलभाव के बाद पूरन भ गइल रहे।

''भला कहीं, ताजा कचरी में अँखुवा फूटेला? बकि कहऽ कुछो, हवे ई ललचौना चीझ। किस्सा ह कि बोवाई में हरवाह फाँक लेवे, हराई में चिरईं चुन ल सँ, बित्ता भ के भइले ना कि सगखोंटनी टुँग लँ सँ, गोटाए का चलले कि सइसइ नजर, गदरइले त होरहा के झोलझाल, तंग आ के चनानंद बरम्हाजी लगे ओरहन ले के चहुँप गइले। हतिना बड़वारी सुनि के बरम्होजी केबरदास ना भइल त हाथ बढ़ाइए देनीं। चनानंद मनसा भाँप लिहले रहलन एसे उहाँ से घसकल चहले। रगेदा–रगेदी में उनुकर नाक बरम्हाजी के चुटकी में धरा गइल। जान त छोड़ा लिहलें बाकी इचिका झटका लागे से नकिए तनी कज भ गइल।'' उहाँ का मुँह के मांसपेशी में थोरके हरकत भइल रहे जइसन कुछ चुभुलावत बखत होला, लागल कि गलफर में बाँचल–खुचल कचरी–कन के कुरेद के स्वादगंध के पुनरास्वादन कइनीं हँ। काहे से कि उहाँ का चेहरा प अधतिरपित आनंद के भाव रहे।

उहाँ के गोड़ अनियासे 'चाह का दोकान' का ओरि बढ़ गइल रहे। भीड़ तनी जादे रहे। एक देने खाली तख्ता देखि के बइठे के जगह बनावल गइल। कुछ देर में टेल्हा 'चाह' दे गइल। 'चाह' के सुड़सुड़ान का सँड़हे एने–ओने के बात होत रही सँ बाकि तेकर कवनों लगातार कड़ी ना रहे। असहूँ हेह किचाइन में कवनो गम्हिराह बात ना हो सकत रहे। चलती दोकान रहे, से सुभावतन जुटान जादे होखे। 'चाह' के सवाद मजिगर रहे। खूब अँउटल ललछहूँ गढ़गर दूध में उम्दा कड़क 'चहपत्ती' के खुशबू से तोस होखे।

उहाँ का 'चाह' पी के गिलास मेज प ध दिहले रहीं। बुझाइल जे गिलास के पेनीं में एकाध घूँट अबहीं बाकी होखी। उहाँ का कुछ बोलत रहलीं बकि कचबच में कुछ बूझाय, कुछ ना। असहूँ अंजाद त इहे रहे जे कवनों काम के बात ना होखी, एसे बूझे के कोशिश के बजाय बूझे के ढोंग जादे कारगर रहे। उहाँ के हाव–भाव से ना लागल कि बोले के इकलौता मकसद, श्रोता तक विचार चहुँपावे के ज्ञात जरूरत, से बोलत होखीं। धेयान कहीं अनजान बिन्दु प रहे, ओठ हरकत में रहे, बीच–बीच में एगो माँछी एमें बिघिन डाले। ऊ साइद उहाँ का नाक प बइठे के बेंवत में रहलि। मूँड़ी झँटला के बादो ऊ घूरफिर ओहरे मेंड़राय। कुछ देर अगते के उहाँ के कहल बात कि ''हिंहाँ त नाक प मँछियो बइठेली त ढेर तजबीज कइला का बादे'', इयाद परि गइला से साइद भितरा ले आ के मुसकान के रेख चेहरा प फइलल होखी, काहे से कि उहाँ के सचेतन–अचेतना क मुदरा में चहुँप गइल रहीं जवन एगो घातक अनहोनी के संकेत रहे। हम टोह में रहलीं कि आखिर मँछिया गइल केने? एकर एगो अउरि ओजह रहे, ऊ रहे ई देखे के ललसा कि एगो नन्हींचुक्की माँछी उहाँ के नाक में कतना दम करि सकेले आ ओहि हालत में उहाँ का पलटक्रिया का होखी? ए बेरि उहाँ का आपन बँयवारी हाथ खलिहा गिलास के मुँह प एह तरे' ढँपले रहलीं जइसे पिलुआ–फतिंगा गिरे से रछया के उपाय बदे लोग करेलें। अचके उहाँ का रोस खा के गिलास के मेज प पीटे के तेज आवाज का सँड़हे उठनीं। मुँह से तेज आ अबूझ सबद जइसन निकलल बाकि भीतर से उठत जोरदार हूल में गुम भ गइल। एक हाथ से पेट के ऊपरी हिस्सा पकड़ले आ दोसरका से गिलास का ओरि इशारा करत उहाँ के तेजी से बहरी जा चुकल रहीं। दोकान मालिक धउड़ल गिलास का ओरि लपकलें। उत्कंठा से गिलास के भीतर झाँकल गइल। पेनी में बाँचल गाढ़ छल्हिगर 'चाह' के सतह प पाँख छितरवले मुअल माँछी उतरात रहे। ●●

❑ आवास–100/400, रोड नं० 2,
राजवंशीनगर, शास्त्रीनगर, पटना–23

भूल - चूक क्षमा

कन्हैया सिंह 'सदय'

साँझ के पांच बजत रहे। तृषा अभी – अभी आफिस से लवटल रही। चेहरा प थकान के चिन्हासी मौजूद रहे। ऊ रसोइया से एक कप काफी बनावे के कहली, हाथ–मुँह धोवली, कपड़ा बदलली आ फ्रेश होके जसहीं सोफा प बइठली, टेलीफोन के घंटी बाजलि। ऊ अनसात उठली आ टेलिफोन के चोंगा उठा के बोलली– 'हेलो'। फेर कुछुवे देर में फोन राख दिहली। टूटल–फूटल शब्दन के जोड़ – घटाव करत ऊ एह निष्कर्ष प पहुंचली कि ई फोन उनका ससुर के– गाँव से रहल हा... ससुर जी के तबीयत बहुते खराब बा। ऊ केशव के फोन लगवली आ जल्दिये घर लवटे के आग्रह कइली।

छव बजे जब केशव पहुंचले त ऊ बतवली – 'रउरा गाँव से फोन आइल रहल हा... बाबूजी के तबीयत खराब बा... जेतना जल्दी हो सके, गाँवे पहुँची.... ।' तृषा के बात सुनके केशव, आत्म–मंथन करे लगलें। ... गाँव से फोन के कर सकत बा? हमार फोन नं. गाँव में केकरा लगे हो सकत बा? ऊ दिमाग प जोर दिहलें त इयाद परल, बिदेशिया, जवन हमरे फैक्टरी में काम करेला। जवारी बा। ओकरा हमरा बंगला के पता मालूम बा। ओकरे साथ नूं भइया के जेठका बेटा सुधीर, चार साल पहिले गाँव से चुप्पे भाग के हमरा लगे नौकरी खातिर आइल रहे। बाकिर, हमार फोन नं. ओकरा पास नइखे हो सकत। हो–ना–हो ई फोन सुधीरे कवनो टेलिफोन – बूथ से कइले होई। सुधीर के पास तकनीकी प्रशिक्षण के कवनो सर्टिफिकेट ना रहे। ज्यादा से ज्यादा हम ओकरा के सहायक का पद प रखवा सकत रहीं। बाकिर, हम अइसन ना कइलीं। एगो मैनेजर के भतीजा कवनो कामगार के सहायक का रूप में काम करो, ई बात हमरा लज्जास्पद बुझाइल आ हम ओकरा के समझा – बुझा के टरका देले रहीं। बाद में हम अपना गलती के एहसास कइलीं।

आदमी अपना योग्यता का मोताबिक कवनो पद–प्रतिष्ठा के हकदार बनेला। एमे लज्जा भा हंसारत के कवनो वजह ना रहे। नौकरी, गुलामी ह... ऊ मैनेजर के होखे भा सहायक के। हँसारत होइत त होइत... ओकर बेरोजगारी त दूर हो गइल रहित।... एगो अच्छा मौका रहे, पारिवारिक आक्रोश आ मन मोटाव के शांत करे खातिर.... । ... जवन परिवार हमरा पढाई खातिर अपना खुशियन के बलि चढ़ा दिहल। दू बिगहा खेत के साथ भउजी के गहनो बेंच दिहल। अपने फटेहाली में जीअल। बाकिर, हमरा सुख–सुविधा के हरमेसा ख्याल राखल। ओकरा खातिर आज ले हम का कइलीं? धिरकार बा, ओह पद–प्रतिष्ठा आ धन–सम्पति के जवन अपना के अपनन से अलग कर देव। ओह लोग के मन में हमरा प्रति जवन नफरत आ खीझ पैदा भइल बा, ऊ अकारन नइखे।... हम पकिया स्वार्थी, कृतघ्न आ कुलबोरन बानी। हम आज ले ऊहे सभ कइलीं जवन एगो दोगला करेला...। उनकर मन अपराध–बोध से ग्रसित हो गइल। ऊ बुदबुदइलें – 'पन्द्रह साल, हो गइल गाँवे

गइला... ऊ लोग हमरा के चीन्ह पाई...?' 'कवना सोच में पर गइलीं जी! अपना सवाँग के भला के ना चीन्ह पाई? बाबूजी के हालत सीरियस बा आ रउरा गुनावन करे बइठ गइलीं। जल्दी करीं... देर कइला से भेंट होखे, ना होखे... । तृषा अकुलात कहली, अब एतना जल्दी हम कइसे चल जाईं? काल्ह हमार एगो जरुरी मिटिंग बा। बॉस से छुट्टी लेब, टिकट रिजर्व करायेब, तबे नू जा पायेब।', घरी में घर छूटे नव घरी भदरा....! महटियाई मत... ट्रेन के चक्कर छोड़ी, बहुत देर हो जाई। अपना कारे से चल जाईं।' हम रउरा बॉस के फोन कर देत बानी। अइसन केस में ऊ इनकार ना करिहें। बात इमर्जेंसी के बा। हम ड्राइवरो के बोला लेत बानी। चार बजे भोर में इहाँ से निकल जाईं सभे। साँझ होत–होत गाँवे पहुंच जायेब.... । 'हमरा के अगुताव मत। सोचे के मौका द। उहां हमार गइल उचित नइखे लागत। उहवाँ के माहौल, हमरा खातिर कतई सुरक्षित आ अनुकूल नइखे। 'त बइठीं घरे, हमहीं जात बानी... सास के मुँह त ना देखलीं... कम से कम ससुर के त देख लेब... अपना भूल खातिर क्षमा त माँग लेब... उम्मेद बा, उहाँ का हमरा के आपन बहू स्वीकार कर लेब...।' तृषा तुनकली।

ई का कहलू? लहकत लहोक में खई डाले जइबू? बवाल, आउर बढ़ जाई। तोहरा इयाद बा? जब हम परिवार के इच्छा का विरूद्ध तोहरा से विजातीय प्रेम – विवाह कइले रहीं आ बाद में बाबूजी के सूचना भेजले रहीं त जवाब में उहाँ का का लिखले रहीं?...' अब तू फेर कबो हमनी के आपन मुँह मत देखइह... ना कबो हमनी के हालोचाल जाने के कोशिश करिहऽ... तूं हमनी के भावना से खेलवाड़ कइले बाड़ऽ... हमरा के त जीयते जीव मार दिहलऽ...अब दोगलन के देखे से पहिले भगवान हमनी के उठा लेस, इहे विनती बा... ।' एकरा बाद त माई के निधन के सूचनो दिहल उहाँ का जरूरी ना समुझलीं। ऊ त भतीजवा आइल त बतवलस कि दादी अब एह दुनिया में नइखी... । 'हमरा सभ इयाद बा, ऊ चिट्ठी हम सम्हार के रखले बानी। हमरो माई–बाबूजी त एह संस्कार विरूद्ध शादी से खुश ना रहे। बहुत दिन ले मान–मनौवल कइला का बाद ऊ लोग माफ कइल। का रउवो अइसन कइलीं? अभिभावक के डाँट–डपट आ गुस्सो में संतान के भलाई छिपल होले। हमनी धन–दौलत बिटोरे आ पद–प्रतिष्ठा हासिल करे के चक्कर में अपना अस्तित्व आ अस्मिता के दाव प लगा दिहलीं। भौतिक सुख–साधन के इक्कठा करे के दौरान हमनी भुलाइये गइलीं कि दाम्पत्य जीवन के पूर्णता संतान – प्राप्ति के बादे हासिल होले। खैर, छोड़ी ई सभ बात। गड़ल मुर्दा उखाड़े आ बतकुचन करे के समय नइखे। चलीं, हम रउरा साथे चलत बानी। हदसला से बात ना बनी...समस्या से भगला प समाधान ना निकले। शाप आ वरदान एके सिक्का के दू पहलू होलें। आदमी के अन्दर आग आ पानी दूनू होला। आशावादी बनीं...?

'ठीक बा, जब तोहार इहे इच्छा बा, त चलऽ। जे होई से देखल जाई। अब तइयार होखऽ। अपना बॉस के सूचना दे दी आ हमहूं...। बाकी व्यवस्था मिलजुल के कर लेबे के। प्रस्थान के समय, चार बजे भोर, सही बा।' सुनके तृषा के चेहरा खिल उठल। वासुदेव बाबू एगो मध्यम दरजा के प्रतिष्ठित किसान... गुजरकराऊ आर्थिक स्थिति... मनोबल के धनी। संतान के नाँव पर महज दूगो बेटा... बड़ बलभद्र आ छोट केशव। उमरि में लगभीर पांच साल के अन्तर। पढ़ाई – लिखाई का दिशाई बलभद्र– सामान्य आ केशव – मेधावी। बी. कॉम पास कइला का बाद बलभद्र, नौकरी के तलाश में जहां – तहां भटकले, छिछियइलें, दू बरिस ले... ।जब कवनो ढ़ंग के नौकरी ना मिललि त हार–पाछ के रजिस्ट्री आफिस के चक्कर लगावे लगलें। धीरे – धीरे जान–पहचान बढ़ावत, रेंगत – सरकत ऊ साहेब के बंगला प पहुँचले आ चिरउरी कइलें... साहेब उनका के अपना सेवा में राख लिहलें। कुछ समय बाद जब ऊ साहेब के विश्वास पात्र बन गइलें त ऊ उनकर नियुक्ति कलर्क का पद प कर दिहलें। आस्ते – आस्ते परिवार के आर्थिक स्थिति सुधरे लागलि। दूइये महीना बाद बलभद्र के विवाह, सुशीला से भइल। ऊ प्रवेशिका पास रही। सुशीला, सुन्दर, मृदुभाषी आ जागरूक महिला रही। दू साल बाद, पंचायत – चुनाव में उनकर चयन एगो पंच का रूप में भइल। तब ऊ अपना घर – गृहस्थी के कामकाज सम्हारत सामाजिक सरोकारो से जुड़ खइली। केशव स्नातक (विज्ञान) के परीक्षा जब प्रथम श्रेणी से पास कइलें, त परिवार – शुभचिंतक आ रिश्तेदार लो भाई–बाबूजी के समुझावल – 'लड़िका होनहार बा। उच्च शिक्षा प्राप्त कके ई कवनो बड़ा अफसर बन सकत बा... खानदान के नांव रोशन कर सकत बा... घर के माली हालत सुधार सकत बा... रउरा सभ कवनो अच्छा इंजीनियरिंग कॉलेज में एकर एडमिशन करवाई...।' अपना आर्थिक स्थिति के देखत पहले त बाबूजी नाकुर–नुकुर कइलीं।

बाकिर, भइया जब हिम्मत बढवलीं त उहाँ का तइयार हो गइलीं। एक साल कोचिंग कइला का बाद केशव के चयन, आई. आई. टी. खड़गपुर खातिर हो गइल। कैम्पस सेलेक्शन के दौरान पूणे के एगो चर्चित कम्पनी उनका के चयन कइलस आ डिग्री हासिल कइला का बाद ऊ ओही कम्पनी में पहले पहिल ज्वाइन कइलें। नियुक्ति के एक साल बाद ऊ एक सप्ताह के छुट्टी में गाँवे अइलें। माई–बाबूजी आ भाई–भउजाई के खुशियन के ठेकाना ना रहल। गाँव से लवटे के एक दिन पहले ऊ माई–बाबूजी से बतियवे के दौरान कहलें – '... फिलहाल रउरा सभ हमरा के विवाह–बन्धन में बान्हे के प्रयास मत करबऽ। हम उन्मुक्त पंछी अस उड़ान भरे चाहत बानी आ जबले अपना मंजिल प ना पहुँच जाइब, तबले कवनो तरे के बन्धन स्वीकार ना करे चाहब... ।' 'बाकिर, लइकीवालन के आवे से त हम रोक नइखीं सकत। आये दिन एक से बढ़के एक रिश्ता आ रहल बा। कुछ हमरो परेशानी समुझऽ... ।' बाबूजी कहलीं। 'रउरा सभ के परेशानी हम समुझत बानी... बाकिर का करीं, ई निर्णय हमरा कैरियर से जुड़ल बा... विकास से सम्बन्धित बा... जइसे एतना साल गुजरल तइसे कुछ साल आउर...।'

'ए बबुआ! ना विकास के अन्त होला ना उड़ान के सीमा। सभकुछ अपना समय– सीमा के अन्दर सोहावन लागेला। आखिर, हमनियो के त कुछ फर्ज बा. .. सोहिला बा।तोहार कुछ साल, केतना साल के बराबर बा।' 'बस, तीन–चार साल... ।' 'ठीक बा, तोहार जवन मर्जी करऽ... ।' कहत बाबूजी उदास हो गइलीं। पूणे लवटला का बाद उनका अन्दर ऊँचा ओहदा पावे के जुनून सवार भइल। भाग–दौड़ शुरू भइल। पाँच साल में, तीन गो नामजद कम्पनियन से पद–त्याग कइला का बाद ऊ एगो विख्यात स्टील कम्पनी में मैनेजर के पद प नियुक्त भइलें। इहवाँ उनका ठहराव मिलल। कारन रहली – तृषा। तृषा, एम. बी. ए. पास रही आ एही कम्पनी के जेनरल मैनेजर के पर्सनल सेक्रेटरी का पद प कार्यरत रही। ऊ बांग्ला भाषा भाषी रही। बाकिर, उनका अंग्रेजी हिन्दी आ भोजपुरियो के अच्छा ज्ञान रहे। गौरांगी तृषा देखे में, सुन्दर–सुकांत, बोले में मृदुभाषी, तार्किक आ प्रतिभाशाली रही। उनकर बाबूजी कोलकाता के एगो चर्चित हॉस्पीटल के नामी चिकित्सक रहन आ माई सुशिक्षित गृहणी। कोलकाता में उनकर पुश्तैनी मकान रहे। तृषा ओह दम्पति के एकलौती संतान रही। आस्ते–आस्ते केशव आ तृषा के दिल में प्रेम के भावना कुलबुलाये लागलि आ ऊ लोग एक–दोसरा के निकट आवे के कोशिश करे लागल। जाहिर बा ई प्रेम, त्याग आ समर्पण के पवित्र धरातल से दूर दैहिक – इच्छन के संतुष्टी, अर्थ संग्रह, पदोन्नति आ बेहतर लाइफ स्टाइल के बलुआही जमीन प आधारित रहल। कुछ दिन ले त ऊ लोग लीव इन रिलेशन में रह के मौज–मस्ती कइल। बाद में बदनामी से बचे खातिर ऊ लोग अपना प्रेम – विवाह प सरकारी मोहरो लगवा लिहल। दूनू पक्ष के अभिभावक लो के कानो–कान खबर ना भइल। पता तब चलल जब सभकुछ हो–हवा गइल। अब ऊ लोग का कर सकत रहे, नफरत आ आक्रोश के सिवाय। हालांकि, तृषा अपना भाई–बाबूजी के एक बेर संकेत देले रही। बाकिर, केशव त उहो ना। एह घटना से संबंधित चिट्ठी जब गाँवे आइल त पढ़के हाहाकार मच गइल। लागल बाबूजी बेहोश हो जाइब... माई त छाती पीट–पीट के रोवे लगली। रोवस काहें ना? उनका बरिसन के संचित अरमानन प प्रहार जे भइल रहे। बेटा–पतोह कई दिन ले ओह लोग के समुझावे–बुझावे के प्रयास करत रहल। एक सप्ताह बाद बाबूजी ओह चिट्ठी के जवाब भेज के, अपना दिल के बोझ कुछ हल्का त कर लिहलीं। बाकिर माई ई हादसा बरदास्त ना कर सकली आ महीने दिन बाद परलोक सिधार गइली। बाबूजी भीतर से टूट गइलीं। अध्यात्मिक रूझान बढ़े लागल। बाकिर, एही के साथ उहांका ह्दय–रोग से ग्रसितो रहे लगलीं। सोच में बदलाव आवे लागल... । विवाह के बाद तृषा, निडर आ स्वच्छंद रहे लगली। ऊ अपना आचरन आ मेल–मिलाप से अपना बॉस के कुछ बेसिये प्रभावित कर दिहली। परिणामस्वरूप, ऊ खुश हो के केशव के डिविजनल मैनेजर बना दिहलें। संतति–जनन के मामला में ऊ लोग कबो गंभीर ना रहल। ई काम ओह लोग खातिर एगो बड़ समस्या का रूप में लउकल। भाग–दौड़ के जिनिगी में बाल–बच्चा के पालन–पोषण के करित? फेर फिगर खराब होखे के डर अलग से। एही से संतति–जनन से ज्यादा संतति–निग्रह पर ऊ लोग ज्यादा ध्यान दिहल। यात्रा के तइयारी, बेमतलब के बतकुचन आ अनहोनी के आशंका से रात भर दूनू परानी के नीन्ह ना आइल। ऊ लोग तीन बजे राते में बिस्तर से उठ के, दैनिक क्रिया से निवृत होखे में लाग गइल। ठीक पौने चार बजे ड्राइवर कॉल वेल बजवलस। तृषा दरवाजा खोलली आ सामान कार में राखे के आदेश दिहली। ठीक चार बजे कार सड़क प

दउरे लागल आ एही के साथ भागे लागल ओह लोग के मन, एह कोठा से ओह कोठा प। पूर्व – स्मृतियन से उत्पन्न संत्रास मन के भयभीत करे लागल। ऊ लोग ड्राइवर के सामने खुल के बातो त ना कर सकत रहे। चाय आ नाश्ता के बहाने दस – बारह मिनट के ब्रेक में का बतियावल जा सकत रहे। दिन के बारह बजे ऊ लोग भोजन करे खातिर एगो लाइन होटल में गइल। एही दौरान तृषा कहली – 'हमनी के गाँवे जाये के दू गो उद्देश्य बा – पहिला बाबूजी के दर्शन आ इलाज के समुचित व्यवस्था आ दोसरका जेठ जी के परिवार के साथ आत्मीय सम्बन्ध बनावल आ ओह लोग के बिस्वास जीतल। एकरा खातिर हमनी का जे कुछ करे के होई, कइल जाई। ना त सम्बन्ध, आउर बिगड़ जाई। एक दिन इहे परिवार हमनी के कामे आई... ई बात ना बुलाये के चाहीं... ।

'तू ठीक कहत बाड़ू तृषा! हमहूँ इहे सोचत रहीं। पइसा से सभकुछ नइखे पावल जा सकत। अपनन के, आपन बनावे के परेला... ।' एतने में बेयरा टेबल प बील राख दिहलस। फेर बइठल उचित ना लागल। ऊ लोग होटल से बाहर निकल आइल।

कार, फेर से गतिशील हो चुकल रहे। जइसे – जइसे गाँव नियराइल जात रहे, दिल के धुकधुकियो बढ़ल जाति रहे। कवनो अनहोनी के आशंका, चेहरा के झांवर त कइये चुकल रहे। कार जब आखिरी पड़ाव प रोकल, त पास पड़ोस के लोग चकचिहाइले वासुदेव बाबू के दुआर कियोर लपकल। भइया दुआर प बइठल रहीं। उठ के खड़ा भइलीं। केशव कार से उतरके उहांके पवलगी कइलें आ तृषा, प्रणाम। एतने में दूनू भतीजा दउरल कइलें सन आ पवलगी कइला का बाद, कार से सामान उतारके घर में ले जाये लगलें सन। केशव, भइया से पूछलें – 'का भइल बा, बाबूजी के?'

'उहां का दिल के बेमारी बा। दू बेर दौरा पर चुकल बा, रह–रहके छाती में भयंकर दरद उपट जाता। छपरा के डाक्टर, बाई पास सर्जरी के सलाह दिहले बाड़े, लाखन के खरच बा... त एतना सावंग कहां बा हमरा में...? दवाई चल रहलि बा... लागत बा, तोहरे लोग के देखे खातिर उहां के परान अटकल बा। अच्छा कइलऽ, मौका से आ गइलऽ, चलऽ देख ल... ।

'भइया कुछ भावुक होत कहलीं। भउजी, निकसार का लगे खड़ा रही। केशव, आगे बढ़ के उनकर पैर छूवलें आ तृषा के परिचय दिहलें। ऊ आगे बढ़ के उनका के अंकवारी में बान्ह लिहली। फेर अन्दर ले गइली। दुआर प एगो अच्छा खासा भीड़ जमा हो चुकल रहे। केशव, यथोचित सभे के प्रणाम कइलें आ आशिर्वाद दिहलें। तनिये देर में सभे, ओह लोग के चीन्ह गइल। अइसन ना लागल कि केहू इहां अपरिचित बा... अनचिन्हार बा। मन के उलझन आ तनाव कुछ कम भइल। भइया उनका के अन्दर ले गइलीं आ जसहीं बाबूजी के कमरा में जाये लगलीं, भउजी टोकली – 'अभी रूक जाईं... पहिले जलपान कर लीं सभे... बाबूजी के दरद आ नीन्ह के गोली दियाइल बा... अभी उहाँका अउँघाइल बानी... ।' सभे आँगन में राखल कुर्सियन प बइठ गइल। भउजी लड्डू आ पानी सभका के परोसली आ ड्राइवरो के नाश्ता–पानी भेजववली। तृषा, अइसन खातिरदारी देखके अभू में पर गइली। जलपान कइला का बाद सभे बाबूजी के कमरा में गइल। भइया, बाबूजी के जगावत कहलीं –' उठी बाबूजी, देखीं, केशव अपना पत्नी के साथ रउरा से मिले आइल बाड़ें... ।' केशव के नाँव सुनते पता ना कवन अदृश्य शक्ति उहाँ के देह में समा गइलि। उहां का चटे उठ के बइठ गइलीं आ अपलक ओह लोग के निहारे लगलीं। दूनू बेकत उहाँ के पैर छूवल। 'खुश रहऽ लो... फूलऽ फलऽ लो... ।'कहत बाबूजी के आँखिन में सावन उमड़ आइल। उहां का हकलात पूछलीं – 'मिले में एतना देर काहें कइल लो?... तोहरा लोग के देह से कवनो बाल बच्चा... ।' 'ना बाबूजी! हमनी, एह कुल खातिर दोगला कइसे पैदा कर सकत बानी...।

हमनी के भूल चूक, क्षमा कर दी...। 'कहत तृषा सुबक परली। 'ना... बहू... ना...। खीस आ आवेश में हम ऊ चिट्ठी लिख देले रहीं... तवना के अफसोस हमरा आजो बा। पुरनकी मान्यता से प्रभावित, तबके ऊ हमार विचार अब अप्रासंगिक हो चुकल बा। कलि, कर्म प्रधान युग ह। एमे दोगला के निर्धारन जन्म से ना, भले कर्म से ही कइल सही आ तर्कसंगत बा। कीचड़ से खाली जोंके ना, कमलो त पैदा होला... हम त तोहरा लोग के बहुत पहिलहीं क्षमा कर दिहलीं... अब तुहूँ लोग हमरा... भूल... चूक... के... क्षमा... । 'कहते दिल प एगो जोरदार झटका लागल आ उहाँ का छाती पकड़ले बिछावन पर घुलट गइलीं। आँख तरेरा गइल। ●●

❑ कार्तिक नगर, खड़ंगाझार गणेश मंदिर के पास,
पो. - टेल्को वर्क्स, जमशेदपुर – 4

माई

शारदा पाण्डेय

अँजोर फूटे में तनी देर रहे। अनगुताह होखे के पहिले वाली अन्हरिया अबहीं पसरल रहे। तीन डँड़रिया तनी धसकल रहे। ध्रुवतारा में अबहीं ओइसहीं चमक रहे। बलेसरा के बुझाइल कि अब समय आ गइल बा। उनुका लगे अनुकर दोसरकी बेटी रेशमा सुतल रहली उनुकर उमिर तेरह–चउदह बरिस रहे उनुका के बलेसरा जगवली। पीर बढ़ते जात रहे। दाँत पर दाँत बइठवले ऊ सहे के कोशिश करसु बाकिर जब आड़ल कठिन हो गइल तऽ बेटी के जगवली। कहली कि, 'ए बबुनी! जाइ के मइया के लगा ले आउ। कहिहे कि माई के पेट बथत बा, जल्दी चलऽ।'

रेशमा आँखि मलत उठि गइली। जाइ के मइया के जगवली। ऊ पक्का घर में सुतल रहली। उठि के दूनो हाथ आपन देखली, हाथ जोड़ि के देवता लोग के प्रणाम कइली। धरती के प्रणाम कइली। फेरू पुछली कि, 'का हऽ रे बुचिया?'

रेशमा कहली जल्दी चलऽ, माई बोलावतिया, ओकर पेट बथत बा। मइया जान गइली कि समय तऽ होइए गइल बा। काल्हुए से अनमनाह रहलि हा। कहली, 'जो रमलेखवा बो चमइनि के बोला ले आव ऊ माई के पेट मींजी।'

रेशमा डेरइली ना, अपना पितिआउत बहिन के जगाइ के चल गइली बोलावे। जात खानी खिरिकी के दरवाजा ओठघाँवत गइली कि केहू आवे मत पाओ। मइया, माई के घर में गइली तऽ ऊ छटपटात रहल। मइया उनकर करिहाँव सुहरावे लगली। तऽले बुझाइल कि माई जोर से कँहरलस। मइया कहली कि 'दिअवा कहाँ बा? बारि लीं, कुछु लउकत नइखे।'

'ताखा पर' कहलस माई आ ओकरा बादे लइका के रोआई सुना गइल। तऽले ककुआ, चाची अपना–अपना घर से निकलि आइल लोग। मइया पुछली, 'ए बबुआ बो! देखु तऽ का हऽ?'

बलेसरा कहली, 'बेटी हऽ।'

मइया कहली, 'तनी नीमन से देखु बेटा होई।'

माई कहलस, 'ना ए मइया जी! बेटिए हऽ।'

मइया के बोली बदलि गइल, लइकी गोद से छुआइल। कहली, 'बेटी भइला के कवन काम रहल हा? कुछ अउरी ना पुछली ना कइली। तऽले रेशमा धगड़िइन के लेके आ गइली। उनुका ककुआ से मालूम भइल कि बहीन भइल बिआ त ऊ खुश हो गइली।' बाकिर ककुआ आ चाची आपुस में कहत रहल लोग, 'मइया जी के अइसे ना करे के चाहीं। बेटा–बेटी कइल का अपना हाथ में बा?' सउरी में केहू के जाए के ना रहे। रेशमा जाए के चाहत रहली तऽ उनुका के समुझा–बुझा के रोक लिहल गइल। दू घण्टा के बाद रामरेखा बो बहरि अइली। तऽले चारों ओर अँजोर पसरि गइल रहे। पूरुब ओर ललछाँह अँजोर झाँके लागल रहे। चुचुहिया

त पहिलहीं बोल के बिहान के अगवानी कऽ देले रहे। सोमवार के दिन रहे। शिवरात्रि के भोर। रामरेखा बो कहली काकी से कि, 'त मलिकाइन! रउआ घरे लछिमी, गौरी जी आइल बाड़ी। मैदा के लोइया नियर गोर आ बेलना नियर गुटमुटार बाड़ी बबुनी। आँखि जुड़ा गइल।'

केहू कुछु ना बोलल। बाकिर खाली कइसे भेजल जाउ! फेरू मइया किहें चाची गइली। कहली, 'ए मइया जी! सउरी के कुल्ही हो गइल। रामरेखा बो खड़ा बाड़ी। खाली कइसे भेजाउ?'

मइया अमनख स्वर में बोलली, 'कवनो बेटा नइखे भइल। जा एगो रुपया आ पाँच पहथ मोटअनजा दे दऽ।'

ओतना पाइ के रामरेखा बो असीसे लगली। जात–जात कहि गइली, 'मलिकाइन किकिर जनि करब। हम दूनू बेरा आइ के बहुरिया के सम्हार लेब।'

मइया गंजाजी नहाए जाए के पहिले, कहत गइली कि, 'बबुनी जाइ के काका के खबर जना दे।'

रेशमा दउरत गइली आ काका से कहली, 'काका जी! हमरा छोट बहिन भइल बिआ।'

काका कहले, 'भउजी कइसन बाड़ी? ठीक बाड़ी नूं?'

रेशमा, 'हँ' कहि के चलि अइली। अब उनुको बुझाइल कि बेटी भइल बुला ठीक नइखे। सभके मुँह उतरि गइल बा। अइसन का हो गइल? केहू खुश काहें नइखे?' तनिकी एने–ओने करत हाथ–मुँह धोवली। काका सानी–पानी कइले। तनिकिये देर में काका के खरमेटाव करे के तश्तरी में तिलवा देके काकी बहर दुआर पर भेज दिहली। घर के कुल्ही का ओइसहीं होखे लागल बाकिर उछाह ना लउकल बस रेशमा कबो खुश होखसु, कबो काकी–चाची के मुँह देखसु। उनुका के सउरी में जाए ना दिआइल। तनी एने–ओने घूमि के ऊ काकी के लगे बइठि गइली। ऊ आँगन लीपि के अब माठा महत रहली। गँवें से पुछली, 'छोटकी माई! हम सउरी में काहें ना जाईं?' काकी कहली कि 'छूत लागी। माई–आ बुचिया नहइले नइखे लोग। बहरी के हवा–पानी नुकसान करी।'

रेशमा तनी सोच के फेरू कहली, 'ए छोटकी माई! मइया आ सभे काहें उदास बा? लइकी ना आवे के चाहीं?'

काकी तनिकी हाथ रोकली, फेरू रेशमा के ओर देखि के कहली, 'ना बेटी! मइया त एसे उदास बाड़ी कि पाँच गो बेटा भइल। दू जना ना रहलन। तब ई बुच्ची भइली। ना तऽ लइकी तऽ बड़ा भागि से आवेली।'

रेशमा काकी से माठा लेके पिअली आ सउरी के ओर अइली। गँवें से केंवाड़ी खोलल, कहली, 'माई! तनी बुचिया के देखाइ दे।'

माई एकटक बुचिया के देखत रहे। बार सुहरावत रहे। गरदन तक करिआ बार रहे। दप् गोर बुचिया। माई उठा के रेशमा के देखवलस। रेशमा के मन भइल कि खूब नाचो। बाकिर माई के आँखि उदास आ गील लागल। रेशमा से रहि ना गइल। आपन धोती सम्हारत ऊ बाबा के लगे अइली। कहली, 'बाबा! बुचिया बड़ा सुन्नर बिआ।'

बाबा ओकरा पीठि पर हाथ फेर के कहलन, 'ई भगवान जी के वरदान बा। सुन्नर त तहनी सभे बाड़ू। बाकिर बबुआ के जिम्मेदारी बढ़ि गइल।'

रेशमा के ओही घरी बुझाइल कि ऊ सेयान हो गइली। उनुका इयाद पहल कि बाबूजी के इलाहाबाद जात समय बाबा कहले रहलन, 'बबुआ! तनी धियान रखिहऽ। बबुनी सेयान भइल, ओकर कन्यादान करे के बा। बड़ परिवार बा समय से सभके पार लगावे के बा। कऽई जानी बा लोग।'

बाबूजी, 'हँ' कहि के गँउवा वाला बाबा के गोड़ लगलन आ चलि गइलन। रेशमा सोच में परि गइली। मन भइल कि जाके माई के कोरा में समा जाईं। बुचिया के खूब दुलारीं। बाकिर कुछु कइसे करसु। जबसे बहिनिया वाला पाहुन के ना रहला के खबर आइल, माई टिकुली साटल छोड़ि दिहलस। खाली सेनुरे लगावे आँखि में काजरो ना लगावे। छोटका बबुआ गइल तबसे ओकरा ओठ पर केहू हँसी ना देखल। मइया समुझवली ाकिर ओकरा जइसे काठया मारि गइल होखे। खाली काम करे आ अपना घर में ओठँघि जाए। आजु ऊ बुचिया के कइसे देखति रहलिहा। रेशमा ना बूझि पवली। ऊ सँकाइल रहली काहें कि चाचियो के गोड़ भारी रहल। चाचीओ चुपा गइल रहली। मइया के बात उनुका लागि गइल रहे। फगुआ के बिहाने चाची के बबुआ भइल। बुझाइल पूरा घर मगके लागल। सभले ढेर चाचा उमगे लगले। रेशमा देखली बबुआ एकदम साँवर चचे नियर रहे। तबो सभ खुश रहे। रेशमा कहली, 'बबुआ तऽ करिआ बा, हमार बुचिया गोर बिआ।'

चाचा कहलन, 'ई गोपालजी हउअन। देखेने ना, कृष्ण जी साँवर रहले। घिउ के लड्डू टेढ़ो भला।'

चाचा के बात रेशमा के काँट नीयर गड़ल। ऊ कुछु ना बोलली। आइ के बुचिया के दुलारे लगली। माई सउरी से निकलि आइल रहे। ओकर पिउरकी गोराई अवरू चमके लागल रहे। बुचिया के कोरा लेतऽ जइसे कतो अवरू चलि जात रहे। ओकरा के घामा ना सुतावे। मइया देखसु बाकिर ऊ कवनो लइकन के कोरा ना लेसु, ना तेल ना अबटन। माइए कुल्ही करे।

बाबूजी गरमी के छुट्टी में अइले। रेशमा के बुझाइल कि घर भरि गइल। बाबूजी के मीठा–पानी देत कहली, 'बाबूजी! बुचिया बड़ा गोर आ सुन्नर बिआ, ले आईं?' बाबूजी ना में मूड़ी हिलवले। रेशमा के बुझाइल कि बुला बाबुओ जी खुश नइखन। ऊ चुपचाप खाली–तश्तरी–गिलास लेके चलि अइली।

बाबूजी अइला के बाद चैन से ना बइठलन। रोज अनगुतहा कुछ मुँ में डालसु ना, निकल जासु। कबो दुपहरिया में आवसु, कबो साँझ होत। धूरि से जूता भरल। मुँह झुराइल, थाकल। काका अपना खेत में लागल रहसु आ चाचा अपना इस्कूल में। मइया बाबूजी के मुँह दुखसु। बाबूजी खात बेरा कुछ बोलसु ना। मइया बेना डोलावत रहसु आ घर बाहर के समाचार बतावत रहसु। पनरह दिन के बाद एक दिन बाबूजी कहलन कि नगवाँ के पांडेय परिवार में एगो लइका बा। घर परिवार रईस बाड़न स, लइका नव में पढ़ता। ओकर बाप गार्ड हउवन। तेयार हो गइल बा लोग। आठवें दिन बिआह के दिन बा। काका कहसु तऽ बरइछा दे आईं। मइया कहली कि 'इहनियो लोग देखि आवसु। तेयारी हो जाई, तूँ चिंता जनि करऽ।'

दोसरा दिन काका जा के गाँव–घर देखि अइले, अड़ोस–पड़ोस से पूछताछ कइ अइले, सभे बड़ाई कइल। गार्ड साहब के बात–बेवहार के रइसी बतावल लोग। लइका के तऽ ना देखि पवले, बाकिर अवरू कुल्ही मन जोग भेंटाइली तऽ जनेउ आ रूपया देके बरइछो कऽ अइले। काहें कि डर रहे कि तिलकहरू ढेर आवता लोग। कहीं लइका हाथ से मत निकल जाउ। तीसरा दिन तिलक के धराइल। बाबू जी, बाबू, काका, चाचा, नूनू, दूनो भाई, आपन एगो चाचा के बेटा नरबदेसर गइल लोग। बड़ा आवभगत भइल। बाकिर तिलक लोटा पर चढ़ावे के भइल, काहें कि वर अपना बहिन लोगन के ले आवे गइल रहे। सभे लइका के फोटो देखल। घर–परिवार वर में कुछु काटे लायक ना रहे। खुश होके सभे आइल। पंडित–नाऊ सँग पटिदारी के लोग। सभे खुस।

तिलक चढ़ाइ के अइला पर कूदन पांडे के बड़की बेटी सुनैना के विदा करावे खातिर भेज दीहल गइल। तइयारी जोर–सोर से भइल। परिवार बड़ा सम्मानित आ धनी रहल। ससुर कमासुत बहरवाँसू रहले। बड़की बहिन जी अइली तऽ माई से लिपट के रोवे लगली। माई उनुका के ओह वेश में देखि के बेहोश हो गइल। मइया आ छोटकी माई ओकरा के गिरला से सम्हारल लोग। तनिकी देर में माई आँखि खोल दिहलस। चारो ओर देखलस। बहिन जी, बुचिया के कोरा में लेके खेलावत रहली। उनुका गोर चिक्कन गुलाबी मुँह पर सुरुज के किरण पड़त रहल। बुझात रहल जइसे कमल खिलल होखो। माई उठि बइठल। बहिन जी बड़ा मनसि के माई के देखली। माई कुछु बोललि ना। चुहानी जाइ के बहिन जी के मुँह मीठ करे के बुनिया के लड्डू ले आइल। बहिन जी पानी पिअसु आ बुचिया के खेलावसु। अतने देर में ऊ अपना के संयमित कऽ लेले रहली। सगुन उठल तऽ आँगन गँवनहरी मेहरारून से भरि गइल, गीत माँगर होखे लागल आ रेशमा के मन में भविष्य के जीवन के लेके भय–आशंका गहिराये लागल। बहिन जी के देखि के का जाने का–का सोचली। बहिन जी तऽ तीन तक पढ़ल रहली, बाकिर रेशमा के मन तऽ पढ़ाई में तनिको ना लागे, खाली जोरि गाँठि के कवनो तरह दू अच्छर चिट्ठी लिख लेसु।

बिआह में एक दिन रहि गइल रहे। कुल्ही तेयारी हो गइल रहे। वर पक्ष से सुन्दर लड़की के अलावा अवरू कुछ ना मँगाइल रहे। काहें कि दुबहड़ के बड़का घर के नाँव दूर–दूर तक रहे। बरिआत आ गइल। गाजा–बाजा, नाच, घुड़दौड़ से गाँव गहगहा गइल। द्वारचार भइल। तनिकी देर में रेशमा के सखी सिमोता अइली। पुछला पर कहली, "अवरू कुल्ह तऽ बड़ा नीमन बा। बाकिर सखी के पाहुन के दाँत तनी बड़ बा।" सभ केहू पटा गइल। का जाने कइसे माई सुनि लिहलस। ओकर मुँह कठोर हो गइल। बुझाइल कि कुछु सोचतिया। ऊ रेशमा के सगुनइती कमरा में गइल आ केवाड़ी भीतर से बन्द कइ लिहलस। सीमोता जाके मइया से कहि दिहली। मइया अइली केवाड़ी खेलावे लगली। बाकिर कवनो आवाज ना आइल। डँटबो कइली। केवाड़ी भड़भड़वली, ओने से साँसों ना सुनाइल। मइया बाबूजी के बोलावे गइली। सीमोता। इसारा से बोलवली आ उनुका से बीच में कुल्ही सूचनो दे दिहली। बर के बारे में भी बता दिहली। परिछन वर

के होखे के समय निगचात रहे। बाबूजी धर्म संकट में। जब से इलाहाबाद से आइल रहले, माई से बतिआवे के कहो सोझो ना गइल रहले आ कुल्ही काम होत जात रहे। दरवाजा पर आके तनी खँखराये। सीमोतो कहली, "ए चाची दरवाजा खोलऽ। चाचा आइल बाड़न।" कवनो आवाज ना। बाबूजी कहलन, "दरवाजा खोल मलिकाइन।"

भीतर से बड़ा साफ सधल आवाज आइल, "अइसन लइका से बिआह ना होई। हम अपना फूल अइसन सुन्नर बेटी के अनमेल बिआह ना होखे देब। बर के हम ना परिछब। बिना बर देखल लोटा पर तिलक काहें चढ़ल?"

बाबूजी सँकेता परि गइलन। कहलन, "तनी दरवाजा खोलऽ। हम कुल्ही बतावतानी। आपन गलती मानतानी। सोर हो जाई। इज्जत के सवाल बा। जदि ना मनबू तऽ बिआह ना होई। हम इलाहाबाद चलि जाइब।"

दरवाजा खुलल। बाबूजी भीतर अइले। घर–परिवार, हित–नात सभके बारे में बतवले। "लइका हँसेला, तबे दाँत बहरिआला। कवनो बाउर लतो नइखे। सामरथी मिसिर हमार आपन हीत हवें। ऊहे बीच में बाड़े। कुछ ऊँच–नीच होई तऽ सम्हरिहें। लइका के उमिरि–लइकी के लायक बा। तीन बहिन के बीच में अकेला बा। कवनो कमी ना होई। रूपे कुल्ह ना होला। तहरा से पहिले ना बतिअवनी। तहार हालत आ बबुनी के देखि के साहस ना भइल। ई हमार गलती भइल। अब आगा घर के मान तहरा हाथ में बा। बिना तहरा सहारा के हम का कइ सकीलें।" कहत–कहत बाबूजी लोर पोंछि लिहले। माइयो के से लोर ढरत रहल। रेशमा के छाती से लगवले भरल आवाजा में कहलस, "जाईं। हम तेयार बानी।" बाबूजी थथम्ह गइले, फेरू कहले, "अब एगो बात तहरा से अवरू कहतानी कि इनकर कन्यादान सुरुजदेव करिहें। हम ना करब काहें कि बड़की बबुनी के कइनी। ऊ ना सहल। काका के कन्यादान के जिद रहल, एसे ई बिआह जल्दी करऽ तानी। हमरो मन ढेर खुलत नइखे। कहत बाबूजी बहरा चलि गइले। फेरू तऽ कुल्ही रीति रिवाज भइल बाकिर जइसे एगो घन बादर घोरियात रहल।"

वर कोहबर में आइल कुल्ही पूजा भइल। बारी आइल बर के कोरा में रीति के अनुसार बेटा देबे के। जहाँ रूपे कुल्ह ना होला। पूछल जाला कि, "बेटा! कोरा में का खेलावऽ तारऽ?" तऽ बर कही कि 'बेटा'। एही जू से गृहस्थ जीवन के सुखद भविष्य के सपना बिनाला। पुरुष प्रधान समाज में पुरुष–बेटा के महत्व के बीजारोपण हो जाला। ऊ सवाँग होला। दूनों के जीवन के नाव खेवे वाला, संकट से पार लगावे वाला। सहयोग पुष्ट आधार होला। पाहुन आ रेशमा बइठल लोग। लइका कोरा देबे के मँगावल गइल। गोपाल जी रहबे कइलन। सीमोता चाची से कहली तऽ चाची कहली कि, "बबुआ के बोखार हो गइल बा। कइसे ले आईं? करऽत–करऽत कइसहूँ सुतलन। उठवला पर जागि जइहन।"

अब भइल कि एक घरी कहाँ से लइका ले आइल जाउ? जोहाए लागल। तऽले माई से ना रहाइल। बुचिया के ले आइ पाहुन के कोरा में दे दिहलस। सभ अचकचा गइल। मइया के बोली कठोर हो गइल। कहली, "बबुआ बो! ई का कइलू, कहीं बेटी दिआले? जिनिगी में पहिलहीं अशुभ गइलू। काँट बो दिहलू।" फेरू वर से माई कहली, "ए बबुआ! कहिहऽ कि बेटा खेलावतानी।" बर तऽ ओइसहीं एह वातावरण में असहज हो गइल रहे।

माई घूघे में से बोललि कि, "ए मइया जी! बेटा–बेटी बरोबर होला, एके कोख से दूनू जनमेला। हमार बेटिए बेटा हऽ। ए बाबू! तूँ साँच बोलिहऽ। कहऽ कि लक्ष्मी आ सुरसती हमरा कोरा में खेलऽ तारी, ई बेटी ना देवी हई। हमार कुल लक्ष्मी हई। आपन गिरहस्ती साँचे से शुरू करऽ।" पाहुन ऊहे कहलन। रेशमा भितरे–भीतर खूब खुश भइली। बड़की बबुनी माई के पीछे से अँकवारी में ले लिहली। मइया, माई के एकटक देखत रहली। कुछु कहली ना। आजु माई पहिली बेर सभके सोझा खुल के बोलल रहल।

समारोह पूरा भइल, रेशमा के विदाई हो गइल। बाबू जी के, बाबा के कुल्ही समाचार मिलल त बाबूजी कुछु ना बोललन। बाकिर बाबा भीतर अइलन। माई उनुकर गोड़ छुअलस तऽ बाबा उनुका माथे हाथ देके कहलन, "बबुआ बो! एह घर के असली कुलदेवी आ लक्ष्मी तूँ ही हऊ। आजु हमरा ले भाग्यशाली एह गाँव में के बा? ●●

❑ 142, बाघम्बरी गृहयोजना,
भरद्वाजपुरम्, प्रयाग–211006

प्लास्टिक-प्रेम

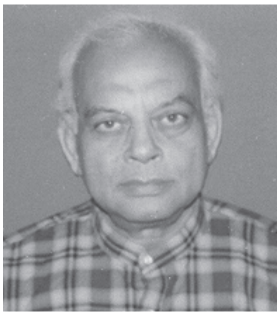

राजगुप्त

बारी टोला के गिरहस्त बरमेसर के गाइ–गोरू पाले पोसे के बड़ा सवख रहे। गाइ–गोरू के जहाँ मेला–ठेला, लागे उहवाँ सतुआ–पिसान बान्हि के चोहँपि जासु। एक से एक अलबेला गाइ–बाछी कीनि के लिआवें आ खियापिआ के मोनाफा कमा के बेचि देसु। नसल पहिचाने में बड़ा फरहर रहले। एह पारी ददरी के मेला में से हरियानवी नसल के बाछी कीनि के घरे लिअइले। बाछी साँचों बड़ा सुघ्घर आ सोझिया सोभाव के रहे। ना मूड़ी झाँटे ना इचिको हूँफे। तनिको मरखाहि ना रहे। टोला के लड़िका ओकरा पीठि पर लोटे पोटे। खेले खेल में कवनो ना कवनो लड़िका ओकरा कान नाक में सींकि गड़ा दें सऽ तब्बो इचिको तिलमिलाव ना। असली बाछी रहे। एकदम्म उज्जर सफेर सुन्नर, करिया करिया कोइलासी आँखि, भुइँया ले सोहरत लमहर करिया पोंछि। हरियाना नसल के ई बाछी टोला भर के पसन्द रहे। जेही ना सेही टोकि देव 'बरमेसर बड़ा कमाल कइले बाड़ऽ एह पारी। अइसन भगमान बाछी भृगु बाबा तोहके दे देले हऽ। दूज के चान बिया बाछी।'

टोकला के कारन, नजर लागे का डरे बरमेसर कौड़ी आ पत्थल के गुरिया ओकरा गर में पहिरा दिहले। भालू के बार करिया धागा में बान्हि के ओकरा गोड़ में बान्हि दिहले। अतवार–मंगर के ओकरा लगे लोहबानो जरा देसु जेमे केहु के नजर ना लागो। बाछी के एतना सेवा कइले कि बाछी के देंहि दमके लागल, उनकर दुआरि ले अँजोर हो गइल। संगमरमर अस उज्जर सोझिया गाइ। डिटाल साबुन से नहवावसु, साफ तौलिया के रगड़ि–रगड़ि ओकर देहि पोंछसु। ओकरी गोड़ में गोबर जनिं लागो एतना सफाई रखसु। खड़हरा आ कूँचा उनकर हमेसा उनका हाथे में रहत रहे। चानी पर आ खुर में हमेसा कड़ुआ तेल घँसल करसु। हरिहरी के साथे मकई के भात चोकर, उसिनल मिलौनी तरकारी आ अउरी का–का ना खिआ–पिआ के बाछी के गदरा देले रहले कि आन के डाह होखे। कुछ दिन बितला का बाद बाछी कूदे–आ मकनाये लागल। छान–पगहा तुड़ावे के जोर करे लागल। बुझाउ कि पगहा तुड़ाइ के भागि जाई। बरमेसर भाँपि गइले। जानि गइले कि बाछी उठल बिया। ब्लाक पर ले जाके बढ़िया नसल का साँड़ से गर्भाधान करवले। गाभिन भइला के बाद जस–जस दिन बीते लागल बाछी के रंग रूप खिले लागल। अपना सेवा पर बरमेसर बाछी के देखि के बड़ी खुश रहसु। आन के नजर बचावे खातिर बाछी के घर का भीतर बान्हे लगले। उनकर बेकति खुश भइली त बाछी के गोड़ में पायल पहिरा दिहली। टोला–महल्ला के लोग बरमेसर के हँसी उड़ावे लागल। बाकि हँसी उड़ावे वाला गाइ के मनबो करें। जूठ काँठ लिआ के चुप्पे–चोरी खिआ पीया देव। बरमेसर बरिजस बाकिर कहू माने ना। जे गाइ–गोरू के प्रेम करेला, ओकरा से केहू झगड़ा त करी ना। हारि–पाछि, बरमेसर गाइ के नाद की लगे बड़–बड़ अच्छर में लिखवा दिहले रहले कि नाद में कवनो खाये–पीये वाला चीजु मत डालीं। ओकरा बादो केहू ना चेते। लड़िका लोग लकठो, बतासा, बर्फी भूजा, रोटी ओके खिआइ जाव।

दिन पूरा भइला के बाद गाइ अपनी रंग–रूप लेखा बाछी बिआइल। बरमेसर के खुशी के ठेकान ना मन माँगल मुराद जइसे पूरा भइल होखे। थान बरमेसर के पगड़ी अस गोल। छेमी गाजर के ललाई लिहले लालमोहन मिठाई। खुश बरमेसर फेनुस दुहे बाल्टी ले के गाइ की लगे गइले। छेमी के हाथ से छूवते कहीं कि दूध के धार फूटि परल। बुझाइल जइसे कल खुलि गइल होखे। मिनटों में बाल्टी भरि गइल। अनासो जइसे बिजुली बरि गइल। केतना गाइ दुहले होइहें, बाकिर एह गाइ के तरही। सभकर कान काटि दिहलसि ई गाइ। उमेद से जेयादा दूध। परिवार के भरि सीकम दूधो मिलो आ आधा से अधिका बेचाइयो जाव।

महीना दर महीना कई महीना बीति गइल। बरमेसर सेवा टहल भा खियावल–पिअवला में कहीं कमी ना कइले। अउरी बढ़ि चढ़ि के खिआवसु पिआवसु। टोला परोसा के लोग ओकरा के कुछ न कुछ चटावे में कवनो कोताही ना करे।

पाँच महीना बीतल कि एक दिन गाइ के पेट अचानके फूलि गइल। पेट फुलला आ दरद के कारन गाइ, नादे की लगे बइठि के गोड़ फइला दिहलसि बरमेसर के कटले खून ना। उनकर मेहरारू गाइ के हालत देखि पूका–फारि रोवे लगली। आइहो दादा, ए इदब इ का कइलऽ? गाँव के चउधुरी बोलावल गइले। देशी–विदेशी दवाई कइले। ओझइती सोखइती करवले। लाखन दवाई के बादो गाइ उठल ना। शहर के अस्पताले में बरमेसर के हीत डाक्टर रहले। उनका के सनेसा गइल। डाक्टर साहब अपना कम्पाउन्डर के साथे जीप में भरि दवाई लेके अइले। बरमेसर डाक्टर साहब के गोड़ छानि लिहले। "कवनो तरह गाइ के जान बचा लीं। पइसा के चिन्ता जनि करीं।" डाक्टर साहब कहले, "फूफा जी पइसा से केहू के जान बाँचे के रहित, त आदमी बेमरिहा के पइसा से तउलि देइत। रउरा घबड़ाई मति, हम भरसक उठा ना राखबि।"

अभी बात चलत रहे कि अस्सी बरिस के एगो बूढ़ चउधरी अइले। कहले कि "बाँस आ बल्ली मँगावऽ। बाँस पेसि के उठावे के परी।गाइ बाउर–बेजाय ले ले बिया, एह से एकर पेट फूलि गइल बा। बाँस पर टाँगि के उठा लिहल जाई त फेट में भरल गैस निकल जाई।" चउधुरी के बाति के काटत डाक्टर बाबू कहले, "एह हालि में इचिको गाइ के पेरल जाई त ओकरा जान पर बनि आई।" एह हालि में डाक्टर साहब अपना कम्पाउन्डरन के साथे गाइ के गतरे गतर देखले। बड़ी कोसिस कइले कि गाई के गोड़ सीधा होके मुड़ि तना गइल रहे। पेट में डाक्टर साहब के अँगुरी तकले ना घुसे। पेटवो एतना कड़ेर हो गइल रहे कि आँखियो तानि देले रहे। बुझाव कि ओकर आँखि पत्थल हो गइल बा, पुतरियो ना हिले डोले। मुँह बाइ के दाँत चिआरि के नाक से अजब–गजब साँसि लेत रहे। चउधुरी कहले नीके से भर हीक छटपटाइत त हो सकत रहल कि उठि के बइठि जाइत। बाकिर एकदम से बेबस, लागत बिया। पायखाना पेशाब त फजिरहीं से बन्द हो गइल रहे।

साँझ हो गइल। देखवइया लोग के भीड़ि जुटि गइल। सभका मुँहें हवाई उड़त रहे। डाक्टर साहब बड़ी देर तकले सोचला–समझला का बाद कम्पाउन्डरन से राय–सलाह कइले। ओकरा बाद भरि हाथ के दस्ताना पहिर के गाइ के पेट में हाथ डालि दिहले। टोइ–टाई के हाथ बहरी निकलले। मुठ्ठी भर चबाइल प्लास्टिक। प्लास्टिक देखि गाँव के लोगन के मुँहें बवा गइल। डाक्टर साहेब कहले, "गाइ के पेट प्लास्टिक से भरल बा। आपरेशन करे के पड़ी।" आपरेशन के नाँव सुनि पहिले त बरमेसर चिहइले, बाकिर अपना गाइ के दशा देखि के कहले, "जवन उचित समझीं, करीं। कम्पाउन्डर बड़ा चलविधुर रहले। छने में अपना हिसाब से गाय के गोड़–मूड़ी बन्हले छनले। दसे पन्दरह मिनट के आपरेशन क के गाय के पेट से पाँच किलो प्लास्टिक निकालि दिहले।" बरमेसर चिहइले कि हमरा गाइ के लोग चोरी छुपे का का खिअवले रहल हा।

गाइ के पेट के आपरेशन उहवाँ केहू ना देखले रहे। आपरेशन के नाँव सुनि सज्जी गाँव टूटि पड़ल रहे। का बूढ़, का जवान, का लइकी, का मेहरारू। मेहरारू त आपरेशन देखि के अपना आँचर से मुँह तोपि लेले रहली सऽ। साँसि रोकि के सभे एकटक ओनिये देखते रहे। बबलू डबलू से कहलसि। तेंही जिलेबी प्लास्टिक सहिते ओकरी नादे में डालि देत रहले हा। उबलू कहलसि, "हम त शामू के देखा–देखी कइलीं। समुआँ रोज घर के जूठ काँठ प्लास्टिके में लियाइ के, सभकर नजर बचा के नादे में डाल देत रहे।"

गाइ के पेट सियाइल, सूई लागल, चीरा वाला टाँका पर टेप सटाइल त गाइ के धीरे–धीरे साँस चले लागल। डाक्टर कहले, "अब ई बाँच जाई। एके दू दिन में खड़ा होखे आ खाये–पिये लागी।"

चउधरी कहले, "गाँव के गाइ–गोरू बचावे के बा त प्लास्टिक के छोड़े के परी।" ●●

❑ राज साड़ी घर, चौक कटरा, बलिया।

विश्व भोजपुरी सम्मेलन, वाराणसी के राष्ट्रीय अधिवेशन
(दिनांक 24 फरवरी 2019)

सम्मेलन में, ''पाती'' पत्रिका के यशस्वी सम्पादक आ भोजपुरी के सिद्ध रचनाकार डा० अशोक द्विवेदी के ''सेतु सम्मान'' से सम्मानित कइल गइल ।।

जमशेदपुर भोज० साहित्य परिषद् तुलसी भवन (विष्टूपुर) में डॉ० रसिकबिहारी ओझा ''निर्भीक'' जयंती (21 मई 2019) मनवलस

विश्व भोजपुरी सम्मेलन बलिया के 11 वाँ अधिवेशन आ पाती रचना-मंच के ''अक्षर-सम्मान'' आयोजन
(बापू भवन, टाउन हॉल, बलिया, 7 अप्रैल 2019) के कुछ झलकी

भोजपुरी दिशा बोध के वैचारिक पत्रिका
पाती
की ओर से आयोजित
अक्षर सम्मान- समारोह
'पाती' कला-मंच
(स्वस्थ लोकरंजन एवम् भाषा के मान-सम्मान के लिए
समर्पित नव गायक-कलाकारों का सांस्कृतिक-मंच)
भोजपुरी के रचनात्मक आन्दोलन
विश्व भोजपुरी सम्मेलन
बलिया इकाई
एवं भोजपुरी दिशाबोध के पत्रिका
"पाती"
'पाती' कला-मंच (गायन-वादन)

भोजपुरी दिशा बोध के वैचारिक पत्रिका

भोजपुरी दिशा बोध के वैचारिक पत्रिका
पाती

भोजपुरी दिशा बोध के वैचारिक पत्रिका
पाती

दोबा के कोंपल

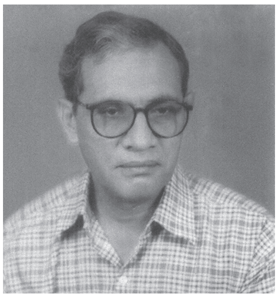

✍ कृष्ण कुमार

ओह दिन मंगर रहे। भोरहरिआ हो चलल रहे। अंदाजन पाँच बजत रहे। झुरमुट के ओट में चिरई–चुरुंग चहकत रही। जाड़ा पतरा चलल रहे। बेदानंद के बेचैनी बढ़ल जात रहे। अबले घरनी के साथे ऊ डाक्टरनी के क्लिनिक में पहुँचि आइल रहन। बड़ा उधामत कइला के बाद, ओही भोरहरिया में जनमली 'मँगरी'। आरा–पटना एक क देबे के परल। जँचला के बाद आरा के डॉक्टरनी बतवली, "अबहीं देरी बा। बचेदानी के मुँह पूरा नइखे खुलल। ना होखे त तनी पटना जाके कवनो लेडी डॉक्टरनी से देखवा लीं सभे...।"

बेदानंद सास–साला के साथे एम्बुलेंस पर घरनी के लदले पटना पहुँचले। बाकिर ओहिजो उहे हाल। ढाक के तीन गो पतई। फेरू चुहिया के चुहिया। आरा लवटि अइलें। घरनी के प्रसव–वेदना बढ़ल जात रहे। आखिरी दाँव में आरा में शंख बाजल। डॉक्टरनी के आवे से पहिलहीं नर्स लोग तूल–तवालत क के जनमा देहली लोग मँगरी के। नॉरमल डिलेभरी भइल रहे। पैदाइस के ठीक चार घंटा बाद माई के गोदी में सुतले–सुतल अपना घरे आ गइली मँगरी...। घर के दोमुँहा में पइसते खुशहाली के जगहा खुसुर–फुसुर चालू हो गइल। टोन मराये लागल, "धरछना के बेटी जनमल बिया। धरती एक बीता नीचे धँसि गइली। अब आगा का देई, दईब जानसु। घर उजारे खातिर आ गइली, नया महाजन...।"

समय का रहे आ का हो गइल? हमनिन के नौ भाई–बहीन रहलीं जा। हमार जनम छव बहिनिन के बाद भइल रहे। संयुक्ते परिवार रहे, बाकिर माई के उघटा–पुरान तोरिओ भरना। डेढ़िया–सवाई बतकही के सवाले ना उठल। सभे अगरा–अगरा के सोहर गावे में मस्त। हमार माई कहत रही, "मेहरारून के प्रसव–वेदना के पीड़ा सैकड़न बिच्छिन के डंक मारला से भी अधिका होला....।" लोग कहेला, "बाँझि का जानी परसवनी के पीड़ा। आ बिच्छी बस एके बिआन बिआ के 'जै हरि' हो जाली....।"

दरद से झकोराइल आ ओठ प फेंफरी परल मँगरी के माई से दूगो निम्मन मीठ बतकही करे वाला आपन सवाँग छोड़ि केहु ना। सभे बचन के दलिदर हो गइल। केहु ई बात ना कहल, "जाये द, कवनो बात नइखे। बेटा–बेटी में कवनो फरक ना हऽ। पहिलौंठी के बात रहल हा। जान बाँचि गइल, इहे बड़ बात बा। बेटा चाहे बेटी, कुछुओ भगवाने देलें नू। बाँझ के टीका लिलार से मिटकल। उहो बिना ऑपरेसन के। तू एकबाली मतारी बाड़ू....।"

बस उहे पुरनकी कहाउत के पोंछि धइले पूरा परिवार झुलुहा झुलत रहे, "चिरई के जा जाय आ लइकन के खेलावना....।" मतारी–बाप के छोड़ि घर के सभे लोग अरुआइल पीठा लेखा मुँह लटकवले रहे। टुकुर–टुकुर बाबा के मुँह निहारत रही मँगरी। छोटी–मुटि मँगरी बाबा के गोदी में समा गइल चाहत रही। बाकिर

पत्थर दिल बाबा तोरिओ भ ना पसिजलें। फानी दुनिआ मँगरी के बड़ा अकरावन बुझाइल। भगवान खुद अपना हाथे संगमरमर से उनका के तरसले रहन।

बराढ़ी गाँव के बेतुका सरह। बेटी के जनमला प चार दिन आ बेटा के जनमला पाँच दिन तक ले ओकरा मतारी के हरदी दूध पिआवल जात रहे। बेटिन खातिर छव दिनन प छठिहार आ बेटन खातिर बारह दिनन पर बरही। छठिहार आ बरही में भी दू रंग के रसम होत रहे। छठिहार के दिने बेटिन खातिर कटहर के पत्ता के पाँच गो दोनी बना के ओह में खीर–पूड़ी धइके छठी पुजात रहे। ओइजे बेटन के बरही पूजे खातिर आम के पत्ता के छव गो दोनी बनावल जात रहे। आ ऊ खीर–पूड़ी आ दहीबारा से भरात रहे। पाँच गो दोनी से घरे बरही पुजात रहे आ एगो दोनी गाँव के बाहर बनल शिवामाई के मंदिर में चढ़ावल जात रहे। बेदानंद के पहिलौंठी बेटी भइल रही। बेटी के छठिहार पुजाई उनका बड़ा अखड़ल। लगलाहे भइया के बेटा के बरही पुजाई ऊ देखले रहन। अपना गाँव के रवायत उनका के भितरे से झकझोर देलस। संयुक्त परिवार के बात रहे। एह सामाजिक कुरीतिअन के सोझा घुटना टेकला के अलावा उनका दोसर राह ना लउकत रहे। आदर्श आ व्यवहार के बीचे एगो गहिरे गड़हा। उनका लउकत रहे। उनका चेहरा प तनाव आ माथा प के सिलवट के घुरची साफा झलकत रहे। बाकिर बेदानंद लाचार रहन। जबान प ताला लगवले टुकु–टुकु ताक कसहूँ बेटी के छठिहार के रसम ऊ पार लगवलें। समय के साथे गँवे–गँवे ऊ तीखापन उनका भुलाये लागल आ समय–चक्र आगा के ओरे आपन रोख कइलस....।

बेटी के बाढ़ि जगजाहिर बा। बीतत समय के साथे मँगरी बड़ होत गइली। छोट–मोट घर के काम ओरिआवे लगली। सभका टहल–टिकोरा में अझुरइली। तबो जेकरा के देखऽ सभे बाइसे पसेरी। तनिको ओनइस–बीस भइला प केहू आँखि गुंड़ेरे, केहु डाँटे, केहु फटकारे। बाकिर मँगरी सावधान एके बतकही प चेत जात रही। बहुते समझदार लइकी रही। रोजे–रोज माई के छोड़ि पूरा परिवार ताना मारे, "तें कपार के बोझा बाड़े। बेटी पराया धन होली। काहे खातिर पढ़बे? जज–कलक्टर बने के मन बनवले बाड़े का? चुपचाप घर के काम में अझुराइल रहु। आखिर दाँव में त तोरा दोसरे के घरे नु जायेके बा....।"

मँगरी समझि ना पावत रही कि ई लोग आपन हँ, कि पराया हवें। एकरा बावजूद परिवार के लोग के विरोध आ अपमान सहत मँगरी बढ़त जात रहली। अबले मँगरी पढ़े–लिखे जोग हो गइल रही। बेदानंद अपना गाँव से दूर शहर में नोकरी करत रहन। घरनी–बेटी गाँव प बाबूजी–माई आ भाई–भउजाई के साथे रहत रही। सभका आपन बाल–बच्चा प्यारा होलें। गँव लगा के महीना–डेढ़ महीना प कसहूँ बेदानंद गाँवे आ जात रहन। घरनी–बेटी के साथे परिवार के लोग के बात–व्यवहार देखि उनकर मन तिताइ जात रहे। कबो–कबो उनका मन में आवे कि घरनी–बेटी के साथे शहर में सेट करीं। बेटी पढ़े जोग हो गइल बिया। बाकिर पुतवो मीठ, सवँगवो मीठ के अझुरहटि में अझुरा जात रहन। एक ओरे घरनी–बेटी, त दोसरा ओरे बाबूजी–माई। ओलार ना ले पवलें बेदानंद। बिछिला गइलें। आखिर दाव में उजबुजा के बेटी के नामांकन गाँवें के स्कूल में करवले। बेटी मँगरी से मनस्विनी हो गइली। होनहार बिरवान के होत चिकने पात। पढ़ाई में अव्वल। जतना सुन्नर, ओतने तेज। अपना क्लास के नम्बर वन लइकी। घर–परिवार के बताबरण जतने सकेताह, स्कूल के ओतने फैलगर। स्कूल में पसनगर खाद–पानी भेंटाइल मनस्विनी के। दिन दोगिना, रात चउगुना उजिआये लगली।

लोग कहेला, "बैद के दवाई, नमरी लड़ाई आ सरकारी स्कूल के पढ़ाई निम्मन ना होला, ओकर बदलइया अंग्रेजी दवाई, फौजदारी लड़ाई आ कनवेन्ट के पढ़ाई के दोसर सानी नइखे। एह सभ बात के धसोरत आगा बढ़त गइली मनस्विनी। जइसे पत्थ के बीचे तनिका खाली जगह से दूबि आ कुटज उपजि आवेला।" कुचइला के ओकरा इचिको फेरा ना होला। कुछ ओइसने कइली मनस्विनी। कहे खातिर ऊ सरकारी स्कूल रहे, पढ़ाई के ममिला में शहरन के निम्मन–निम्मन कान्वेन्ट के ऊ स्कूल तड़िया देले रहे। ओहिजा के हेडमास्टर विश्वनाथ जी आर्यसमाजी रहीं। शिक्षा के साथे–साथ रूढ़िवादी परंपरा के खतम कइल ऊहाँ के आपन सगल रहे। छात्र–छात्रा के चरित्रवान बनावल ऊहां के आपन धरम समझत रहीं। ऊहाँ के कहत रहीं, "शिक्षा के विकास के साथे संस्कार खतम हो रहल बा। आज के समय में चारों ओरे चरित्र आ नैतिक पतन के घटना बढ़त जा रहल बा। सदाचार के दिने–राति लगातार चीरहरण हो रहल बा। अइसन करमजरू समय में लइका–लइकिन के चरित्रवान बनावल बहुते जरूरी बा। अगर बाल–बच्चन के चरित्र बन जाता त

ओकरा में पात्रता अपने–आप अंखुआ जाई। तब ऊ जवन चान्ही तवन क ली। आसमान के तरेंगन तूर ली। समाज आ देश के कल्याण कऽ दी....।”

मनस्विनी पढ़ाई में तेज त रहले रही साथे निम्मन स्कूलो भेंटा गइल। सोना में सुहागा। पढ़े के जज्बा, जीवटता आ बरिआर इरादा वाली बेटी रहली मनस्विनी। स्कूल में नामांकन भइला के अबहीं सालो–माथ ना लागल रहे कि एक दिन अपना बाबूजी से खोंखि–खँखारि के कहली, “बाबूजी...! सुन लीं। दू गो में से एके बात होई। चाहे त डी0एम0 बनबि ना त गाँवें में घास गढ़बि...।”

बेटी के चेहरा–मोहड़ा के तासीर के तहरीर देखि ओहि घरी बेदानंद दवरे प मुट्ठी बान्हि के दृढ़प्रतिज्ञ हो गइलें, “बेटी के पढ़ाई खातिर देंहि बन्हकी धइ देबि, बाकिर एकरा के सही जगहा धरा के अहथिर होखबि.....।”

आँ साचो बेटी के जज्बा देखि बेदानंद आपन सरबस उनका पढ़ाई–लिखाई में खपा दिहलें। एगो किरानी के हैसियते कतना....? ई जगजाहिर बा। एगो सामान्य परिवार के होखला के बावजूद माई–बाबूजी कबहूँ बेटी के संसाधनन के कमी ना होखे देलें। बेदानंद हरमेस बेटी से ई कहसु कि बेटा जिनिगी में कबहूँ हार मत मनिहऽ। अपना लक्ष्य के कइसे हासिल कइल जाला, इहो ऊ सिखावत रहन। जइसे सील प रगरत–रगरत मेंहदी रगरेवाला आ लगवावे वाला दूनों के लाले–लाल क देला। बेदानंद के साथे कुछ ओइसने भइल। उनकर मेहनत रंग ले आइल। ऊ लड़ाई जीत गइलें।

दयानंद आर्य इन्टर कॉलेज से मनस्विनी इन्टर पास कइली। फेरू आगा के पढ़ाई खातिर इलाहाबाद चल गइली। पढ़ाई खातिर का दिन आ का रात, दूनों एक क देली। जी–जान से लाग गली। इहे वजह रहे कि पहिला वार यू.पी.एस.सी. के परीक्षा देके ऊ आर0आर0एस0 आ फेरू आई0ए0एस0 खातिर उनकर चयन हो गइल।

बरिआर ओहदा भेंटाते लोकाचार शुरू भइल। मीडिया के लोग घेर लेलें मनस्विनी के, “कइसे ई सभ भइल। तूँ गाँव–देहात के लइकी! कमे उमिर में कइसे अतना ऊँचा उड़ान हासिल भइल?”

कहली मनस्विनी, “आपन जज्बा, माई–बाबूजी के मेहनत, सहयोग आ संस्कार के बदौलत आज हम एह मुकाम प पहुँचल बानी। ई सफलता हमार नइखे, बलुक ई हमरा बाबूजी के बा, जे आपन समूचा खुशी हमरे भविष्य सँवारे में न्यौछावर कइ दिहनी।” ●●

❑ महाबीर स्थान के निकट, करमन टोला, आरा (बिहार)

गजल

भालचन्द त्रिपाठी

रूप रचि-रचि सँवारल गइल
एक छन में बिगारल गइल

आज तनिको न देखत बने
काल्हि केतना निहारल गइल

झूठ एगो छिपावे बदे
बाति केतना मठारल गइल

जवन तोपल रहे के चही
बाति ऊहो उघारल गइल

जेकरा पीछे परल बा सभे
केहु से ऊहो दुलारल गइल

❑ ग्राम-पो०: गौरी, आजमगढ़, उ०पी०

"गँवई-बबुआ"

डॉ. आशारानी लाल

बहुते दिन बाद उनका घरे बधावा बाजल रहे। सभे खुश भ गइल। भर गाँव इहे चरचा होत रहे कि आज बूढ़ी क मुराद पूरन भइल। एही खातिर उनकर मन छटपटात आ डहँकत रहे। का–का ऊ ना कइली एकरा खातिर? तिहुआर बरत तऽ कइबे कइली, रोज मन्दिर आ शिवाला में मुड़ियो पटकली। इहे कहत रही "हे देबी–देवता लोग हमार वंश बढ़ाई। अपना लोर से तऽ रोजो शिवजी के नहवावस। रोज लोर के दू–चार बून उनका पर ढरकाइए देत रही। ई कुल तऽ रोजे होत रहे, एह बीचे कइगो नौरात्री आइल गइल, जवना के कवनो गिनती ना, बाकी एगो नौरात्री के तऽ गजबे भऽ गइल। बूढ़ी सपना में कुछु देखली, आ भोर होते अपना पंडिजी के बोलवली। कहली कि पंडिजी रउवा हमार साथ दीं। हमरा सँगे विन्ध्याचली माई किहाँ चलीं। उहाँ नव दिन रहिके रउवा उनकर पूजा–पाठ विधि विधान से कर दीं। हमार घर अब सून हो गइल बा। जब उहाँ क किरिपा होई तबे एह घर में वंश के किलकारी सुनाई।

केहू से कुछ कहली न सुनली। पंडिजी संगे चल दिहली। नवरात्री भुखली आ माई के पूजा पंडिजी से करवली। अपना बियाहे के बेरा के चिरकुट में बान्ह के धइल गिन्नी, मंदिर का दान–पेटी में चुप्पे से डाल दिहली। पंडिजी के तरह–तरह के फल–फूल पइसा–रूपिया आ बस्त्र देके बिदा कर देली। ई कुल करते में उनका बुझा गइल कि देबी–माई उनसे खुश हो गइल बाड़ी। गाँवे लवटते पहिले अपना देवी मंदिर आ शिवाला में गइली। ओह लोगिन से बतियवली, कि उन्हने लोगिन क किरिपा से, ऊ सही एंग से पूजा–पाठ क–के आ गइली हऽ। अब उहे लोग उनकर मनसा पूरन करो।

सचहूँ साल बितते बूढ़ी क मन मयूर नाच उठल रहे। उनका घरे, पथरे पर दूब जामल, आ भर गाँवे बधावा बाजल। सभे कहल कि बूढ़ी का मन के साध आज पुरवल हऽ। चारो–ओरी खुशी छा गइल रहे। लोग देखल कि आजो बूढ़ मंदिर आ शिवाला गइली, आ अपना मन भर खुशी क आँसू गिराके ओह लोगिन के पुजली। ऊ इहे कहसु कि– हे देवी! हम रउवा लोगिन के बहुत आजिज क देले रहीं– हमके अब छमा करीं लोग। बूढ़ी कऽ खुशी के आँसू में क्षमा के मुस्कुराहट लबालब भरल रहे। मंदिर में तऽ बूढ़ी गोड़ लगबे कइली– अपना गाँव के छोट–बड़ सबसे पवलग्गी कहल भुलइली ना– इहे रहे बूढ़ी क मुस्कान। उनकर रोवाँ–रोवाँ लागत रहे कि एह उछाह में गंगा नहा ले–ले बा। भर गाँव के बड़–बूढ़, लइका–सेयान एह बाजत बधावा के सुनलस आ बबुआ के अपना आशीष से असिसलस। सभे कहल कि बबुआ जीएँ लाख बरीस। ऊ दिन–दूना, रात–चौगुना बढ़ँस। उनकर खुशी चान–सूरज बन के चमकत रहो। ऊ एह गाँव के किसुन–कन्हइया बनसु। अपना गाँव के आशीष क एगो बड़हन गठरी बूढ़ी अपना खोंइछा में बन्हली आ बबुआ के माई के अपना दुलार का तोहफा में भर के दे दिहली। धीरे–धीरे दिन बीतत गइल। बबुआ बड़ हो गइलन। उनके सब केहू मन्टू कहि के पुकारे लागल। सब खूब खेलावल आ पुचकारल।

भर गाँव–घर से पावल आशीष आ दुलार एक दिन आपन रंग ले आइल। मन्टू पढ़–लिख के ओसहीं आगे बढ़त गइलन, जइसे अँजोरिया कऽ चान। उहो दिन ओह गाँव में आ गइल जहिया पूरनमासी क चानो उगल। मन्टू एगो बहुते बड़ सरकारी अफसर बन गइलन। फेरू ओह गाँव में बधावा बाजल, बाकी एह बधावा के बेरी बूढ़ी ना रहली। बूढ़ी के छोड़ के ओह गाँव के अवरी सब बूढ़ा–बूढ़ी जे ऊहाँ रहल ऊ कहल कि बबुआ हो– तूँ जुग–जुग जीय। आगे बढ़ऽ, बाकी हमनियो के अपना जेहन में जरूर रखिहऽ। भुलइहऽ मत। मन्टू अब एह गाँव क लाल बन गइलन। ऊ आगे बढ़लन आ सबकर पवलग्गी एह इरादा से कइलन कि पहिले अपना नोकरी में अपना पूरा गाँव क भला ऊ करिहें ता–पीछे आपन।

मन्टू कऽ हौसला बुलन्द रहे। अपना जिला में तऽ ऊ साहेब बनके ना अइलन, बाकी उनकर दोस्ते मित्र लोग साहब बनके उनकरा जिला के सम्हारत रहे। ऊ अपना दोस्त लोगिन के कहिके अपना गाँव क बढ़न्ती पर अपन नजर रखले रहत रहन। गाँव में कबो स्कूल, कबो अस्पताल, कबो बिजुली, कबो पानी, सब क सरजाम जुटावे आ करावे में लागल रहत रहन। एही बिचे उनका जिनगी में एगो अइसन दिन आइल, जवन बान बनि के उनके गहिरे बेध देलस। उनकरा मन के उमड़त हुलास आ लगाव पर पानी फिर गइल।

अपना मेहरारू से उनका सुने के मिलल कि ऊ एगो गँवार घर में जनमल रहलन आ जनम भर गँवारे रह गइलन। उनका बियाह में गँउए लोग बराती बनल रहे। कुछ लोगिन के छोड़के सभे अपना कान्हाँ पर अँगोछा धऽके बारात करे आइल रहे। ऊ लोग ठीक से कपड़ो–लत्ता ना पेन्हले रहे। सुनलन कि ओह बरातियन के टेबुल पर बइठके खाहूँ ना आवत रहे। अइसन बरातियन के चलते, उनका ससुर के बड़ा नाँव हँसाई भइल। बेटी के बियाह में ससुर जी क मन बड़ा थोर भऽ गइल रहे। उनकर पगड़ी एह बियाह में हेंठ हो गइल। अइसने तरह–तरह के बात रोज मन्टू के अपना घरहीं में सुने के पड़े, जेसे उनकर हुलसत हौसला धीरे–धीरे पस्त होखे लागल। ऊ तऽ कहीं कि ऊ एगो बूढ़ी के लायक पोता रहन, एही से ना तऽ कबो मेहरारू के मुँहे लगलन, नऽ कवनो बात क जबाबे देहलन। हर बात के ऊ हँसिए के टार देत रहन।

मन्टू धीरे–धीरे अपना काम तरीका जरूर बदल देलन। मन क बदलाव तऽ तनी देरी से बुझाला, बाकी बदलल रहिया जुरते लउक जाला। अब गाँव से केहू अपना बबुआ मन्टू लगे कवनो मदद खातिर आवत रहे, तब ओके घरे ना बोलाके अपना आफिसे में बोला लेत रहन। ओह लोगिन के काम कराके उहँवे से टरकाइयो देंस। अइसन ऊ हरदम करत रहलन, बाकी जब माई–बाप क बात आइल तब का करँस। एक बेरी बाप के बिमारी तनी ढेरे गढुआ गइल रहे। मन्टू सुनते गाँवे पहुँचलन। बाबूजी कऽ हालत देखते उनके दवाई करावे खातिर– माई–बाप दुनू के लेके अपना शहर में आ गइलन। आवत घड़ी रास्ता में बहुते सोचलन, काहे कि उनका घरे पहिलहीं से उनकर सास–ससुर रहत रहे। सासो–ससुर क मजबूरी रहे – काहे कि उनका एकही संतान रही उनकर बेटी। ओह लोगिन के लगे बेसुमार धन रउलत रहे। ऊ दउलत लोग बेटिए के नाँवें लिख देले रहे। बेटिए उनकर सबकुछ रहली।

अब मन्टू का करसु। ऊ अपना माई–बाबूजी के लेके सीधे अस्पताल चहुँपलन। बाबूजी के उँहे भरती करा देलन। माइयो ओहिजा उनका देख–रेख में रहे लगली। मन्टू हरदम अस्पताल आ घर एक कइले रहत रहन। माई सबेरे अपना बेटा घर खाली नहाए–धोए आ पनपियाव करे जात रही, फेरू डब्बा में खाना भरके मन्टू उनके अस्पताल पहुँचा देत रहन।

देखल जात रहे कि मन्टू के माई क अस्पताले चल गइला क बाद उनकर पतोहा अपना घर में से बहरियात रही– उनकर नहाए वाला घर– सास के नहइला से बसाए लागत रहे। थोरी देर ले ऊ खुबे भुनभुनात रही, फेरू नोकर से सब साफ–सफाई कराके तब नहात रही। उनका नहाए में एह सास के चलते बहुत देरी हो जात रहे। उनकर माइयो, बेटी के देर से नहइला के चलते बहुते दुःखी हो जात रही। माई एक बेरी बेटी से कहबो कइली कि अस्पताल में तऽ प्राइवेट रूम मिलबे करेला, उहें काहे ना उनकर सास रूकऽतारी कि रोजे इहाँ क अवाई लागल बा। बिमारी तऽ असहूँ छुआ–छूत से बढ़बे करेला। सास क ई बिचार मन्टुवो क काम में पहुँचल रहे, बाकी ऊ कुछू बोललन ना। सब कुछ सुनियो के चुपा जात रहन। मन्टू सुनले रहन कि उनकर मेहरारू सबसे इहे बतवले बाड़ी कि गाँव से केहू आ जाला तब मन्टूजी के इहे हाल हो जाला। घर की ओरी जल्दी ताकेलन ना। उनकर अपन माई–बाप आइल बा ई बात केहू जानिये ना पावल।

पतोह क सास–सुसर उनका सोझा दाई–नोकर से बेसी कुछु ना रहे। ओह लोगिन के खान–पान पहिनावा–ओढ़ावा सब नोकरे चाकर जइसन रहे। उनकर सासु त गरमियों में अपना लुग्गा से अपन कपार हरदम ढँकते–तोपले रहत रही। एही कुल गँवइयन के चलते, पतोह ओह लोगिन के कुछ बुझत ना रही।

ससुर के तऽ अस्पताल से मन्टू का घरे लवटे क नउबते ना आइल, अस्पतालो में कबो ऊ अपना पतोह के देखलन ना। काऽ देखतन, जब कि माई रोजे घरे आवत रही बाकिी पतोह लउकली ना। गँवईं होखे क सजा तऽ सास–ससुर लोग खूबे भुगतल। बाप–माई के छोड़के सुरधाम चल देलन। माई अकेल हो गइल रहली, तब का करसु। रोवत–पीटत आ अपन देंह धुनत मन्टू का घरे आके उनका ओसारा में पटा गइली।

माई के घरे अइला पर समधिन–समधी आ पतोहू सभी आपने बज्जर क केवाड़ी बन्द कऽ लेलस। केहू उनसे न बोलल, नऽ उनके उठावल काहे कि ऊ उनका गाँव क कवनो अन्चीन्ह मेहरारू रही। ऊ रोवते आ छटपटाते रह गइली। मन्टू अपना बाबूजी के बिदा कके आ उनका मुँह में आगी देके जब लवटलन, तब माई क हालत देखलन। माई के उठवलन, अपना करेजा से लगवलन आ जुरते उनके लेके अपना गाँवे चल देलन।

मन्टू बाबूजी क किरिया–करम बड़ा धूम–धाम से अपना गाँवहीं जाके कइलन। घर–बाहर हीत–रिस्तेदार सब इहे बूझल कि का करो बेटा– अपन धरम बहुत खरच–बरच कके निभवलन हँऽ। पतोह बिमार बाड़ी। ना आ सकली हऽ। इहे लिखन्त होला। ई बात सुनते एगो बूढ़ कहलन कि एह पतोह क जिनगी अब बिमारिए में बीत जाई। सब ई बात सुनते चुपा गइल, काहे कि मन्टू क बहुते दोस्त–मित्र लोग पुछार करे आइल रहे। सब गाँव क लोग खुसुर–फुसुर कुछु बतियावल, बाकी केहू कुछु साफ बोलल ना।

मन्टू के जनम में बधावा बाजल रहे– ई बात ऊ खाली सुनले रहन, बाकी जब ऊ एगो बड़का सरकारी अफसर बनलन, तब पूरा गाँवें में केतना उछाह रहे, बड़–बूढ़ लोग उनके केतना असिसले रहे– ई बात ऊ अपना आँखी देखले रहन। अपना गाँव के लोगिन क ऊ रूप– आजो ले ऊ भुलाइल ना रहन। मन्टू के मेहरारू भले शहरी रही, बाकी उनका पर एकर कवनो असर ना परल। आजो ऊ अपना के गँवइये रखले रहन।

मन्टू हरदम अपना माई से दूर रहिके नोकरी करत रहन, तबो उनकर मन माइए का लगे रहत रहे। उनका माई क मन हरदम उनका सेवा से जुड़ाइल रहत रहे। माई सबसे इहे कहँस कि हमार बाबू बहुते बड़ अफसर बानऽ। उनका छुट्टी ना मिलेला तबो हमके देखे महीना–दू महीना पर आइए जालन। कबो हमके कवनो बात क कमी ना होखे देलन। हमार बाबूए हमके ई फोन दे–देले बानऽ। ऊ फोने पर रोज हमसे बतियइबो करेलन। हमार हाल–चाल रोज पूछेलन। बबुआ के बतिए सुन–सुनके हमार मन अघाइल रहेला। भगवान सात घर दुसमनो के अइसने पूत देंस।

मन्टू माई के दूर राखके ऊ सब सुख आ ओहदा पा जात रहन, जवन बेसुमार धन–दउलत पाके आ माई–बाप के लगही राख के उनकर मेहरारू ना पा सकत रही। मेहरारू के नसीब में धन तऽ रहे बाकी यश से ऊ बहुते दूर रही। लागत रहे कि मन्टू बूझ गइल रहन कि धन आ यश में कबो दोस्ती होइबे ना करेला। एही से दुकेल रहलो पर एह राह में ऊ अकेलहीं राही बनके चलल जात रहन। ऊ खाली अपना माइए क बबुआ ना रहलन–ऊ तऽ भर गाँव के बबुआ कहात रहलन। ●●

❑ काकानगर, डी-2/147, नई दिल्ली-110003

फोटो ग्राफर, लेखक, कवि भाई लोगन से निहोरा.......

(1) फुल स्केप कागज पर साफ सुन्दर लिखावट में भा कृतीदेव 10 फॉन्ट में टाइप कराके रचना–सामग्री आ फोटोग्राफ रजि0 ड़ाक से भेजीं अउर **paati.bhojpuri@gmail.com,** या **ashok.dvivedipaati@gmail.com** पर मेल करीं।
(2) पत्रिका में रिपोर्ताज रपट, फीचर सामग्री भेजत खा, साथ में ऊहे चित्र/फोटो भेजल जाव, जवन बढ़िया आ प्रकाशन जोग होखे। आपन संक्षिप्त परिचय आ नया फोटो साथ में भेजीं। (रजि0 डाक से)
(3) पाठक भाई लोगन से विनती बा कि पत्रिका का बारे में, आपन प्रतिक्रिया/विचार भेजत खा, आपन नाम पता, पिनकोड सहित आ मोबाइल नंबर भेजीं। पता पत्रिका में छपल बा।
(4) संस्कृति–कला संबंधी आलेख बढ़िया चित्र रेखाचित्र, फोटोग्राफ के साफ प्रिन्ट–आउट का साथे भेजत खा ओकरा तथ्य–परक प्रामाणिकता के जाँच जरूर करीं। संपादक का नाँवें ईमेल पर फोटोग्राफ भेजल जा सकेला बाकि लिखित रचना के प्रिन्ट रजि0 डाक/कुरियर से भेजल जरूरी बा।
(5) निजी खर्चा पर निकलेवाली आ बिना लाभ के छपेवाली अव्यावसायिक पत्रिकन के सबसे ज्यादा सहयोग ओकरा लेखक कवियन आ पाठकन से मिलेला। ई समझ के एह पत्रिका के पहिले खुद ग्राहक बनी अउरी दुसरो के बनाईं।

एगो रात एगो दिन

प्रेमशीला शुक्ल

"राम हो राम, अब जाके जान में जान पड़ल। तीन दिन तऽ बोलले हो गइल रहल ह।" बिछौना पर गोड़ पसारत बृजराज कहलन।

"आरे हँ जी, इतना तीरथ कइल गइल, बाहर–भीतर आइल–गइल भइल बाकी अइसन सफर कब्बो ना भइल। ना केहू दोसरा से बोले ना बतिआवे, सब अपने–अपने में मगन।" –राजेस के अम्मा बात पुरवली।

लोगवे केतना रहे? दूनूँ नीचे वाला सीट पर हम–तूँ, ऊपर वाला एक सीट पर राजेस आ दोसरका पर पैन्ट पहिरले एगो लइकी। ऊ हरदम अपना लैपटॉपे में अझुराइल रहे।

"गंगासागर के यात्रा मन परता? गड़िए में बाबू राम सरन सिंह मिलल रहलें। उनुसे बाते–बाते में पता चलल कि ऊ बगले के गाँव के हवन। गाड़ी के जान–पहचान नेवता–हँकारी में बदलल आ आजु ले ई सब चलल। हर सुख–दुःख में ऊ साथे खड़ा रहलन। अइसन केहू सग सम्बन्धी का होई?"

"बात सही बा बाकी अब सब छूटि जाई।"

"छोड़ीं अब ई कुलि बाति।"

"तूहूँ तऽ यात्रा भर चुप्पे रहलू।"

"तऽ का करतीं? बाबू का सामने संकोच ना होत रहे का? जब से सेयान भइलें पढ़े लिखे बहरा चलि गइलें, फेर नोकरी–चाकरी लागल तऽ बहरे रहलें। आ फेर अपना बराबर संतान का आगे रउरा से चपर–चपर करतीं का?"

"ना भाई, ना। तूँ कुलवन्ती, लजवन्ती नार। पहिले सासु–देयादिन से भरल घर में एकान्त ना पावऽ तऽ महीना–महीना भर कुछु बोलबे ना करऽ। अब आप बराबर बेटा का राज में एगो अलगिआ कमरा में गवने के साथ पुरावऽ।" – बिरिज चुटकी लिहलें।

"छोड़ीं ना इ कुलि बाति।"

"सब छोड़बे करीं, तऽ कहीं का?"

"कहीं कि कइसे रहल जाई इहाँ?"

"का कहीं हो? कइसे रहल जाई? रऽहि जाई?"

"अच्छा जाए दीं, देखल जाई।" कहत कुन्ता चदरा में मुँह डरली। हार–पाछि के बृजराजो चदरा खींचलन आ सूति रहलन।

अपना आदत के मुताबिक बृजराज के आँखि खुलल।

"हो सुनताड़ू? बिहान हो गइल।"

"चुपचाप पटाइल रहीं, कहीं एक्को चिरई बोललि? बड़का भिनसार भइल होई।"

आगे का बोलें? चिरई तऽ अब्बेले बोललसि ना। फेर से चदरा खिंचलन।

बाकी नीन लागे तक न। थोड़े देर बाद उठि के बइठि गइलन। पेटवो सूते ना देत रहे। माने दिसा–मैदान के जूनि हो गइल बा। बिरिज सोचलन, उठलन आ बगल के दरवाजा खोलि के भीतर गइलन। का केहू के अइसन चमचमात घर होई, जइसन इहाँ के शौचालय बा। तूँ त पहिले दिन से इहें का रंग में रँग गइलू। उठऽ देखऽ, परदा का पाछे अँजोर लउकऽता। उठतऽ तऽ।"

"रउआ ना चैन से रहब, ना रहे देब। सूतल नइखीं। आँखि मूनि के पटाइल बानी।" बोलते कुन्ता उठि के परदा हटवली।

"हँ जी, ई तऽ किरिन उग गइल।" –कुन्ता घड़ी देखली। साढ़े सात बजत रहे। हड़बड़ा के कमरा के दरवाजा खोलली। कहीं कवनो सुनगुन ना देखली। कमरा के बाहर निकलली। वापस अपना कमरा में आ गइली। "का होता बहरा?" –बिरिज पुछलें। "कवनो चाल नइखे मिलत। बुझाता सब सूतल बा।"–कुन्ता जवाब दिहली। "अबहिन ले सब सूतल बा? कम से कम दुलहिन का तऽ जागे चाहत रहल ह। जवना घर के लछिमी किरिन चढ़ले सूती ओ घरे बढ़न्ती का होई?" –बिरिज के सवाल रहे।

"होत बिहाने कवन रामनामी जपल चालू कऽ दिहनीं। जानत नइखीं दुलहिन अब दुलहिन ना, मेम साहब हो गइल बाड़ी?" –कुन्ता रिसिअइले बोलली।

"जानत तऽ बानी, अनेरे गाँवें रहेके नाम ना लेली? ई मजा ऊहाँ कइसे मिली?" –फेर से बिरिज सवालियानिगाह उठवलन।

"तऽ का करब? हुकुम चलाइब?" –सवाल के जवाब, सवाले से देत कुन्ता बोलली।

"हुकुम का चलाइब? हुकुम चलावे के जमाना बा? देखेलू ना, रसोई में एतना मीन–मेख निकाले वाला जनारदन के जवने मिल जाला, चुपचाप खा लेलें, ना जूनि कुजूनि देखेलें, ना भोजन–कुभोजन।" –बिरिज कुन्ता के रीसि के अंदाजी के नरम होके बोललन।

"हँ जी, बाति तऽ सही बा। जबले जनारदन के दुलहिन रसोई बनावें, जनारदन का रोज छानले–बघारले खाए के मन करे, अब पतोह के हाथ में रसोई बा तऽ रूख–सूख जवने मिलेला जनारदन मुँह मूनि के खा लेलन। हँ भाई, आपन इज्जति अपने हाथ।" –कुन्ता पर बिरिज के बाति के असर पड़ल। ऊ पति के बात से राजी हो गइली।

"आ एक बाति अउर पतोहि के सासु सिखाई कि ससुर?" –बिरिज का मुँह से ई बाति निकलते कुन्ता के पारा चढ़ि गइल।

"का कहनीं हँ? पतोहि के सासु सिखाई? का पहिले अइसन पतोहि खाली सासु का बात–बेवहार में रहताड़ी सन? अब तऽ पतोहि का ससुर से माथे पर के कपड़ा हटा के बोले के बा, सामनी–सामना बइठे के बा तऽ का सासु आ का ससुर?" –बाति कहत कुन्ता के मुँह तमतमा गइल रहे।

तबले दरवाजा खड़कल। पतोह नाइटी पहिरले अपना कमरा में से निकल के रसोई की ओर चलली।

"ई धरकोसवा अस पोसाक हमरा तनिको ना भावे।" –कुन्ता धीमे से फुसफुसइली।

"केसे कहऽताड़ू? ससुर से?" बिरिज चुटकी लिहलें।

"केसे कहब? इहाँ कवन हमार गोतिया–देयाद बइठल बा?" –कुन्ता के आवाज अब्बो धीमा रहे।

"बुझलू तऽ, इहाँ जवन कहे–सुने के बा ऊ सब आपुसे में।" –ओतने धीमे बिरिज जवाब दिहलें।

पतोह के रसोई में देखि के कुन्तो ऊहें पहुँचली।

"का करे के बा? सब्जी काटि दीं? का कटाई?" –कुन्ता पतोह से पुछली।

"कटा जाई अम्मा जी। काम वाली आवते होई। चिन्ता मत करीं। आराम करीं, चाहे नहाईं धोईं।" –पतोह सासु के गोड़ छूवत कहली।

"सदा सोगागिन रहऽ। दूधे नहा पूते फरऽ।" –कुन्ता का मुँह से बरबस निकलल।

पतोह आपन रेवाज नइखे भुलाइल। कुन्ता के मन गद्गद हो गइल। सोचली, चलि के नहा लीं। वापस कमरा में आवते बिरिज टोकि दीहलन– "का हो, बड़ा हरिअर लागताड़ू, जात के तऽ लाल–पीअर होत रहलू।"

"देखीं अब बाति मति बढाईं। पतोह आपन होत बिहाने अंचरा से गोड़ धइलस हऽ।" कुन्ता के आवाज में खुसी झलकत रहे।"

"अच्छा, अब्बे होत बिहान बा आ अँचरा रहल ह ओकरी पहिरनवाँ में?" बिरिज काहे उनइस रहतें, तुनुकि के बोललें।

"नुकुस निकालल राउत आदत ह, चुप रहीं।"–कहत कुन्ता नहाए चलली।

बाह! सब कुछ चमाचम। –कुन्ता गुमाने भरि

गइली। पतोह काल्ह सब कुछ समझवलस। कुछ बुझाइल, कुछ ना बुझाइल। उनुका जेतना से मतलब रहे ओके ठीक से याद रखली। हई टोंटी खोलला से ठंढ़ा पानी, हई खोलला से गरम।

आदत के हिसाब से ठंडा पानी से नहा के पूजा करे चलली बाकी पूजा होई कइसे? जल भरल पुजहाई लिहले ठाढ़ रहली। सुरुज भगवान के जल कहाँ दें? बन्हन तर भला सुरुज भगवान के जल दिआला? कहीं लउकतो बाड़ें? बढ़नी मारो अइसन घर के। बिना अंगना के घर कवन? भला होम अगियारी कहाँ होत होई? अनजाने 'आवऽ न ये आदित हमरही अंगने, आरे गुड़ घीव होमियाँ जनत हमरे अंगने' गावत कुन्ता चुपा गइली।

सोचली—पूजा घर में नाँव लेके जल दे देब। पूजा घर में गइली त सजल सँवारल देवी—देवता देखि के खुश हो गइली, बाकिर बिना बेठन के रामायन जी? हे भगवान! लइकन का ई कुल कब बुझाई? एकरा खातिर तऽ पतोह के टोके के पड़ी। अँचरा से रामायन जी के झारि—झूरि के माथे से लगवली आ माफी मँगली।

पूजा पर से उठि के कुन्ता पतोह के टोकली—"दुलहिन, रामायन जी के बेठन में बान्हि के राखे के चाहीं, उघारे—निघारे काहें रखले बाड़ू?"

पतोह आफिस जाए का जल्दी में रहली। हाथ में घड़ी बान्हत जवाब दिहली—

"एसे का फरक पड़ी अम्मा जी, किताबे न हऽ, पढ़ला से मतलब बा। रउरा चाहतानी त बेठन बना देब।"

"किताब हऽ? रामायन जी किताब हईं? आरे देवता हईं। बाँचे अति उत्तिम, ना बाँचे तब्बो फूल—अच्छत तऽ चढ़बे करी।" मने—मने कुन्ता झउँझिया गइली। गनीमत रहे पतोत बेठन बनावे के राजी हो गइल रहली। कुन्ता मन के समझवली। रिसियाइल मोनासिब नइखे, पतोह हमार बात अनसुना नइखे करत। पतोह का सास के चेहरा पर आवत भाव पढ़े के फुरसत ना रहे, ऊ सास के समुझावत रहली—"अम्मा जी, नास्ता—खाना डाइनिंग टेबल पर लगावल बा। बाबूजी आ रउरा समय से खा लेब लोगन। का करीं हमके ऑफिस जाए के बा।"

कुन्ता खड़ा—खड़ा सुनत रहली आ देखत रहली कि राजेसो तइयार हो गइल बाड़ें। राजेस अपना बाबूजी के कुछु समुझावत रहलें। कुन्ता के देखते—देखते बेटा—पतोह एके साथे ऑफिस निकल गइल लोग।

कुन्ता सामने धइल कुर्सी पर बइठि गइली। बिरिज दरवाजा पहिले बन्द कइलें आ आके ऊहो कुरसी पर बइठि गइलें।

कुन्ता का मन में हड़बड़ी मचल रहे— आखिर राजेस का समुझावत रहलें? पूछि पड़ली— "बाबू का कहत रहलें हँ?"

"कहत रहलें हा कि दरवाजा बन्द कऽ ल। हमहन के आठ बजे तक आवल जाई, तब तक टीवी देखिहऽ, आराम करिहऽ। —इहे तऽ कहत रहलें हँ।" —बिरिज लमहर साँस भरत कहलें।

"एमे एतना गंभीर बाति कवन बा कि ए तरे कहऽतानी। नया जगह में घर बन्द कऽ के रहहीं के चाहीं।" —कुन्ता का बिरिज के ई ढंग नीक ना लागल रहे।

"तूँ हमार बात नइखू बूझत। साँचे—साँच बतावऽ, तहके इहाँ सब अजगुत नइखे लागत? हमनी का कब्बो दिने घर बन्द देखले बानी जा? ए दियासलाई अस घर में दिन कइसे बीती?" —बिरिज अब्बो गम्भीरे बोललें के चाहीं।" —कुन्ता का बिरिज के ई ढंग नीक ना लागल रहे।

"साँझी का बेरा घूमे चल जाइब। अब उठीं नहाईं—धोईं, खाईं पीं।" —कुन्ता उनुके सहज करे के कोसिस कइली।

"अब बतावऽ, एतना सबेरे कब्बो खिअवले बाड़ू? सबेरे तूँही न थरिया में दूध सेरवा के देत रहलू ह। ओकरा बाद खेत में काम करे जात रहनी हँ। दुपहरिया में नहाइल—धोवल आ खाइल—पीअल होत रहल हऽ, भुला गइलू का?" —बिरिज का आवाज में दुःख झाँकत रहे।

"अच्छा, दुधवे पी लीं। ईहाँ कुछु के कमी नइखे। बाबू सब इन्तजाम रखले बाड़ें। हँ, रहन—सहन दूसरे तरह के बा। देखनी ना, कइसन फटाफट सब काम हो गइल। दूगो नोकरानी अइली सन आ सब कऽ धऽ के चलि गइली सन। दुलिहन का कुछु करे के पड़ल? जगली, तइयार भइली, गइली।" —कुन्ता अपनी ओर से बेटा का इन्तजाम के तारीफ कइली।

बिरिज के कुछु नीक ना लागत रहे। अनमनाहे बोललें— "हँऽ ठाट—बाट तऽ बा। अब तऽ हमनीका राजे करे के बा। ले आवऽ, दूध दऽ। बाकी का दूध पीअब, पेट गुड़गुडाता। कहाँ खुला में दिसा—मैदान के आदत,

कहाँ ऊँचे आसने गोड़ लटका के बइठल? पेट भला साफ होई? ऊपर से मन भिनभिना गइल। आधा नहान नतऽ हम तब्बे क लिहनीं। छोड़, दूध ना पीअब, नहा के भोजने करब। सब नए करे–सीखे के बा।" बिरिज कपड़ा उठवलन आ नहाए चललन।

नहात के बिरिज के मन के रंग बदल गइल। ऊ मने–मन कहत रहें– "आराम त इहाँ बा। गाँवें रहितीं तऽ केहू के पानी चलावे खातिर बोलावे के पड़ित। इहाँ नल खोलऽ, नहा लऽ, मन करे गरम से, मन करे ठंडा से।"

नहा के खाए बइठलन। कामवाली के हाथे के ठंडा रसोई। देखते पूछि बइठलें– "का हो, इहे खाए के बा?"

"का करीं, दुलहिन गरमावे के समुझवले तऽ रहली बाकी हमरा बुझात नइखे। चलीं न रउरे कऽ लीं। बिजली वाला बा, कुछु करे के नइखे।"

"अब ए उमिर में रसोइयो में भेजबू का? दऽ, जवन बा तवन बा।" –कहत बिरिज भोजन कइलन।

"अब? अब का कइल जाए?" कुन्ता से पुछलन।

"करब का? इहाँ कवन काम करेके धइल बा। घरवो तऽ खा के सूतत रहनी, जाईं तनी सूति लीं।" –कुन्ता जवाब दिहली।

थोड़े देर सूति के उठला का बाद बिरिज फेर से उहे सवाल दोहरवलें– "अब? अब का कइल जाए?"

"बइठल बनिआँ का करे, ये कोठी के धान ओ कोठी करे, बाकी इहाँ तऽ कोठिओ नइखे।" –बिरिज सवाल के आगे इहो जोड़ दिहलें।

"बइठि के रामायन के बाँची। आजु तक ई तऽ कब्बो कइनी ना। बाँची हमहूँ सुनब।" –कुन्ता कहली।

"तोहरा बाँचे के बा तऽ बाँचऽ। हम तऽ जिनिगी भर काम कइनीं। नहात के जवन दोहा–चउपाई पढ़ा गइल, तवन पढ़ा गइल। हो गइल हमार पूजा।" –बिरिज का कुन्ता के बात जंचल ना। ऊ रुखरे बोललन।

"जवन होखे, रउवा पर ई करिया किनारी के धोवा धोती आ सेंडो बंडी बड़ा नीक लागता।" –कुन्ता बिरिज के ध्यान बँटावे के कोसिस कइली।

"अच्छा"– बिरिज तनी मुसुकात बोललें– "बाबू लियाइ दिहलें तऽ पहिर लीहनीं हँ, ना त हमार जिनिगी त मोटे धोती आ मारकीन के बगलीदार गंजी पर कटि गइल। आ सुनऽ, ओही पर तोहार बाबूजी बरच्छा डाल के गइलन।" –बिरिज के ध्यान बँट गइल रहे। ऊ बीतल दिन के पन्ना खोले लगलें।

"हँ हो, साँच कहतानी। ओहि दिन हम रोज अइसन दुपहरिया के खेत से काम क–कराके लवटनी तऽ देखतानी काका का साथे दू–चार आदमी बइठल बा। ई कवनो नया बाति ना रहे। अइसन अक्सर होखे। एसे हम नहाए–धोए में लगनीं तले काका बोलनी–बिरिज, नहा के हमरे लगे अइहऽ।" गइनीं तऽ काका तुहरे बाबूजी से बतवलें– "इहे लइका हऽ, जवन पूछे–जाँचे के बा पूछि लीं।"

"का पूछे के बा, हई जनेव आ रुपया धरीं।" –जवाब मिलल। उहे बरच्छा मानि लिहल गइल। का तुहके हम ओ पोसाक में नीक ना लागेनी।"

कुन्ता ध्यान से बिरिज के बात सुनत रहनी। बिरिज के ई सवाल सुनि के लजा गइली। बिरिज मुसुकइलें। आ बिना जवाब सुनले आगे बढ़लन– "तूँ कब्बो हमके फटहापुरान पहिरले ना देखले होइबू आ तूँ तऽ जानते बाडू हम आपन कपड़ा अपने कब्बो खरीदबे ना कइनीं। हमरा घर में ई रिवाजे नइखे रहल। हरदम से जे बहरवाँसू रहे से घर–भर के कपड़ा खरीदे। कब्बो ना केहू के कमी होखे ना सिकायत। हमरा मन परता एक बेर काका बड़का भइया के झरल धोती देखलें तऽ मझिला भइया के टोकि दिहलें–रामरूप के धोतीझरल लउकता। लागे, ऊ धरती में धँसि जइहें। दोसरे दिने ऊ नया धोती खरीद के ले अइलें। ऊ समय कुछ दोसर रहे।"

कुन्ता कान पारि के सुनत रहली। बिरिज लमहर साँस भरत कहलें– "काका के मझिला भइया से दू बेर हम भारी आवाज में बोलल देखले बानी। एक बेर बड़का भइया के धोती का बारे में, दोसरका बेर भउजी के बहरा ले गइला के बारे में।"

"तब तऽ हम रहबे कहनीं।" –कुन्ता टोकली।

बिरिज कहे लगलें– "हँऽ हो, तूँ त रहलू। देखलू न, मझिला भइया जइसे कहलें– "खाए–पीए में तकलीफ होता, मुन्ना के अम्मा के साथे ले गइल चाहतानी।" –काका उठ के खड़ा हो गइलें। कहलें– "नास करबऽ का? मेहरी ले के बहरा जइब? अइसन केहू कइले बा खानदान में? तूँ अकेले कमाए गइल बाडऽ? आरे परबाबो–छरबाबा का समय से लोग अँगला–बँगला कमाए गइल, का केहू मेहरी साथे ले गइल? ले जा, तूँही ना, सभे जने ले–ले निकलि जा लोग, हमहूँ कासी–अजोधिया सेबे लागब, ताला मरा जाइ घर में,

समुझि लेब तावनि आइल, सबके ले गइल।" एतना कहत–कहत बिरिज का आँख से झर–झर लोर गिरे लागल। बस इहे कहि पवलें– "का हो साँचो के तावनि आ गइल का कि हमरा घर में ताला मरा गइल।"

कुन्ता का धक से लागल– "राम–राम असुभ जनि बोलीं। कहाँ ऊ, कहाँ ई। बाबू हमार अँगला–बँगला आइल बाड़न का? एतना तपेसा से पढ़ावल लिखावल गइल, अप्सर बनावल गइल। रउरे पुरुखा लोगन के असीरबाद ह ई कुल। पतोहियो रउरा अप्सरे ले अइनीं। रउरा आपन वाली कइनी। अब जो बाबू बाप–महतारी के अपना साथे राखताड़े तऽ रउरा अइसन बात सोचतानी। ना ई ठीक नइखे। घरे ताला मराइल बा तऽ का भइल? ई तऽ बढन्ती के ताला हऽ।" –कुन्ता बोधे का कोसिस में रहली।

"अब तूँ कुछु कहऽ, हमरा बोध नइखे होत।" –बिरिज के दुःख उनुका आवाज में भरल रहे। कुन्ता दुःख कम करे के राहि सुझवली। "जाईं तनी घूमि आईं। जीव–मन आन हो जाईं।"

"ठीक कहताडू।" –कहत बिरिज कुरता देहिं में डरलें आ घूमे निकड़लें। साफ–सुथरा सड़क देखि के बिरिज के अच्छा लागल। बरसातो में कीच–काच ना मिली। बाकी जाईं कहाँ? कवनो मन्दिर, मेला–हाट तऽ जानत नइखीं, केहू से जान–पहचान तऽ बा ना। चलि के कवनो पेड़े के नीचे बइठब। बिरिज सोचलें। आसपास नजर दउड़वलें–बड़े–बड़े मकान, छोटे–छोटे लॉन, लॉन में गमला में लागल छोटे–छोटे फूल–पत्ती, ओसे तनी बड़, धरती में गड़ल सजावटी पौधा, ऊ भिनुसहरा चिरई के बोली खोजत रहलें। हुँह, बिलारि के मुँह कोंहड़ा लीली। दूर एगो पेड़ लउकल। थोड़े दूर चललें फेर लवटि अइलें। अइलें त देखलें–दू पल्ला दू ओर।

"कहाँ बाडू हो? दरवाजा बन्द ना कइलू, बाबू एतना समुझवले रहलें। –कुन्ता के बोलावत बिरिज घर में अइलें।

कुन्ता गलती मानत बोलली– "का कहीं, कब्बो के आदत रहे तब न। आ राउर घुमाई हो गइल? ना जाते देर न आवते देर।"

"का घूमीं हो? सड़की–सड़की किनारे घूमल कवनो घूमल ह?" बिरिज जहाँ से उठि के गइल रहलें, उहें बइठि गइलें।

साँझ के मुन्हार होते बाबू आ दुलहिन आ गइल लोग। थोड़े देर में कामवाली आ गइली सन। फेर सबेरे अइसन फटाफट काम–धाम कऽ के चलि गइली सन। राम में भोजन दुलहिन परोसली–एकट्ठे चार जगह। दूगो बिरिज का घर में आइल आ दूगो डाइनिंग टेबल पर। कुन्ता का नीक ना लागल। "साथे खाइब हो दुलहिन? ना ना हमार अबहिन रसोई में राखऽ। अपना ससुर के दे द। जवन जिनिगी भर ना कइनीं ऊ अब करब?" –कुन्ता कहली।

दुलहिन तऽ कुछु ना बोलली। राजेस कहलन– "दिन भर काम कइला का बाद अगोरि–अगोरि सब खाई तऽ काम कइसे चली माई? खाले।"

"तुहन लोगन मत अगोरऽ, खा लऽ। हम बाद में खा लेब।" –कुन्ता कहली आ चुपचाप कमरा में बइठि गइली।

भोजन कऽ के राजेस माई–बाबूजी के कमरा में अइलें। उनुकर सुनलें, आपन कहलें आ अतवार का दिने घूमे चलल जाई–ई कहि के अपना कमरा में चलि गइलें।

'का घूमे चलल जाई? कहाँ चलल जाई? के चीन्हता? इहाँ मनई मानुख नइखे चीन्हत, उहाँ धूरि–माटी चीन्हत रहे। हमरा तऽ इहाँ एक दिन एक बरिस बराबर बुझाता। का हो, बाबू से कहीं जे हमहन के अतवार के गाँवे पहुँचा दें।' बिरिज कुन्ता से पुछलें।

"भल बानी रउरे"–सुनते कुन्ता रिसिआ गइली– "आरे भागि मनाई कि सरवन पूत पवले बानी। गाँवे रामबड़ाई के देखीं? मरद मेहरारू कइसे गुजर करता, बेटा झाँकी नइखे पारत। चुपचाप रहीं। सब ठीक हो जाई। धीरे–धीरे ढरहर हो जाइल जाई। जाही बिधि राखे राम, ताही बिधि रहिए। राम–राम कहीं।" अपनहूँ राम–राम करत कुन्ता चदरा खिंचली। पीछे से बिरिजो इहे कइलन। ●●

❑ 'प्रदक्षिणा' दक्षिणी उमानगर,
सी०सी० रोड- देवरिया–274001

बेमाथ के जिनिगी

गौरी शंकर तिवारी

जइसे–जइसे बनारस निगिचा आवत जाय, ओइसे ओइसे श्यामली के पिता के 'कहना' इयाद आवत रहे। कहले रहले 'विधाता के सिरजल एह संसार में केहू अइसन नइखे, जे बिना कवनो माध्यम आ सहारा के सुखी जीवन बिता सके। लकड़ी के अलम बिना, लतरि जामि तऽ जाई, बाकिर ऊपर चढ़ि के फइलि ना पाई। पाँखि बिना चिरई–चुरुंग के स्वतंत्र बिचरण आ उड़ान ना होला। तबो एह सच्चाई पर पर्दा डालिके, नइकी पीढ़ी (लइका–लइकी), अनुशासन आ गार्जियनशिप में नइखे रहल चाहत।'

ऊ चाहत रहे कि घरे पहुँचि के पापा के गोड़ पर गिर के पुक्का फार के रोओ आ बता देव उनकर बात ना मानला के नतीजा। अब तऽ चिरई खेत चुग गइल बिआ। ट्रेन एकदम राइट टाइम बनारस स्टेशन पर उतार देलस। सँगे कुछ सामान रहे, एसे आटो करे के परल। मुश्किल से बीस मिनट लागल होई, घरे पहुँचे में। काल–बेल बाजते, दरवाजा खुलि गइल। सामने अचानक बेटी श्यामली के देखि के, बिधवा महतारी शिवानी पर तऽ कवनो प्रतिक्रिया ना भइल, बाकिर बेटी के काठ मारि देलस। छने भर में आँखि से गंगा–जमुना अस लोर के धार बहे लागल। देवाल पर माथ पटकि पटकि बेचारी फफकि परल। ओकरा रोआई में दुःख, पछतावा आ आश्चर्य तीनू का संगम के अनुभूति आसानी से कइल जा सकत रहे। "पापा ठीक कहत रहन। बेमाथ के जिनिगी, कवनो जिनिगी ना होला। हमहीं ना समुझि पवनी उनकर कहल।" कहत ऊ महतारी से लिपट गइल।

अकेल औलाद रहला के कारण महतारी बाप के कुल्हि प्यार ओकरे पर निछावर होत रहे। अतने ले ना, जनम से लेके अबहीं तक ओकर लालन–पालन लइका लेखा होखे। लइका–लइकी दूनों के सरधा ओकरे पर पूर होखे। श्यामली असमान के तरइओ माँगि देइ तऽ, लाख अधातम कऽ के हाजिर कऽ दिआइ। माने लाड़–प्यार लुटावे के कवनो सीमा ना रहि गइल रहे। ईहे कारण कि ऊ मनबढ़ू हो गइल रहे। तिल से ताड़, भा ताड़ से तिल बना दिहल ओकरा बायें हाथ के खेलि रहे। देरी से सुति के उठल, चिकने चीज के पनपिआव कइल, बे बतवले केहू के घरे चलि गइल, साँझि खा देरी से घर लवटल, ओकर आदति हो गइल रहे। तनिकिओ डाँट–फटकार कइला पर, रोवे चिचिआए लागे। अतना कुल्हि के बादो ऊ हाईस्कूल के परीक्षा प्रथम श्रेणी में पास हो गइल रहे।

जौनपुर शहर में एक से बढ़ि के एक स्कूल–कालेज रहल, बाकिर श्यामली बी.एच.यू. में नाँव लिखावे खातिर जिद ठनले रहे। श्रीकांत के समझवला के ओकरा ऊपर कवनो असर ना होखे। बाप के बात काटत ऊ आपन तर्क देलस–

– "पापा! जौनपुर के पढ़ाई के बारे में तोहरा कुछ पता नइखे। एहिजा के पढ़ाई के भरोसे केहू आपन कैरियर ना बना सकेला। तू चाहत होखऽ कि तोहार

बेटी पढ़ाई में नाँव कमाव, त बी.एच.यू. में एडमिशन करा दऽ। उहँवे हास्टल में अपना सहेली स्मृति आ पुष्पा के सँगे रहि के कोचिंगो करबि आ पढ़इओ कर लेबि।"

– "हँ बेटी! हम तऽ बूझि गइनी, तूहीं नइखू बुझि पावत।"

– "कवन चीजु हम नइखीं बूझि पावत?"

– "हमार परेशानी।"

– "हमरा पढ़ला से तोहरा परेशानी बा, तऽ लऽ हम ना पढ़बि। माई लेखा चूल्हा–चौकी करत, हमहूँ आपन जिनिगी काटि लेबि।"

बाप–बेटी में बतरस होत सुनि के महतारी शिवानियो आ गइली, आ बेटी के समझावे लगली– "ना बेटी! तहरा के पढ़ावे में हमनी के कवनो परेशाली नइखे। बाकिर महतारी–बाप भइला के नाते, तोरो परेशानी के बारे में सोचल, हमनी के धरम तऽ बनेला नूं?"

– "आपन धरम–करम अपना लगहीं धइले रहऽ लोग। हम बनारसे में नाँव लिखाइबि, ना तऽ ना लिखाइबि, बस।"

– "सुनऽ तानी जी! जाये दीं, रउए नरम हो जाईं। एकर दिल जनि तूरीं। कुल्हि ले–दे के एके त बेटी बिआ।"

– "तूँ नइखू जानत एह जिद के नतीजा।"

– "जइसे नौ ओइसे छौ। कुल्हि पार लागि जाई। भगवान पर भरोसा राखीं।"

– "अब तूँ जानऽ तोहार काम जाने। हमरा तऽ एकर लच्छन नीमन नइखे बुझात।"

– "अपना जनमला के बारे में बाउर ना सोचल जाला। भगवान जवन करिहें, तवन निमने करिहें।"

घरनी के बात मानि के श्रीकांत के चुप हो जाये के परल। दोसरहीं दिने मुहल्ला भर में खबर फइल गइल कि श्यामली बनारस में पढ़े जात बिया, उहाँ से पढ़ाई कइ के ऊ बड़का डाक्टर या अफसर बनि के लवटी। बनारस सी.एच.एस. में एडमिशनो हो गइल। पढ़े में तेज रहबे कइल, एहसे हास्टल मिले में कवनो परेशानी ना आइल। ओकर सब व्यवस्था कऽ के दूनों बेकति जौनपुर लवटि अइले। घर में घुसते श्रीकांत कपार पर हाथ धऽ के सोचे लगले कि पढ़ाई, हास्टल, आ श्यामली के भारी पाकिट खर्चा के इंतिजाम कइसे होई? ओकर देखरेख, निगरानी कइसे कइल जाई? का जाने कइसन संग–साथ मिली ओकरा? अतने देरी में शिवानी चाय बना ले अइली आ उनुका ओरि बढ़ावत पूछि बइठली– "घरे अवते कवना सोच में परि गइनी?"

– "ईहे सोचऽतानी कि तहरा मनसोख बेटी के गुजारा कवना घर में, आ गइसे होखी? तूँ जानत बाड़ू नू कि लइकिन के दोसरा घरे जाये के होला। एकर तुनुकमिजाजी के सही?"

– "अबहीं लइका बिया, समय अइला पर सुधरि जाई। तनी अपनो बचपन इयाद करीं।"

– "हमरा खूब इयाद बा आपन बचपन। बाप–महतारी का ओरि से दीदिया। हमरा पर चाँप चढ़ले रहत रहे। श्यामली अब सोरह बरिस के हो रहल बिआ। तनिको ऊँच–नीच हो जाई, तऽ केकर जग–हँसाई होई?"

– "का परपंच लेके बइठि गइनी? कबो तऽ नीमन सोचल करीं।"

– "लऽ, ना सोचबि, बाकिर बढ़लका खर्चा कहाँ से आई? ई तऽ सोचहीं के परी नू। एक लगे रहि के पढ़ावे में ढेर खरच ना परित। अब तूहीं बतावऽ, हास्टल में राखि के पढ़वला पर कम खरच बइठेला? जनाता कि इमानदारी के कंठी उतारि के फेंकहीं के परी। एह तनखाह से गृहस्थी बचावल ना पार लागी। बदली करे वाला अफसर के सीटो पर तऽ अफसर के भारी पूजा चढ़ावहीं के होई नू।"

डूबत–उतरात श्रीकांत के चाय ठंढ़ा गइल। शिवानी जब टोकली, तब जाके एक साँस में चाय हलक के नीचे उतारि गइले। तब खाली कप कटोरि के शिवानी किचेन में चलि गइली खाना बनावे। मानसिक आ शारीरिक थकावट का मारे थोरिके देरी में उनकर आँखि मुना गइल। दसो मिनट ना बीतल होई कि नाक बाजे लागल। ढेर दिन के बाद अइसन नीनि लागल रहे। ऊ तबे जगले, जब पत्नी के आवाज कान में परल– "आईं, आके खा लीहीं।"

श्रीकांत वर्मा के गिनजी जौनपुर मंडल के सबसे इमानदार इन्जिनियर में होत रहे। उनकर सिद्धान्त रहे कि ना ऊपरवार खाइबि ना खाये देबि। एही के चलते एक स्थान पर ऊ ढेर समय तक ना रहि पावत रहले। जौनपुरो से तबादला होखहीं वाला रहे। एहीसे सोचत रहले कि जब बदली होखहीं के बा तऽ, काहें ना बनारसे मंडल में करा लिआव? बाकिर उनकर मंशा पूरल, उनका दरमाहा से तऽ संभव ना रहे। हार–मानि के सिद्धान्त से समझौता करहीं के परल। पुरान एफ.डी. तुरवले आ पूजा चढ़वले तब जाके काम बनल। बनारस स्थानान्तरण के आदेश जारी हो गइल आ खुसी–खुसी

हफ्ता भर के भितरे बनारस में ज्वाइनों कऽ लिहले। काल–भैरो आ भोले बाबा के दरसन कऽ के परसादी बँटले आ श्यामली खातिर परसादी लेके हास्टल पहुँचि गइले। ओकरा ओर बढ़ावत बनारस ट्रान्सफर वाला शुभ समाचारो सुना दिहले। बाकिर समाचार सुनि के श्यामली के चेहरा पर कवनो प्रतिक्रिया ना भइल। उलटे ऊ गंभीर हो गइलि। आजादी में बाधा परे के अंदेशा जवन हो गइल रहे। सी.एच.एस. सरकारी स्कूल तऽ जरुर हऽ, बाकिर खर्चवा प्राइबेटे नीअर लागे। नाहिंओं नाहीं तऽ कुल्हि मिलाके दस हजार रुपया महीना देवहीं के परत रहे। परिवार में रहि के पढ़वले से कम से कम हास्टल के खर्चा तऽ बाँचिये जाइत। ई बात श्यामली के समुझ में आवे तब नू? हास्टल के जिनिगी, घरे रहि के ना नू भेंटाई।

श्यामली नाँवें के श्यामली रहे। गोराई आ नाक–नक्सा देखते बने। सुंदरता में सइगो लइकिनि में अकेले रहे ऊ। छरहरी, फुर्तीली अउर लमछर भइल ओकरा सुंदरता में चार चाँद लगावत रहे। एही से अपना सोझा ऊ केहू के तरजीह ना देव, अँइठत चले। एक तऽ तितलउकी आ दोसरे नीमि चढ़ल। बबुनी लाड़–प्यार में पहिलहीं से कपारे चढ़ल रहली, हास्टल में आइके अउरु छुट्टा बनि गइली। बड़–बड़ घर के लइका–लइकिन के साथो मिलि गइल, जवन आगि में घीवे के काम कइलस। ओकनी के घरे से पइसा आवे में कठिनाई ना रहे। ओकनियन के दाजा–हूंसी में श्यामलिओ बहत गइली। कहियो जनमदिन, कहिओ बोटिंग तऽ कहिओ आई.पी. मॉल के चक्कर लागले करे। बाप का करसु? ओखरी में मूड़ी परि गइल, तऽ कुटइबे नू करी। हास्टल में खान–बेखान के ड्रेस, सैर–सपाटा, खान–पान आ फजूल खर्ची पर कवनो रोक ना रहे ओकरा। तुलसी बाबा ठीके लिखले बानी कि– "को न कुसंगति पाइ नसाई। रहइ न नीच मते चतुराई।" कुसंगति में परि के बड़–बड़ लोग के बुधि फेल हो जाला, आ कुराह चले लागेला लोग। अइसना में श्यामली के का बिसाति रहे कि ऊ कुप्रभाव से बाँचि जाउ? श्रीकांत नोकरी करसु कि बेटी के रखवारी करसु? बनारस में रहिओ के कंट्रोल कइल मुश्किल होत रहे। छुटिओ का दिने कवनो बहाना बना के ऊ (श्यामली) घूमे निकलि जाउ। महतारी–बाप आपन मुँह लेले बैरंग लवटि जासु। ओह लोगन के सुख–दुख से ओकरा कवनो वास्ता ना रहे। गार्जियन तबे याद आवसु जब पइसा के जरूरते परे। ई सब हरकत देखि देखि श्रीकांत मने मने दुखी रहे लगले। करसु तऽ का करसु? उनका लागे कि ऊ जीवन के बाजी हारि चुकल रहले। तबो मियाँ–बीबी सोचत रहले कि कइसहूँ साल पूरा कइ के पढ़ाई बन करा दिहल जाई आ नीमन घर–बर खोजि के हाथ पीअर कऽ दिआई। एही सोच में परल पइसा जुटावे में बाप परेशान रहे, बाकिर श्यामली के मउज–मस्ती में कवनो कमी ना भइल।

कसहूँ रोवत–गावत ईहो साल बीतल। फाइनल के रिजल्टो आ गइल। श्यामली प्रथम श्रेणी में पास हो गइलि। परीक्षा पास भइल सुनि के हास्टल के खर्चा भेजे से छुटकारा मिलि गइल। एहसे बाप–महतारी दूनहूँ जाना के मन खुश भइल। बाकिर ई खुशी ढेर दिन तक ना रहे पावल। हास्टल छोड़े से पहिलहीं, दू गो सहेलियन के संगे मुम्बई में नोकरी करे के प्लान सेट हो गइल रहे। एह बात के सुनते श्रीकांत के मंशा पर पानी फिरि गइल। कवनो रोक–छेंक काम ना आवे। समुझा बुझा के महतारिओ हारि कइली, बाकिर श्यामली सुने के तैयार ना रहे। शिवानी एक बेर फेरु प्रेम से दुलारत कोशिश कइली– "देखु बेटी। हमनी कीहाँ बेटिन्ह के ढेर पढ़ावे भा नोकरी करावे, के रेवाज नइखे। बस शिक्षित बना के डोली पर बइठा दिआला। ससुरा गइला पर ऊ लोग आगा पढ़ावे, चाहे नोकरी करवावे। अपना ससुराल के अनुसार, चलहीं के परेला।"

– "ई कुल्हि हमरा के जनि सुनाउ माई। जमाना कहाँ से कहाँ चलि गइल। आ तूँ अभी पुरनके दुनिया में बाडू?"

– "ठंढा मन से तनी सोचऽ बेटी। दुनियाँ आ समाज का कही हमनी के?"

– "दुनियाँ तऽ दूनो ओरि चलेला। हमरा के ओकर डर मति देखावऽ। हम कहि देनी कि नोकरी करबि, तऽ कइए के रहबि।" ऊ फेर जिदियाइ गइल।

– "आछा, ठीक बा। बाकिर ई बतावऽ कि बिना दउड़ले–धूपले, बिना खरचले नोकरी मिलत बा? ऊ जुटाईं जा कि तोहरा बियाह खातिर रुपया जुटाईं जा?"

– "अरे माई! गाँव के खेतवा कहिआ कामे आई? खेती के करी, पापा कि हम?"

– "बाप–दादा के पुस्तइनी धन पर आँखि ना गड़ावल जाला। खेत बेचला पर सउँसे गाँव थू–थू करे लागी। बुजुरुग लोगन्हि के आत्मा कलपे लागी।" धर्मभीरु धिरवली।

– "गाँव, समाज आ दुनियाँ, केहू, केहू के खरचा चलावऽता? हमार चीज, हम चाहे जइसे

उपयोग ओकरीं। सुनऽ! हमार हिस्सा बेचि के दू लाख रुपया के इंतजाम करवाइ दऽ। आजु के बीसवाँ दिने पवन–एक्सप्रेस में रिजर्वेशन हो गइल बा। हम बम्बई जाइब, उहवाँ हमरा नोकरी के बेवस्था हो जाई।”

केकरा में दम रहे जे एह हुकुम के खिलाफ जा सके। गाँव के खेत बिका गइल। रुपया पवते, श्यामली का मनचाहा योजना के पाँखि जामि गइल। दू दिन के भीतर सब तैयारी हो गइल। निश्चित दिने पर दू गो गर्ल–फ्रैंड आ दू गो ब्वाय फ्रैंड के संगे श्यामली मुम्बई चलि गइल, नोकरी दिआवे के बात लइकवे चलवले रहलन सऽ। प्रोग्राम के अनुसार अगम–सुगम के मामा के घरे डेरा डलाए के चाहत रहे, बाकिर जगह के कमी बताके होटल में कमरा बुक हो गइल। मुम्बई जइसन महँगा सिटी के बतिये दोसर हऽ। सुंदर–सुंदर तीन गो लइकी आ दू गो हैंडसम जवान–जवान छोकड़ा, जवना गोल में होखसु, ओह ग्रुप के का पूछे के? दूनो लइका आ लइकी, श्यामली के पइसा पर खूब मउज–मस्ती करे लागल लोग। नोकरी दियावे के तऽ बहाना रहे। श्यामली जब कभी नोकरी के बात उठावे, तऽ अगम–सुगम उनके ले जाके कवनो बड़ आदिमी के सोझा खड़ा करा दें, जवन ओकरा रूपे के सउदा करे लागे। कबो दिन, कबो रातियो खा जाये के परे। एही तरी, बाकी दूनो लइकिनियनो के ईहे राह पर चले के परे। ईहें तक ना, नया नया दोस्तन के जमावड़ा होटले पर शुरू होखे लागल।

नोकरी करे वाली लइकिनि के बिना दहेज के बियाह हो जाये के भ्रम, बेमाथ के जिनिगी जिये के उत्कट लालसा आ नारी स्वतंत्रता के प्रति अंधभक्ति, श्यामली के कमजोरी बनि गइल रहे। एकरा पूर्ति खातिर ऊ कुछओ करे पर उतारू रहे। कवनो कीमत पर ओकरा नोकरी चाहत रहे। एही कमजोरी के नाजायज फायदा उठा के, दूनो लइका (अगम–सुगम) ओकर शोषण करे लगले सऽ आ अपना दोस्तनो के नेवते लगले सऽ। ई क्रम तब तक चलल, जब तक श्यामली शारीरिक आ आर्थिक दूनो से दिवालिया ना हो गइलि। ‘धोबी के कुत्ता ना घर के ना घाट के’ वाली कहाउति के शिकार हो गइल रहली श्यामली। तनिको टेढ़ रुख कइला पर, जान से हाथ धो देबे के धमकिओ मिले लागल। अइसना में, चुपचाप जान लेके उहवाँ से निकलि अइला के अलावा, कवनो दोसर उपाइ ना रहे। दूनो सहेली पहिलहीं आपन जान गँवा चुकल रहली सऽ। आजादी के जोस आ दुनियाँदारी के अनुभव के आगा श्यामली के घर वापसी तब भइल, जब ओकरा साथ से नेही–छोही बाप के साया हट चुकल रहे।

अब उचाट घर रहे आ बेमाथ के महतारी। ●●

लोक राग

✍ **कन्हैया पाण्डेय**

जेठ के महिनवा में, झुरुके पवनवा,
मड़इया नीक लागे...
आहो छोटी ननदी।

तपि जाला घमवा से, कोठवा-अटरिया
झाँइ-झाँइ करे लागे, दिन-दुपहरिया
कुहू-कुहू बोले जब, काली कोइलरिया
सँवरिया नीक लागे, आहो छोटी....

ठीक निसु रतिया बलमु माँगे पनियाँ
कहें, ‘चलऽ अँगना बिछावऽ खाट धनियाँ’
पियवा के सँग सूतीं, हम अँगनइया
जोन्हइया नीक लागे, आहो छोटी....

जाले लसिआइ जब, लस-लस देहिया
रसे-रसे बहे लागे पुरुबी बयरिया
देंहि करे गनगन सुतते सेजरिया
जम्हइया नीक लागे, आहो छोटी.... ●●

❑ आ.विकास कालोनी, बलिया

दू गो कविता

गुरुविन्द्र सिंह

(एक)

सगरी टहलिया से, नीक नेतागीरी
हमरो के छोड़ऽ बलमु अब फीरी।

चूल्हि अउर चउका में मुँहवाँ धुँआँला
डरे-लाजे कुछऊ न कहले, कहाला
बइठल जेठानी मोर खाँय पँजीरी।

निकका चिझुइयन के जीउ तरस जाला
तियना ले कबहूँ ना सुबहित भेंटाला
भितरा से हूलि उठे, आवे तिरमीरी।

मोरा ले नीक बिया भुअरा के माई
लागल बा सेवा में लउँड़ी आ दाई
मरदो परधान बा, करेला दादागीरी।

बियहे के बेरिये से असरा लगवनी
साध मोर एकहूँ ना, रउवा पुरवनी
तहरा भरोसा ले नीक बा फकीरी।

(दू) बदलत समय में...

भइले परदेसी गाँवें लटकल बा ताला।
घरवा बुझाय जइसे ढहत शिवाला !

टुकी-टुकी खेतवा भइल बँअवारा।
खेती का भरोसे इहाँ होई ना गुजारा
अपुसे में निकलेला रोज लाठी-भाला।

जिविका क साधन, बँचल कहाँ गाँव में
लागि गइल पहिया पलायन के पाँव में
आवे एगो गाँवें, सँगे चारगो ले जाला।

भितियो प' जामि गइल बर अउरी पीपर
साँय-साँय करे लागल बहरी से भीतर
भूत-बैताले बाटे बनल रखवाला। ●●

❑ आर.के. पुरम, नई दिल्ली

हमरा के बचा लीं ना

प्रो. हरेश्वर राय

रात के डर सतावत बा सबका के बता दीं ना ।
सुरुज के ठेकाना के हमरा के पता दीं ना !

पूस के महीना में जेठ अस तपन बढ़ गइल ।
फागुन के महीना के नेवता भर पठा दीं ना !

अँसुवन के नदिया में गला तक डूबल बानी ।
अक्षत भर दुआ देके हमरा के बचा दीं ना !

मउअत त डटल बिया हर घर के दुआरी प ।
जीवन के पता तनिकी हमरा के भेजा दीं ना !

अँखियन के नया सपना होंठन के हँसी दे दीं ।
चन्दन के सुगंधी से हमरा के सजा दीं ना ।।

●●

❑ बी-३७, सिटी होम्स कालोनी,
जवाहरनगर सतना, सतना, म.प्र.

दू गो ग़ज़ल

✍ शशि प्रेमदेव

(एक)

नेहि बरिसल, तरी हो गइल!
धूरि-जिनगी धनी हो गइल!
पाँव गुइयाँ क- जसहीं परलू
पत्थरो मखमली हो गइलू!
आँखि में आँखि जब डालि के
ऊ हँसल... झुरझुरी हो गइल!
हमके पौंरे सिखावे बदे
नार से ऊ नदी हो गइलू!
गोड़ धरती प' कइसे धरीं
मनू उड़न-तश्तरी हो गइलू!
लग गइलू नाजे केकर नजर
का रहल, का 'शशी' हो गइल!

(दू)

रूप के जाल से अपना के छुड़ाई कइसे?
उनूका चेहरा से केहू आँखि हटाई कइसे?

काठ कऽ होखे कि सोना क बनल होखे ऊ
प्रीत बागी हऽ... सिन्होरा में समाई कइसे?

फूल के बान्हि के राखल त' इहाँ बा मुमकिन
गंध का पाँव में जंजीर डलाई कइसे?

लाख ऊ देव परिन्दा के दिलासा बाकिर
फेंड़ खोता के बवण्डर में बचाई कइसे?

हम त' दरियाव में डूबे बदे रहलीं राजी
आ गइल हाथ में साहिल क' कलाई कइसे?

गाँव में गाँव नियर कुछुवो कहाँ बा बाँचल
गाँव के गाँव कहल जाव, ए भाई, कइसे?

घूँट अमूरित क जदी नइखे ऊ पियले, ए'शशी'
खाड़ हो जात बा गिर-गिर के बुराई कइसे? ●●

❑ प्रवक्ता, कुं.सिंह इ.का., बलिया

दू गो ग़ज़ल

अशोक कुमार तिवारी

(एक)

देव दानव भा कुत्ता कमीना भइल।
का वजह आदमी-आदमी ना भइल।

घर में जूरल ना दुइ जून रोटी मगर
बात में बिगहा बावन पुदीना भइल।

ढेर दिन से रहे काँच के ढेर में,
का पता आज कइसे नगीना भइल।

बैर आपुस में राखे सिखवलस त ना,
कांहें दोषिहा अयोध्या मदीना भइल।

जान लीहल मुआवल सहज काम हऽ
जुर्म पर काहें चौड़ा बा सीना भइल।

आज बाटे भले मुँहफेरउवल त का,
ढेर दिन साथ में खाना-पीना भइल।

दुश्मनी साध के अब तलक का मिलल?
साथ छूटल, कठिन आजु जीना भइल।

(दू)

खउलत जरत सवाल के दीही जबाब के?
मुल्जिम के हाथ में पड़ल, खाता हिसाब के।

एगो कसाब चलि गइल, अफसोस बा बहुत,
केतने लो अबहीं जिन्दा बा, काका कसाब के।

उस्ताद बनिके बइठल बा अगली जमात में
जे आज तकले खोलल ना, पन्ना किताब के।

लोगन के दुखोदर्द के, एहसास का करी,
ए.सी. में लेत बा जे, चुस्की शराब के।

आपन खियाल खुद से, अपने रखल करीं
के जाने मिलो ना मिलो, फुरसत जनाब के।

पँखुरी अउर सुगन्ध के, मालिक हवे हजूर
माली बदे त बा बनल, काँटा गुलाब के।

हर चीज खाके घोंट के, अफड़त चलल गइल
चाहत बा उनुका पेट के, झटका जुलाब के।

●●

“कुरुवंश” महाकाव्य से...

कर्ण-श्रीकृष्ण संवाद

विजय शंकर पाण्डेय

कइसन माई जवन, जनमते
नदी-धार दिहली बहवाय
माई त ‘राधा’ बाड़ी जे
लिहली हमके गोद उठाय।
हम ‘राधेय’ भला कुन्ती के
कइसे माता मानीं?
अपमानित-लांछित हर छिन
मनवाँ में उभरे ग्लानी।
रंग-भूमि में, ऐरा-गैरा-
बन अपमानित भइलीं
राजबंश के भरल-सभा से
हम दुत्कारल गइलीं।
धन्य रहें दुर्जोधन
हमके आपन रिनी बनवलें
अंगदेश के राज देइ के
आपन मित्र बनवलें।
द्रुपद-सभा में भइल निरादर
द्रुपद-सुता के कारन
ओहू घरी मित्र दुर्जोधन
कइले दुःख-निवारन।
कतना कहीं घाव केतने बा,
पीर सही ना जाय।
दुर्जोधन-रिन के शरीर
उनहीं पर देब लुटाय!
आज बनीं भाई अर्जुन के
कइसे, तुहीं बतावऽ।
हँसी लोग माई कुन्ती पर
कइसे ना, समझावऽ!
चलऽ मान लिहनी कि पाँडव
हउवें हमरे भाई।
तबो मित्र के छोड़ि, मित्रता
केतना अपजस पाई?
मिली नरक भा सरग
जिनिगिया दुर्जोधन के बाटे।
लुटी प्रान उनहीं पर
हमरो एतने कहना बाटे।
दिहलीं दान मातु कुन्ती के
सब भइयन के प्रान
अर्जुन या हमरा में केहू
देई आपन जान।
कुंडल-कवच कूल्हि दे दिहलीं
रच्छा बदे न रखलीं
जवन अधर्म-धर्म बा ऊहो
मित्रे खातिर भखलीं।
क्रोध, अहं बश कइलीं ओकर
हमके बा पछतावा,
रहि-रहि ऊहे फूटत बाटे
हृदय, ग्लानि के लावा।
‘चीरहरन’ के दर्शक रहलीं
आन्हर बनल सभा में
इहो पाप बा भइल बैर-वश
हमसे भरल सभा में।
भोगबि पाप-अधर्म-करम-फल
दुर्जोधन ना बँचिहें।
माधव, तोहरा दण्डनीति से,
धरमेराज बिरजिहें।
सोच-समझ सब, जुद्ध लड़ब हम
हमहूँ प्रान गँवाइब।
मित्र बदे एह धरम-युद्ध में
आपन सीस बढ़ाइब।
विदा समय बा बिनती माधव
छिमा कर्ण के करिहऽ!
अपना कृपा-दृष्टि से कान्हा
हृदय-ताप के हरिहऽ। ●●

‘गुंजन कुटिया’, नारायणी विहार,
चितईपुर, वाराणसी-५

मन कराह उठल

सीताराम पांडेय 'प्रशान्त'

सड़क किनारे
कोठी के पीछे
झाड़ी के बीचे
गीध-कउवा
लपटल बाड़ेऽ सऽ
एकाध गो कुकुरो ओने
झपटल बाड़े सऽ
नजर पड़ते हमार
मुँह से आह निकलल
धीरे-धीरे डेग हमार
ओनिए बढ़ल
देखनी, एगो बूढ़ी औरत
जेकर बड़ा रहल सोहरत
लोग खूब सराहत रहे कबो ओके
आजु पीड़ा से कराहत रहे
साँस अबहीं चलत रहे ओकर
मुँह प' कान लगवनी
त ऊहाँ के सुनवनी
हम दू बहिना रहनी
बूढ़ी कराहत कहली
ऊ गइली पाकिस्तान
हम रह गइनी हिन्दुस्तान
ऊ बूट के नीचे दबल बाड़ी
हम फूट के बीचे पड़ल बानी!

हम पुछनी! रउवा के हईं?
बोलली- हम हईं भारत के आजादी
अब देखल नइखे जात देस के बरबादी
भस्टाचार-बलात्कार
घूस के चमत्कार
बेईमानी, व्यभिचार
लूट-पाट के बाजार
मंदिर-मसजिद लड़त बा
जाति से जाति भिड़त बा
ई सब देखल नइखे जात
हमरे सोझा होता उत्पात
सोचनी चलीं आज आपन
जाने दे दीं
रहिए का गइल
देहिए दान दे दीं
कहत-कहत उनकर
साँस छूट गइल
एने हमार सपना टूट गइल
पंथ निरपेक्ष लोकतांत्रिक
समाजवाद के भलहीं लोग सराहे
एह औरत के पीड़ा देखि
मन कराह उठल। ●●

❑ रामदहिनपुरम्, बलिया, मो. 9335914411

कइसे पढ़बू?

रामयश 'अविकल'

लगल धरती-अकसवा में पहरा ए चिरई
कइसे भरबू उड़ान तूँ सुनहरा ए चिरई?
हाथे इस्लेट ना, पलेट बा धरावल
दुपहर का खिचड़ी में मन अझुरावल
पढ़बू क, ख, ग, घ कब तूँ, ककहरा ए चिरई?
भरबू उड़ान त नोचाइ जाई पँखिया
चाँय-चाँय करबू त सुनी नाहीं दुनिया
रहि जइबू अँगने से दुअरा ए चिरई!

गिधवन के नजरी में गड़े के बा तोहके
लड़े के बा बढ़ के आ चले के सँभर के
तबे जइबू तूँ बहरा-लमहरा ए चिरई।

●●

❑ पकड़ी, आरा (बिहार)

गीत

✍ शिवजी पांडेय 'रसराज'

रोज भरमावेलऽ,
कम्पा लगावेलऽ!
चुटकी भर दाना तूँ,
फेंकि के फँसावेलऽ!
कवना दुखे हतेलऽ,
परान बंजारा!!

चहकत चिरइयन के,
जान लेलऽ काहें!
सुति-उठि हतला के,
ठान लेलऽ काहें!
चमकी ना एसे तहरा,
भागि के सितारा!!

फूल-फर अनजा के
खान बाड़ी धरती।
सभे खाती एकहीं
समान बाड़ी धरती।
जिभिया छुदुर बढ़े,
रचेलऽ पँवारा!!
नदी-ताल-पोखरा,
पहाड़-वन बाटे।
जीउ के जोगावे खाती,
लाख धन बाटे।
खोजऽ ना तूँ इहें कहीं,
पा जइबऽ सहारा!!

गछिया के निचवा तूँ
तनकी छहाँ लऽ।
कम्पा पर भर मन,
लासा लगा लऽ।
सोचऽ हम्हूँ हईं कवनो,
अँखिया के तारा!! ●●

❑ ग्रा.+पो.-मैरीटार, बलिया, 277202।

बिरवा दहेज के

✍ दीपक तिवारी

दिन पर दिन ई पनकत बाटे बिरवा दहेज के
लीही ना तऽ छोट, कहाई डर बाटे इमेज के!

एही चलते गाँव-शहर में होखत बा अपराध
मर-मुवा के बेटी, तब्बो पूरत नइखे साध
गैर के बेटी, लोग कहाँ अब राखत बा सहेज के।

बिना रोक टोक के सबही, लेता एकर स्वाद
केहू नइखे चाहत एपर, तनिको होय विवाद
लोग पटावत बाटे सउदा आपन जीव-अँगेज के।

धन अउरी उपहार सेंत में भरपूरे सब चाही
लइका वाला धन लिहले पर रिस्तो-नात निबाही
लेन-देन सब तय हो ताटे बिचवइया के भेज के।

लागत बाटे अब लोगन के खून हो गइल पानी
नस-नस में घुल दउरत बाटे सैतानी-बइमानी
दरद बुझाला ना अब इहवाँ, कौनो काठ-करेज के।

बेटी ले बढ़ि के समाज में बाटे एकर चर्चा
कवन बाप अपना बेटी पर, कइलस केतना खर्चा
दान-पुन्न सब दिहलस, सँग में, प्रानो दिहलस तेज के।

●●

एगो छतनार 'कथा-वृक्ष' के अमर-कथा

भगवती प्रसाद द्विवेदी

आजु भोजपुरी के अराजक स्थितियन के देखियो–परखि के केहू जब जबान खोले के जरूरत नइखे बूझत, तब एगो अइसन शख्सियत के सहजे इयाद हो आवत बा, जे साफ–साफ आ साँच लिखे–बोले में कबो गुरेज ना कइल। माने, जइसन भीतर, ओइसने बहरियो। जइसन लेखन, ओइसने आचरन। ऊ साहित्यकार रहलन बरमेश्वर सिंह, जे लगातार बेमारी से जूझत असमय काल कवलित हो गइलन। हमरा मानस–पटल पर नाचत बा– "महाशिवरात के ऊ दिन, जहिया दिल्ली जाए खातिर बरमेश्वर जी पटना आइल रहलन आ सूचना मिलते हम कोलकाता से आइल कथाकार विनय बिहारी सिंह, कवि अनिल विभाकर, राजीव कुमार का सँगें भेंट करे पहुँचल रहली। गोड़ आ मुँह अतना सूजल रहे कि ऊ सहजे चिन्हात ना रहलन। ओहू हाल में ऊ भोजपुरिया समाज आ साहित्ये–संस्कृति के चर्चा करत रहलन। ओकरा पहिले जब आसिफ रोहतासवी, दिलीप कुमार, राजीव कुमार के लेके हमनीं सभ उन्हुका गाँवें गइल रहलीं जा, त उन्हुकरा सेहत में बहुत सुधार नजर आइल रहे आ ऊ आपन कई गो रचनो सुनवले रहलन। फगुआ का दिनहीं ऊ दिल्ली से लवटल रहलन, उन्हुकर तबियत ढेर खराब हो गइल रहे आ आखिरकार ऊ एह निठुर दुनिया से कूच कऽ गइल रहलन।"

अस्सी के दशक में बरमेश्वरजी से ओह घरी भेंट भइल रहे, जब ऊ कटिहार से आपन तबादला कराके पटना आइल रहलन आ कथाकार मधुकर सिंह जी उन्हुका के लेके हमरा दफ्तर में पहुँचल रहनीं। मधुकरे सिंह जी बतवले रहनीं कि बरमेश्वर जी का लगे कहानी के नीमन–नीमन प्लॉट रहेला आ उन्हुके प्लॉट पर रचाइल उहाँ के किछु कहानी बड़ा चर्चित भइली सऽ। बरमेश्वर जी ओह घरी अपना के पाठक बतवलन आ रचनन पर चिट्ठी–पतरी लिखे के जिकिर कइलन। हम सुझाव दिहलीं कि जब उन्हुका लगे अतना बढ़िया प्लॉट बाड़न सऽ त खुदे कहानी लिखल शुरू करेके चाहीं। हम उन्हुका से अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन से जुड़े के निहोरा कइलीं आ ऊ सहर्ष तेयारो हो ग इलन। हमनीं दूनों भारत सरकार के एके महकमा में रहलीं जा। कविवर जगन्नाथ जी का सँगे मिलिके हम एगो साहित्यिक–सांस्कृतिक संस्था 'अस्मिता' बनवले रहलीं, जवना के तहत विभागीय, पटना के आ बहरी से आइल रचनाकारन के समागम होत रहे। आस्ते–आस्ते 'अस्मिता' के जलसन में आवे वाला साहित्यकारन से बरमेश्वरजी के परिचय आ प्रगाढ़ता होखे लागल आ कविता–कहानी लिखे के सिलसिला चले लागल। जब लखनऊ से प्रकाशित 'अभ्यंतर' के बिहार के कवियन पर केन्द्रित विशेषांक हमरा अतिथि संपादन में छपल, त ओह में बरमेश्वरोजी के कविता शामिल भइली स। भोजपुरी कविता के पहिल पत्रिका 'कविता' के जब शुरुआत भइल, त बरमेश्वरोजी के ओह से जोड़ल गइल, बाकिर आगा चलिके ऊ खुद के अलग कऽ लिहलन। अइसहीं अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के कार्य समिति आ प्रवर समिति से जुड़ि के ऊ खूब बढ़ि–चढ़ि के हिस्सा लिहलन, बाकिर आगा जाके जब ओहू से मोहभंग हो गइल, त खिलाफत

में पत्रिकन में खुलिके व्यंगो लिखलन। बड़ा अक्खड़ आ फक्कड़ सुभाव रहे उन्हुकर। हर हाल में रचनात्मक माहौल बनावे के आ नवहीं पीढ़ी के जोड़के ऊ पुरजोर कोशिश करत रहलन। अपना गाँव धनडीहा के नवकी पीढ़ि के हौसला आफजाई करत ऊ उहवाँ दुर्गापूजा, सरस्वती पूजा में कवि–सम्मेलन, गोष्ठियन के आयोजन करवावसु आ पटना, आरा, बक्सर के साहित्यकारन के बोलाके यादगार जलसन के मार्फत साहित्य–संस्कृति का प्रति अनुकूल माहौल बनावसु। हमनीं के त दाँत काटल रोटी के नेह–नाता रहे आ एक–दोसरो के काज–परोजनों में बढ़ि–चढ़ि के भागीदारी होत रहे। रिटायरमेन्ट का बादो हमनीं के फोन पर रोजे बतकही होखे आ एक–दोसरा का सँगहीं, साथी–सँघतियन के गतिविधि से वाकिफ होखीं जा। बाकिर ऊ ई दुनिया छोड़िके दगाबाजी कऽ दिहलन।

बिहार के तत्कालीन शाहाबाद जिला के कोइलवर प्रखण्ड में सोन नद के पच्छिमी तिरवाहीं पर बसल गाँव धनडीहा में 24 जनवरी, 1949 के जनमल बरमेश्वरजी ताजिनिगी होत भोरे सोन में बेनागा नहासु आ पसिंजर गाड़ी से डेली पसींजरी करत, पटना पहुँचसु। साँझ खा फेरु गाँव खातिर वापसी– 'फेरु बैतलवा डाढ़ पर' नियर। गाँव उन्हुका भीतर रचल–बसल रहे। एह से उन्हुका रचनाकर्म के बहुलांश गाँवे पर केन्द्रित होत रहे। भोजपुरी में लीखि से अलगा हटिके समाकालीन जीवन से जुड़ल कहानी सिरिजेवाला जवन किछु गिनल–चुनल महत्वपूर्ण कथाकार बाड़न, ओह में धारदार सिरिजना करे वाला रचनिहार रहलन बरमेश्वर सिंह। उन्हुकर 2009 में छपल एक दरजन कहानियन के संग्रह 'कथा–वृक्ष' आ 2011 में प्रकाशित 'अमर कथा' खास तौर से मूल्यांकन के माँग करत बाड़न स। ओकरा पहिले संग्रह के कहानी पत्र–पत्रिकन में छपि के चर्चित हो चुकल रहली स। बरमेश्वरजी के दृष्टि–फलक व्यापक रहे आ ओह में विचारपरकता के गहिराई साफ झलकत रहे। कथाकार का लगे कथा कहे के कौशल 'किस्सागोई' मौजूद रहे। बाते–बात में कब कवनो बतकही कहानी के रूप ले लेत रहे, पढ़निहार पढ़िके चिहा जात रहे। सामाजिक सरोकार से लैस कथन में ऊ प्रतीकात्मकतो के सहारा लेत रहलन। जगह–जगह व्यंगपरकता के चासनी पाठकन के उदबेगतो रहे।

'कथा–वृक्ष' के एगो मार्मिक कहानी बिया 'तृष्णा', जवना में निचिला तबका के एगो मजूर के जिनिगी के त्रासद चित्र उकेरल गइल बा। बन्हुआ मजूर रामपदारथ अपना मलिकाइन के रेंगनी पर पसारल चोटी देखिके ललचा जात बा आ काफी ऊहोपोह का बाद ओह चोली के चोरा के अपना मेहरारू के दीहल चाहत बा। तलहीं एगो कुतिया चोली के नोचि–चोथि के धऽ देत बिया आ ओकरा मन के टिसुना मने में झवाँ जात बा। एकरा से आगे बढ़िके 'भूत' एगो अइसन प्रतीकात्मक कथा बा, जवना में बेवस्था में बदलाव के मनःस्थिति बनावे के पुरजोर कोशिश कइल गइल बा। एगो गहिर घाव करे वाली व्यंग–कथा 'खोल' में धरम–अध्यात्मक के खोल ओढ़िके भ्रष्ट आचरन में डूबल शिवशंकर पंडित के मार्फत कथाकार आजुकाल्ह के समाज में रक्तबीज नियर फइलल–पसरल भ्रष्ट बेभिचारियन के परत–दर–परत बेनकाब कइले बा। कइसे कवनो महमूलियो घटना साम्प्रदायिक उन्माद आ जातीय हिंसा के कारन बनि जाला, एकर बखूबी खुलासा 'खोपड़ी' शीर्षक कहानी में भइल बा। संग्रह के पहिल कहानी दलित विमर्श के एगो हिरदयविदारक कथा बा 'सपना', जवना में ठीकेदार साहेब के बाबूजी के सराध में मुसहर के लरिकन के पूड़ी–मिठाई भेंटाए के सपना कबो पूरा नइखे होत आ गारी–फजीहत का बादो मारहे–माठा पर सन्तोष करेके पड़त बा। शीर्षक कहानी 'कथा–वृक्ष' एगो प्रतीकात्मक कथा बा। एह कहानी के साखी बा पीपर के एगो फेंड़, जवना का नीचे वर्ण–संघर्ष के वर्ग–संघर्ष मानिके चले वाला भटकाव के शिकार मनई, गरीब– शिवबालक के मउवत का घाटे उतारिके सवर्ण सामंतवाद के खिलाफ जेहाद के शुरुआत घोषित करत बा आ तबे से ऊ पीपर (कथा–वृक्ष) भुतहा हो जात बा। 'अस्त्र', 'नाक', 'नक्शा', 'दुःख', 'धोखा', 'दयालु' शीर्षको से सामाजिक सरोकार से गहिर जुड़ाव राखे वाली कहानी बाड़ीं स।

'अमर–कथा' बरमेश्वर जी के दोसरका संग्रह बा, जवना में 2001 से 2011 का बीचे पत्र–पत्रिकन में प्रकाशित कहानी संग्रहीत बाड़ी स। 'इस्तिंजा के ढेला' संग्रह के सेसर कहानी बिया, जवन मुस्लिम समाज में औरत के हैसियत 'यूज एण्ड थ्रो' के खुलासा करत बिया। संस्कृति मंत्रालय 'रंगश्री' संस्था के मार्फत एह कहानी के नाट्य रूपांतरण कके मंचित करववलस, जवन खूब चरचा में रहल। 'दुखदेवन बहू' आ 'जोजना' शीर्षक कहानी पंचाइतीराज बेवस्था में बेयापल भ्रष्टाचार के पोल खोलत बाड़ी स। 'हैलो कामरेड' आ 'पोस्टकार्ड' कहानियन के व्यंग मरम के बेधे बेगर नइखे रहत। 'अमर–कथा' शीर्षको कहानी नकली स्वाधीनता सेनानी के शव–यात्रा से जुड़ल व्यंग–कथा बिया, जवना में नकली बड़मुँहवा लोगन के ऐशो–आराम का सँगहीं सरकारी नीयत पर सवालिया निशान लगावल गइल

बा। 'सूत्रधार', 'तस्वीर साफ बा' कहानी गँवई जिनिगी में पसरल छल–छद्म, सियासी दाँवपेच आ जातिवाद के दलदल में आकंठ डूबल बाजारू समाज के तस्वीर उकेरत बाड़ी स। 'अमर–कथा' के कथा–ऐनक में आम आदिमी के बेबस जिनिगी आ ओकरा सरोकार के बखूबी देखल–चीन्हल जा सकेला।

एगो नामी–गिरामी कवियो के रूप में बरमेश्वरजी आपन दमदार जगह बना चुकल रहलन आ एकरा मूल में रहे जमीनी हकीकत से रू–ब–रू करावत उन्हुकर व्यंगपरक कविताई। उन्हुकर छोट–बड़ एकावन गो समकालीन भोजपुरी कवितन के संग्रह रहे 'अथ लुकाठी कथा', जवना के शीर्षक कविता में अन्हार–बटमारन के जरी–सोरी खात्मा खातिर ऊ लुकाठी से लुकाठी, माने दीप से दीप जरावे के अरज करत कहले रहलन– 'हम कहिला–आवऽ/लुकाठी से लुकाठी जरावऽ/जन–बल जुटावऽ/आ आपन घर बचावे खातिर/कुल्हि बटमारन के खोरि–खोरि के जरावऽ!'

आह से उपजल गान के परमान देत कवि के कलम मानवीय करुणा उकेरे के मकसद से सिरिजनरत रहे। 'हमार कलम' में कवि साफ–साफ कहले बा– "हमार कलम/बचवन के हाथी–घोड़ा/आ बुढ़वन के पालकी बा/हमार कलम दँतखोदना बा/भँग घोटना बा/हमार कलम खरकोंचना बा/बाकिर मूल रूप से/लोर पोंछना बा हमार कलम।"

कवि के 'हमार गाँव' हर गँवई के गाँव बनि जात बा। अइसन बेमिसाल उपमा, पौराणिक मिथकन के अइसन प्रयोग दुर्लभ बा। एगो झलक देखीं– "/झुंड–झुंड अमराइयन का बीच/झिलमिल–झिलमिल/बुझाला, बेलपत्र का बीच से झाँकत होखस/सावन के महादेव/पता ना कहिया के चुनवटल प्राइमरी स्कूल/बुझाला, बइठल होखस गउरा–पारबती/गुमसुम शंकर के बाएँ/पत बेरि कुछ बेसिए हरियरी ओढ़ले/गोंयड़ा के बँसवारी/अइसन लागेला जइसे/साधना–समाधि में बइठल/शंकर के जटाजूट होखे/आ हऊ जे पद बा सोन/कइसे भूलि जाला आपन मरदानगी/आ बनि जाला जटाशंकरी/कहल कठिन बा।"

बाकिर कवि घवाहिल बा, गँवई दुर्दसा के मौजूदा सूरत निरेखि के। गाँव के परिपाटी–परंपरा, रहन–सहन आ सांस्कृतिक बोध कहवाँ बिला गइल? कवि 'दरद के कहानी' बयान करत बा– "हमरा गाँव में अब/गाइ के गोबर से/अँगना ना लिपाय/हमरा गाँव में अब ना बइठस/पुरइन पात पर/गउरा देई/हमरा गाँव में अब ना पुराय/गजमोती चउका/पता ना, रउवा गाँव के का हाल बा?"

एह बदलाव में जवन बाजावादी सोच बा, ओकरा के खुलासा करत कवि 'कविता के बाजार में' खाड़ होके कहत बा– "जवना बाजार में शब्द के जगह/खाली 'अर्थ' के कारोबार होत होखे/उहवाँ, हमरा लेखा कवि के/जनमते नून चटा दिहल जाय त/केहू के अचरज ना करे के चाहीं।"

श्रम आ श्रमिक के हिमायती कवि जहवाँ बैल के महादेव मानत बा, उहँवें बटमार आदमी के जानवर। एह कुथ–तथ के कवि 'बैल' में आ संथाल परगना से आइल ईट–भट्ठा पर जाँगर ठेठावे वाली 'जंगल के बेटी' के मर्मांतक पीर के गहिर संवेदना का सँगे अभिव्यक्त कइले बा। 'जिनिगी के हिसाब' में लवसान तंगहाली में जीयत मनई के जिनिगी 'लँगड़ी भिन्न' होके रहि गइल बिया। कवि अपना मौलिक अंदाज में कहले बा– "ना व्यवहार गणित, ना एकिक नियम/जिनिगी अब लँगड़ही भिन्न हो गइल बा। हरान वानी हल करत–करत/दशमलव के बाद शून्य भरत–भरत....।"

बाकिर तबहूँ केहू के वैसाखी के सहारा के जगहा कवि अपना बल–बेंवत आ स्वाभिमान से जिनिगी में संघर्ष करे आउर जूझे खातिर प्रेरित करत कहले बा– "हरदम उजबुजाहट में जीयत/आ फटही जिनिगी के बेरि–बेरि सीयत/कबो–कबो थाकि के हाँफे लागेला हमार मन/काँपे लागेला हमार करेजा/बाकिर तबहूँ मन मगरूर/नाक–भौं सिकोरते रहेला/ ना–ना!/जहवाँ तकले चलबि/अपना बूता पर चलबि/बूता थाकी, गिरि जाइबि/मिटि जाइबि/बाकिर कबहूँ ना लेबि बैसाखी के सहारा/कबहूँ ना बनबि/मउगा इतिहास के अंग।"

ताजिनिगी अदम्य जीवट आ जद्दोजहद के पर्याय रहलन बरमेश्वर सिंह आउर उन्हुकर रचनाशीलता। ऊ भोजपुरिया समाज के विसंगति–विद्रूपता पर ना खाली चोट कइलन, बलुक बेवस्था में बदलाव ले आवे खातिर आँतर में अदबेगो पैरा करेके उतजोग करत रहलन। भोजपुरी के समकालीन कथा–काव्य के गाँछ के छतनार बनावे में उन्हुकर वेशकीमती कहानियन–कवितन के अहम भूमिका के कबो भुलावल ना जा सकी। उन्हुकर परिजन समर्थ बाड़न। अगर उन्हुकर अनछपल रचनन, रचनावली के प्रकाशन हो पाई आ उन्हुका इयाद के बनवले राखे खातिर जियतार उतजोग कइल जाई, त ई बरमेश्वर जी का प्रति सही माने में सरधांजलि होई। एही आस–बिसवांस से हम सरघा के फूल चढ़ावत बानीं।

●●

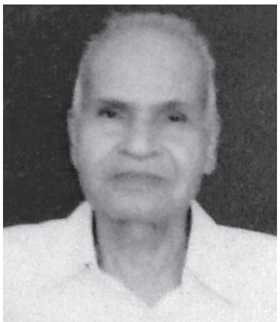

शिवपूजन लाल विद्यार्थी

प्रस्तुतिः विजय शंकर पाण्डेय

हिन्दी भोजपुरी दूनो भाषा आ साहित्य के करीब–करीब सब विधा में समान अधिकार से लेखन करे वाले शिवपूजन लाल विद्यार्थी चौरासी साल के उमिर में आजो सिरजन के काम में लगल बाड़न।

विद्यार्थी जी कऽ साहित्य सिरजन हिन्दी के गीत–गजल से आरम्भ भयल, लेकिन अपने सहयोगी मित्रन के सुझाव पर ऊ मातृभाषा भोजपुरी में लिखे लगलन गाँव–घर के भाषा के प्रति मनई में जियादा लगाव होला, ओही क प्रतिफल रहल कि भोजपुरी में उनकर ''गोरकी किरिनिया'' नाम से गीत संग्रह प्रकाशित भइल। ए पुस्तक से कवि कऽ कल्पना शक्ति, भाषा काव्य– प्रतिभा देख के ई स्वीकार करे के पड़ी कि ई पतली पुस्तक हर स्तर पर परिपक्व आ प्रशंसनीय बा। पुस्तक के सब गीतन के पढ़ले से ई मालूम हो जात हौ कि कवि क झुकाव प्रकृति आ सिंगार के तरफ बेसी बा। ऊ खुदो एके स्वीकार करेलन। एनके कविता कऽ ई खासियत हौ कि साधारणता में असाधारणता देखाई देला। एक उदाहरण बा, जेसे उनका अभिव्यक्ति कौशल आ भाव प्रवणता के पता चलत बा–

''उजड़ गइल नभ के फुलवारी, भरल, सजल तरइन के क्यारी,
लपट चलल कर के चंदा–माली मन मुरझाइल।''

चंचल हिरिनियाँ जनि सेजिया पर घूमेले,
सपना क फूल लोढ़त अँखियन के चूमेले,
बलवा में अँगुरी फेरावेले, गुदगुदावेले।।

समाजिक विषमता, आर्थिक भेद–भाव अउर गरीबी का नियति पर विद्यार्थी जी क कलम चलल।

'मुट्ठी भर लोगन के घर में रोजे परब देवारी बा,
मगर सदा से होरी के किस्मत के झोरी खाली बा।।''

देश प्रेम कवि में राष्ट्रीय चेतना प्रबल बा आ कवि के सुभाव में बा। यथा–

''देश के उत्थान कुछ बलिदान मांगत बा
आगि से खेले के ऊ वीर जवान मांगत बा।।''

विद्यार्थी जी के गवँई इलाका से बहुत लगाव रहल। गाँव में जनमल गाँव में पढ़लै–लिखलै। त ओसे लगाव रहबै करी। गाँव में असली आजादी आ बिकास ना पहुँचल, लोग खुदे अचेत बनल रह गइल–

''सुनत रहली मिली आजादी दुख दरिदर भागी,
नया बनी समाज चेतना लोगन में जागी।।''

''हम हई भारत के किसनवाँ, किसनवाँ
धरती के अरपित तन–मन धनवाँ।।''

XX XX

''हमरा ना सोना–चानी–महल अटरिया
झोंपड़ी में काटीं हम, रात के अन्हरिया।।''

कवि के साहित्य पर ओकरे जीवन क सीधा प्रभाव पड़ेला। ओही तरह के ओकर रचना होले। उन्नीस सौ सैतीस चौदह फरवरी क जनमल विद्यार्थी जी क आरम्भिक शिक्षा गाँव में भइल। हिन्दी में मास्टर डिग्री पउले के बाद 1960 में बी.एड. कइके 1961 में औरंगाबाद में अध्यापकी आरम्भ कइलन। तब रोजी रोटी क़ समस्या समाप्त भइल। नोकरी पउले के बाद रचनाधर्मिता में बढ़ोत्तरी हो गइल। 1979 में पहिली पुस्तक 'गोरकी किरिनिया' प्रकाशित भइल। ओकरे बाद तऽ कई पुस्तक छपल। 1998 में कतरा–कतरा समन्दर फिर 2006 में ''लगेज'' भोजपुरी कहानी संग्रह।

2008 में ''अबही अउर चले के बा'' भोजपुरी कविता संग्रह

2010 में 'भोर कब होई' भोजपुरी गजल संग्रह

2012 में 'दहकता सवाल' हिन्दी कहानी संग्रह
2014 में 'साँवर लइकी' कहानी संग्रह भोजपुरी में
2016 में छन्दो की छाँव में
2011 में उम्मीद में खड़ा रहा हिंदी गजल संग्रह
2017 में छन्दोबद्ध हिन्दी कविता संग्रह

एकरे अलावा 3–4 पुस्तक प्रकाशन के प्रतीक्षा में हइन।

कवि का संवेदनशीलता आ जथारथ उरेह के कौशल के उनका कुछ दोहा पढ़ले का बाद समझल, समझावल जा सकेला–

''दम तोरत संवेदना, नैतिकता बीमार
रहबर जब रहजन भइल, कउन करी उपचार।''

''होरी जोतत खेत बा, सपना बुनत हजार,
अबकी होई फसल तऽ, करजा लेबि उतार।।''

XX XX

''प्रेम–दया धरम क विदाई हो गइल,
आदिमी ई अइसन कसाई हो गइल।।''

एनके कहानी संग्रहों में समाज के प्रति संवेदना देखाई देला। 'दहकऽता सवाल', 'साँवर लइकी' दूनो पुस्तक में विद्यार्थी जी क समाज के प्रति लगाव आ असंगति पर ओनकर पीड़ा झलकत दिखाई देला।

अभिमान, चाटुकारिता आ आलोचना से हमेसा दूर रहे वाला विनम्र आ सरल शिवपूजन लाल विद्यार्थी जी के दीर्घायु होवे क कामना करत विश्वास प्रगट करत बानी कि उनकर रचनाधर्मिता भोजपुरी के मान–सम्मान बढ़ावत रही। ●●

❑ नारायणी बिहार, चितईपुर, वाराणसी,
मो. 9451881109

लघुकथा

ईनाम

फतेह चन्द गुप्त 'बेचैन'

विजय बहादुर सिंह का सरल सुभाव आ समाजसेवा के जवार के लोग जानत रहे। सैकड़न बीघा खेत, हवेली, नोकर–चाकर, हरवाहा, चरवाहा के गुजर–बसर उनहीं किहाँ होत रहे। शान शौकत, इज्जतो में उनकर ओघरी करियात में कवनो सानी ना रहे। बीसन साल से विजय बहादुर सिंह अपना क्षेत्र के निर्विरोध ब्लाक प्रमुख रहलें। अपना मालिक का बड़प्पन के खिस्सा बारंबार सुनले रहलन कतवारू बाकिर ऊ केतना दयालु हउवन, ई ना जानत रहलन। ऊ सीधा–साधा सोभाव क मेहनती हरवाहा रहलन, खाली अपना काम से मतलब राखसु। अपना मेहनत, अवरू काम के बल पर ऊ बाबू साहब का हवेली में आपन स्थान बना लेले रहलन। जब जवान रहलन तब से। बाकिर ऊहो धीरे–धीरे विरिधा होखे लगलन।

कतवारू के दूगो लइका रहलन स, हीरतन अवरू सीरतन। सीरतन जवान होखते अपना बाप से अलगा हो गइलन, हीरतन अपना बाप का साथे आपन परिवार लेके रहसु। हीरतन एगो सूता मिल में काम करत रहलन। कुछु समय बाद उनकर तबीयत खराब हो गइल। दवा इलाज भइल लेकिन दवा से कौनो आराम ना बुझाव। आखि में दू चार महीना बाद हीरतन दुनिया से चलि गइलन। हीरतन अवरू उनका पूरा परिवार औरत लइकन क पूरा बोझा कतवारूये पर आ गइल, कतवारू के शरीर जब जबाब देबे लागल त सोचि ना पावसु कि अब का करीं, कहाँ जाई, केने जाई? हारि पाछि के एह दिन जमींदार साहब का हवेली पर गइलन, "साहब अब हम बूढ़ हो गइलीं, दुसरे हमार जवान लइका जवन सूता मिल में काम करत रहल, बेमार होके एह दुनिया से चलि गइलन, उनका औरत अवरू लइकन क पूरा बोझा अब हमरे पर बा। अपनो खरचा नइखे सँभरात ऊपर से लइका के परिवार। रऊरे कुछु मदद करीं।"

जमींदार साहब कतवारू के दुसरा दिने बोलवलन। कतवारू का जाते उनके सँगे ले जाके उनका नाँवे पाँच बिगहा खेत रजिस्ट्री कराके, कागज थमावत कहलन, "तूँ जिनिगी भर हमरे सेवा में रहलऽ अब ई पाँच बिगहा खेत तहरा नावे हो गइल। तोहरा परिवार आ बाल–बच्चा का परिवरिश के कामे आई।"

कतवारू के आँखि खुशी के लोर से डबाडबा उठल, उनका समझ में ना आइल कि का कहसु मालिक से। उनका ओघरी, जमींदार साहब का रूप में दयालु भगवाने नजर अइले। ऊ त अइसन सोचलहूँ ना रहले कि उनका सेवा के अइसन ईनाम मिली। ●●

❑ आनन्द नगर, बलिया।

करिक्की

निशा राय

पढ़े में गजबे तेज
आँख त अइसे चमकेला
जइसे गोल गोल कंचा
दाँत की सफेदी बतावेला कि
करिक्की ओ पर केतना मेहनत करेले
जबकि ओकरा टूथपेस्ट में नमको नइखे
ना ही लौंग, इलायची, मरिच जइसन गरम मसाला।

करिक्की भोरहीं उठ के
कर लेले घर-बर्तन
बना लेले तरकारी भात
अउर नहाय धोय के
पूर लेले दुइ चोटी
माथ पर धइ के एक चिरुआ तेल
समय से पहुँच जाले पाठशाला

लगवावेले लाइन
करावेले प्रार्थना
बोलेले भारत माता के जै
पूछेले सामान्य ज्ञान के प्रश्न
देश के नाम -भारत
भारत के रजधानी -नई दिल्ली
शाला के जान हियऽ करिक्की
मैडम खूब मानेली ओकरा के
एक दिन ना आवे त
लइकन से पूछेली ओकर हाल ,
बाकिर जब आवेला पन्दरे अगस्त
होखेला गाना बजाना
का जाने कइसे दो करिक्की
घसक जाले सबका से पीछे

मैडम कहेली ओसे, सुन
ऊ जवन बीया तोरा कलास में
गोरकी 'मुस्कान'
ओसे कहि दीहे
घूमले से काम नाहीं चली,
आइल करे रोज..
परेक्टिस करे के बा
'भारत माता' बने के

करिक्की सोचेले
छेड़ देव असहयोग आन्दोलन
आकि फूँक दवे करांति के बिगुल ,
अपना करियाई के खिलाफ
उठा लेव झंडा....
बन जाए भारत माता
बाकिर ना उठा पावेले...
आ बीत जाला
आजादी के एगो अउर तिउहार
करियई के
सिंकड़ी में बन्हाइल...कसाइल... ।।

●●

❑ द्वारा महेश राय, मकान नं०-841/022/515704,
रामअवधनगर कालोनी, सेन्ट जोसफ स्कूल के पीछे, जंगल सिकरी,
पो० जंगल चौरी, खोराबार, गोरखपुर-273010

दू गो कविता

योगेन्द्र शर्मा ''योगी''

(एक)

अँखिया के लोर तोहरा
का कोई आ के रोकी हो
जिनगी धधक गइल जे
सबही त हाँथ सेकी हो।

सुखवा हँसी उड़ाई
दुखवा करी तमाशा हो
दुन्नो के मनाई
मत सोचा कोई टोकी हो।

बोझा ई साँस बनि के
जेह दिन देही दोहाई हो
रिस्ता दिल के ओहिजा
बनि तरजूई जोखी हो।

''योगी'' डगर अँजोरिया
जहिया नसीब खोई हो
परछाही तोहरै हँसि के
काटी तोहैं चिकोटी हो।

अँखिया के लोर तोहरा
का कोई आ के रोकी हो।।

(दू)

चार सौ मजूरी
हरामी कै भोजन
सरकार बाकी तब्बो
सुधारै न लोगन।

कोटा के चाऊर
दुकाने बिचाता
सबही के मुँहें
महिनका घोंटाता,
हाय जबरी गरीबी
उघारै न लोगन।
सरकार बाकी तब्बो
सुधारै न लोगन।

पक्का अवास भाय
सगरों बँटाता
परानी परानी
मनरेगा कमाता
अब साबुन से निरखा
कचारै न लोगन।
सरकार बाकी तब्बो
सुधारै न लोगन।

स्कूटी बहुरिया के
नइकी किनाता
एनम के फारम भी
रोजै भराता
लाज छोड़
दँतवा चिहारै न लोगन।
सरकार बाकी तब्बो
सुधारै न लोगन।

स्वारथ में आदत अब
नँगा देखाता
तोपै के नाँवें पे
कपरा पिटाता
''योगी'' समाज खुद
बिगारै न लोगन।
सरकार बाकी तब्बो
सुधारै न लोगन।। ●●

❑ भीषमपुर, चकिया,
चन्दौली (उत्तर प्रदेश)

''विजय पर्व'' : स्त्री-उत्पीड़न के प्रतिरोध-विमर्श

✍ जितेन्द्र कुमार

(**'विजय-पर्व' (उपन्यास), लेखिका : नीतू सुदीप्ति नित्या,** मूल्य–200/–, प्रकाशकः जमशेदपुर भोजपुरी साहित्य परिषद्, होल्डिंग नं. 102, जोन नं.–11, भोजपुरी पथ, बिरसानगर, जमशेदपुर, झारखण्ड)

दहेज–उत्पीड़न, वियाह के पहिले सेक्स–संबंध आ बलात्कार समाज के सामने लहकत चुनौती बा। एह चुनौतियन के रचनात्मक साहित्य के विषय बनावल साहित्यकारन के आधुनिक कार्यभार बा। बाकी लोकभाषा भोजपुरी के कथाकार एक माने में शुद्धतावादी आ संकोचशील बा। प्राइवेट बातचीत में एह विषयन प खूब रस ले ले के बतकही करी लोग बाकी एह सांस्कृतिक–नैतिक अवमूल्यन के अक्स उनुका कथा–साहित्य में कम लउकेला। जवन बुराइयन से देश–समाज के दुनिया में बदनामी हो रहल बा ओकर रचनात्मक प्रतिरोध जरूरी बा। तोपे ढँके से, चुप रहके एह पतनशील प्रवृत्तियन के परिमार्जन संभव नइखे। सबेरे अखबार खोलीं आ देहज–उत्पीड़न, दहेज–हत्या, वियाह के पहिले सेक्स–संबंध, अबैध गर्भपात, बलात्कार, सामूहिक बलात्कार के समाचारन से लबरेज अखबार पढ़ीं। समाज के अधःपतन के इबारत लउकी। दहेज के खिलाफ कानून बनल। सरकार दहेज के खिलाफ दीवारन प नारा लिखवा के दीवार रंग देलस बाकी दहेज के खिलाफ सामूहिक चेतना के निर्माण ना भइल। एही तरे विद्यालयन–महाविद्यालयन– विश्वविद्यालयन के परिसर में आ दोसरो जगहे वियाह के पहिले सेक्स–संबंध के डंका बाज रहल बा। एकल बलात्कार के बात पुरान हो गइल, अब सामूहिक बलात्कार आ नृशंस हत्या के घटनन से भारतीय समाज काँप रहल बा।

एह तीनों लहकत मुद्दन के एगो उपन्यास में सफलतापूर्वक गूँथल एगो रचनात्मक चुनौती बा। एह साहित्यिक चुनौती के स्वीकार कइले बाड़ी बिहिया (भोजपुर) के युवा रचनाकार नीतू सुदीप्ति नित्या, अपना सद्यः प्रकाशित उपन्यास 'विजय पर्व' में। नीतू अबहीं चालीस बसंत पार नइखी कइले। उनुकर शिक्षा मात्र मैट्रिक तक बा। अइसन बात नइखे कि जेकरा भीरी लम्मा–चवड़ा अकादमिक डिग्री होई ऊ कथाकार लेखक हो जाई। हिंदी में नीतू के दू गो कहानी–संग्रह प्रकाशित बा। औपन्यासिक अभिव्यक्ति खातिर ऊ आपन माईभाषा भोजपुरी के चुनले बाड़ी। 'विजय–पर्व' उपन्यास के प्रस्तुति बेहद रोचक आ प्रवाहपूर्ण बा। अइसन कि जिला के हिंदी के कुछ नामवर आ पुरस्कृत उपन्यासकार लोगिन के ईर्ष्या होई कि एगो कम उमिर के लीन–थीन लइकी जेकरा करेजा में छेद बा, ऊ प्रवाह, रोचकता, कल्पनाशीलता, शिल्प आ यथार्थ के प्रस्तृति में उनका लोगिन के पीछे छोड़ देहलस।

उपन्यास 'विजय–पर्व' के कथावस्तु के संघटन उल्लेखनीय आ दिलचस्प बा। उपन्यास में तीन गो नायिका बाड़ी सन। तीनों समउमीर, सहेली आ सहपाठी हई सँ। सँवरी, पमली आ बारली। तीनों सहेलियन के पारिवारिक पृष्ठभूमि अलग–अलग बा। सँवरी के बाप फुटपाथ प दूकान लगावे वाला दूकानदार हवन। पमली के पापा बैंक में कैसियर बाड़न। बारली के पापा शहर के नामी–गिरामी होमियोपैथ चिकित्सक हवें। शहर में उनुकर तिमंजिला मकान बा। माने तीनों सहेली समाज के तीन सामाजिक–आर्थिक स्तर के प्रतिनिधित्व कर रहल बाड़ी सँ। एगो निम्न आय वर्ग के बिया, दोसरी मध्य आय वित्त वर्ग के आ तीसरी उच्च मध्य वर्ग के। अपना वर्गीय अनुपाते में तीनों पढ़े–लिखे में

प्रतिभाशाली बाड़ी सँ। सँवरी तृतीय श्रेणी में मैट्रिक पास कइले बिया। पमली द्वितीय श्रेणी में, आ बारली प्रथम श्रेणी में। उन्हनी के शिक्षा संबंधी प्रतिभा प्रतीकात्मक लागत बा। लागत बा कि युवा उपन्यासकार कहल चाहत बाड़ी कि हलुवा में जतने चीनी परी, वोही अनुपात में हलुवा मीठा भा फीका होई। शिक्षा व्यवस्था अइसन हो गइल बा कि अभिभावक जवना अनुपात में उनकर बच्चन के उपलब्धि होई।

बहरहाल, तीनों सहेली लोगिन के अलग–अलग समस्या आ कहानी बा। सँवरी दहेज उत्पीड़न के शिकार बाड़ी; पमली विआह के पहिले सेक्स–संबंध आ गर्भधारण के समस्या से जूझ रहल बाड़ी, बारली बलात्कार के शिकार हो जात बाड़ी। सँवरी के दहेज उत्पीड़न प समाज मौन आ तटस्थ बा। एगो डॉक्टर (महिला) सँवरी के दुख से मर्माहत होत बाड़ी आ उनका बाबू के परिवार के खबर देत बाड़ी। सँवरी के पिता बाद में दहेज–उत्पीड़न कानून के सहारा लेत बाड़न।

पमली कॉलेज में पढ़त खा माधव नामक लफआ लइका के झांसा में आ जात बिया। सहेली बारली उनका के सावधान करत बाड़ी बाकी ऊ अपना भावना प नियंत्रण नइखे राखि पावत आ बिना विआह बन्धन में बन्हइले माधव साथे शारीरिक संबंध स्थापित क लेत बिया। आ अबैध गर्भधारण करत बिया। एकरा बाद लफुआ धोती झार के भाग जात बा।

बारली मैट्रिक के स्टेट टॉपर हई। इंटरो परीक्षा प्रथम श्रेणी में पास करत बाड़ी। लेकिन एक दिन बाजार में कुछ सउदा–सुलुफ कीने गइली बारली साँझ के। एगो विवाहित दुकानदार उनका के अकेला पा के, दूकान में खींच लेता आ बलात्कार क देता।

तीनों सहेली के तीन कहानी बा। तीनों कहानियन के एगो उपन्यास के कथानक में गूँथल एगो चुनौती बा। बाकी युवा उपन्यासकार नीतू सुदीप्ति नित्या सफलतापूर्वक तीनों घटनन के सुटर के तीन रंग के ऊनी धागा लेखा बुन देत बाड़ी। उपन्यास के शिल्प में कहीं जोड़तोड़ नइखे लउकत। कथानक में कतहीं फाँक नइखे। पूरा कथानक चउदह इपीसोड्स में समंजित बा। प्रत्येक इपीसोड में आवश्यकतानुसार कथा–भूमि आ पात्र बदल जात बाड़े। कथा–प्रवाह के बिना बाधित कइले। कतहीं कवनो अश्लील प्रसंग नइखे।

उपन्यासकार भोजपुरी लोकजीवन के मुहाबरन से सुपरिचित बाड़ी। आ मुहाबरन के सटीक प्रयोग में सिद्धहस्त बाड़ी; जइसे, जब तक जीय तब तक ले सीय; हँसलू त फँसलू आ मुसकइलू त गइल....। उपन्यास के भाषा स्तरीय बा। गद्य के नमूना देखीं– "बाबूजी नीचे ना जमीन रहे ना ऊपर आसमान। ऊ त एगो लहरल आगि में खाड़ि रहन जहाँ देहि ना जरि के लह–लह मन जरत रहे।(पृष्ठ–81)।"

'विजय–पर्व' उपन्यास के अंत प्रेमचंदीय आदर्शवादी यथार्थ से होता। बलात्कार के बाद बारली आ ओकर परिवार गहिरा सदमा में चल जात बा। बारली जइसन तेज–तर्रार, समझदार आ दूरदर्शी लइकी बलात्कार के बाद एह तरह हिल जात बिया कि ओकरा लागत बा कि बलात्कार के बाद ओकरा जिनिगी के कवनो अरथे ना रहि गइल। ऊ बार–बार आत्महत्या के प्रयास करत बिआ। ओकर भाई अवसादग्रस्त हो के ट्रक एक्सीडेंट के शिकार हो जाता। बलात्कार के खिलाफ सघन संवेदना के निर्माण में उपन्यासकार नीतू के खूब सफलता मिलल बा। बारली के भाई के डायरी बारली के जीवन में सकारात्मक नाटकीय बदलाव ले आवत बा। ऊ बलात्कार के खिलाफ वैचारिक संघर्ष खातिर डटिके खड़ा होत बाड़ी। बारली विवाह–संस्था, यौन–संबंध, प्रेम, गर्भधारण, पुरुषवादी समाज आदि प उपन्यास में विचारोत्तेजक विमर्श रचत बाड़ी। जे 'विजय–पर्व' उपन्यास के महत्त्वपूर्ण बनावत बा।

अंत में बारली के विमर्श से प्रभावित होके विश्वजीत नामक युवक ओकरा से विआह क लेत बा। बारली के जीवन–साथी मिल जाता। इ बलात्कार के एगो आदर्शवादी समाधान कहाई।

उल्लेखनीय इहो बा कि उपन्यास के अंत में सँवरी के दहेज दानव पति केसर के आत्मा में परिवर्तन घटित होत बा। दरअसल पुलिस केस होखे से केसर, ओकर बाप आ माई के होश ठंडा होत बा। केसर अपना पत्नी सँवरी के पाँव पकड़ के माफी माँगत बा। एही तरे पमली के प्रेमी माधव पिटइला के बाद आ सामाजिक दबाव के आगे झुके प मजबूर हो ता। ऊ पमली के माँग में सिंदूर डाल के बिआह के बन्हन में बँध जात बा।

अंततः एह सुखांत उपन्यास के पढ़ के पाठक संतुष्ट होता। भोजपुरी भासा में एह सामाजिक बुराइयन प उपन्यास लगभग नइखे लिखाइल। एह से युवा उपन्यासकार नीतू सुदीप्ति के इ प्रयास सराहनीय आ प्रशंसनीय बा। ●●

❑ मदनजी का हाता, आरा–802301

संवेदना के भित्ति पर मूल्यबोध के चित्र : ''भिहिलात बताशा जइसन''

✍ डॉ. शारदा पाण्डेय

(**'भिहिलात बताशा जइसन'** (कहानी-संग्रह), **लेखक : भगवती प्रसाद द्विवेदी,** प्रकाशन वर्ष–2018, पृष्ठ–114, मूल्य–115/–, प्रकाशक : हिन्दुस्तानी एकेडेमी, 12डी, कमला नेहरू मार्ग, प्रयागराज, 211001)

रचनाकार जवना युग आ समाज में जीएला ओह युग खातिर सामाजिक विषय पर ओकर रचना समकालीने कहल जाई, ई बात दोसर बा कि हर युग के स्थिति, समस्या आ वातावरण भिन्न होला। दोसरा कालखण्ड में आवते अभिव्यक्ति तत्कालीन हो जाली सन। साहित्यकार बुद्धिजीवी रहलो पर संवेदनशील आ भावुक होखेला। ऊ अपना के सामाजिक दायित्व से अलगा ना सके। अतना अन्तर प्रायः लउक जाला कि कुछ लोग खाली यथातथ्य परोसेला, केहू मसाला लपेटेला आ केहू सभ कुछ देखत–सुनत–गुनत मानवीयता आ मानव मूल्य के समस्या, घटना, परिस्थिति के संगे परोस के समाज में जागरण आ भाविक परिष्कार के प्रयास करेला। ओकर भाव विद्रूपता आ आक्रोश के अंकन भलहीं करी, बाकिर ओकरा संगे चेतना के उदात्तता के सहेजी, नष्ट–भ्रष्ट के नियति ना सिरजी। कथाकार श्री भगवती प्रसाद द्विवेदी जी कवि–हृदय हईं। इहाँ के गाँव–नगर दूनू परिवेश के निकटता से जिअले बानी। आवश्यकता आत्मीय जन के कहाँ कठोर, निर्मम आ तनी स्वार्थी बना देले आ भावात्मकता कब कवनो दुःखी खातिर त्याग के वर्षा कऽ देले ई अनुभव लेखक के सूक्ष्मदर्शी दृष्टि आ वृत्ति से नइखे बाँचल। कहानियन में भाव, परंपरा, यथार्थ, मूल्य, ह्रास, टूटन, विघटन के बीच राजनीतिक स्वार्थी चालाकी दाँव–पेंच के नटीय पैंतरा तऽ बड़ले बा बाकिर आदर्श के बचावे के एगो सतर्क दृढ़इच्छा शक्तियो बा। कहानीकार समकालीन संवेदनशून्यता, हीनता आ आत्मकेन्द्रित भाव के तूरे के चाहता। संग्रह में सोरह कहानी बाड़ी स। कुल्ही के अलगा तेवर बा, लगभग कुल्ही में मूल्य रक्षा के विकलता छटपटातिया।

'बबुआ में बाबूजी' कथा में बाप–बेटा में समय के अनुसार वैचारिक विभेद रहलो पर ओह चउकी पर बइठला पर बछरू के आँखि के घूरल बबुआ अनुभव कइले। खेत के कुल्ही काम सम्हराये,काका के व्यंग्य सुनले सुमझले, अपना व्यक्तित्व के अंतरो बता दिहले, बाबूजी के व्यवहार के विश्लेषण करत अपना कष्टमय अतीत के इयाद करत पढ़ल, नौकरी कइल सोचत रहले। एगो अंतर्द्वन्द्व ईहो मन में चलत रहल कि पढ़नी हम अपना छात्रवृत्ति से, ट्यूशन करि के आ सुने के परेला कि ई कुल्ही बाबूजी के परिश्रम आ त्याग से भइल, तऽ मन में विरोध के लहर जागेले। गाँव के अपढ़ लइकी से बिआह भइल ऊ बाबूजी आ घर परिवार के सेवा टहल में लगली। नोकरी से गाँवे अइला पर हम बाबूजी के कबो टोकबो करीं खर्चा खातिर, मेहरारू के कहला पर नशाबाजो अन्योक्ति से कहि दीं, एक बेर खर्चा के हिसाबो मँगनी, बाबूजी तनी अनमनाह देखलन फेरू पहिलहीं अइसन हँसी ठठ्ठा में डूबि गइलन। हम अइला पर शहर के बात करीं ऊ खेत खरिहान, हीत–नाता के। छः बरिस के बेटा घोड़ा बन के कहलस त डाँटि दिहनी। ऊ बाबा के बारे में बतवलस। मेहरारू बाबूजी के मेहनत के बात करसु, हमरा शहरीयन पर व्यंग्यो करि देसु त हमरा मन में एगो तुलना त चलते रहे। अब तवरू जब खेत में काम करे के मजदूर तेयार ना होखे कहे कि 'शहरी लोगन के का विश्वास!' आजी के खोंखत सुनि के खेत–बेंचि के शहर चले के कहनी तऽ उनुकर आँखि छलछला गइल, कहली– "महंथ बबुआ तऽ सपनों में अइसन ना सोचलन। तूँ जनम भूइँ बेचे के बात

करऽतारऽ।" (अइसन पीड़ा 'राजपथ आ पगडण्डी' कहानियो में बा)। चउकी पर बइठि के मजूरी देत मजूरन के हँसत खिलखिलात जात देखि के जइसे पहिलका कुल्ही विरोध आ असंतोष–आक्रोश के भाव कहाँ बिला जाता? उनुका ईहे बुझाता कि 'अब हम बबुआ नइखीं बाबूजी हो गइनी'। ई आत्मीय भाव पात्र के पूरा चरित्र के छापि लेता आ परंपरित भाव–संस्कार जीत जाता। 'बाट जोहत' तीन उपेक्षित नारियन के भाव–चरित्र आ संस्कारशील आस्था के ज्वलंत गाथा हऽ। भारतीय नारी के सर्वोत्कृष्ट भावोद्दीप्त उदात्रता के चित्र हऽ। एमे कुल्ही नारी चाहे लंगड़ी चाची होखसु, दीपा भउजी होखसु चाहे गंगा फुआ होखसु, केहू अपना कवनो कमी के कारण तिरस्कृत आ निहाहत ना भइल। सभके पीछे समाज पुरुष प्रधान दूषित, सामाजिक असंतुलित न्याय कारण बा। घर के आर्थिक विपन्न स्थिति के कारण कलकत्ता जाए वाला नवयुवकन के आपन चारित्रिक बिचलन, रूप लोलुपता आ स्वार्थ कारण भइल; जेकर पीड़ा आजीवन एह नारियन के सहे के परल। चाचा के मौत के सूचना से ची के बेहोश होके गिरल लंगड़ापन के कारण भइल। ऊ पहिला बेर विधवो बनि के सुसरा अइली आ जीवन भर परिवार के सेवे में बिता दिहली। कवनो विरोध ना कइली। दीपा भउजी साँवर रहली, मातादाई के दाग वाला मुँह देखि के सुधाकर गइलन त कलकते के होके रहि गइलन। ई सोहागराति ना जनली। गंगा फुआ के बिआह एगो सुन्दर फौजी युवक से भइल बाकिर ऊ कबो गंगा फुआ के लगे ना आइल। सासु पोता के मुँह देखला में असफल होके गंगे फुआ के दोष देसु, नागिन कहसु, फुआ का करसु? फूफा एच.आई.वी. के शिकार रहलन। ईहो सुहागरात ना देखली, जिनिगी गंगे नीयर बहत बीतल। तीनों नारी के आपन चरित्र, भाव, विचार पवित्र पतिव्रता के कथा रहल। 'चिरई के जान जाय' एगो सिपाही के साहसिक कदम उठावे के कहानी हऽ जे एगो लंपट के लोलुपता के पात्र बनल गर्भवती देवकली के पंचायत के सामने पत्नी रूप में स्वीकार कइके सामाजिक सम्मान दिआवे के प्रयास कइल। ओकरा पहिलका बेटा के आपन नाँव दीहल। बाकिर ऊ भुला गइल रहे कि गाँव में ओकर पत्नी अबहीं तक ओकर राह जोहतिया। गाँवे लवटला पर फेरू पंचायत के आगा छितेसर आ देवकली के पहिलहीं नीयर अपराधी बने के परल। पत्नी सौत के आ ओकरा बेटा के स्वीकार ना कइली। उनुकर जेठ खेत के लालच में छितेसर के अपमानित कइलन। ऊ फेरू अपना पहिलका पत्नी के छोड़ि के देवकली के संगे गाँव छोड़ि दिहलन। न्याय आ अंतर्मंथन के दुविधा में उसिनात ई कहानी संवेदना के औचित्य पर प्रश्न उठावऽ तिया। 'कवि सम्मेलन' आजु के कवियन के गैंगीय स्वार्थी कुत्सित दृष्टि, घनाहरण आ नीतिगत सोच के दाँव–पेंच के नग्न उद्घाटन बिआ। राजनीतिक कुटिलता कहाँ नइखे? प्रकृति के पृष्ठभूमि पर उरेहल 'बून–बून टिपटिपात मन' अवना अतीत के जीअत, धन के लोभ पर गूँग पत्नी के संगे जीवन बितवला आ भरल पूरल लरिका–पतोह पोता से गुलजार मन के अकेलापन के झेलला के करुण स्थिति के बयान बा 'खोंता' किसान के किसानी छोड़ के मजदूर बनि के शहर में जाके झोपड़पट्टी में रहला के विवशता, सफेदपाश समाज के सम्भ्रान्त वर्ग में गहरा पइसल निर्मम पशुता आ राक्षसीपन के अमानवीय गंध से बसात आदमखोर चरित्र के पर्त दर पर्त के उद्घाटन बा। जहाँ मनुष्यता तार–तार हो जातिया। बेटी–पतोह के इज्जत नसाता, एगो घर के लालसा में नीति, नीयत के विगर्हला के जीअल कठिन हो जाता। दरिद्रता के अइसन चित्र लेखक खिंचले बा कि दरिद्रतो लजा जा तिया, ओपर आगि में घीव कि एगो बोर्ड पर लिखल बा 'हम सुनहरे कल की ओर बढ़ रहे है।' परंभू के मन हुलियाए लागल। ऊ खँखारि के बलगम फेंकलन–'आक्थू'। प्रश्न बा एह समाज से कइसे लड़ल जाव?

'बीच के जिनिगी' का कवनो जिनिगी हऽ। निम्न मध्यम वर्ग के लइका कतनो प्रतिभाशाली होखे साधन के अभाव में ओकर क्षमता सिर धुने लागेला। ना घर के प्राणी समाज में उठे–बइठे लायक, ना साधन आगा बढ़े लायक। ऊ डोनेशन कहाँ से ले आओ, आ कइसे अपना योग्यता के सिद्ध करो, आपन भविष्य सुधारो। दोसरा ओर ऊ 'पोतन' अइसन खोमचा उठावे के नियति ना स्वीकार सके। ई मध्य वर्ग के मानसिक संस्कार हऽ। परिणाम बा कि ऊ सपनों में एही यथार्थ के भयंकरता देखि के चिंचिआता। सपना पर महतारी बाप के अवश झुर्रीदार चेहरा देखि के ओकर विवशता भोंकार दे के रो उठतिया। आजु के नवयुवकन के एही भयावह स्थिति के जीएके परता। ई मार्मिक कहानी मन के हिला देतिया। 'हाथी के दाँत' जीवन के दुविधापूर्ण भाव के व्यक्त करतिया। जहाँ हम दुःखी के सहायता करे के चाहतानी बाकिर कवनो व्यवधान अइला पर हम निर्धर व्यक्ति के सच्चाई पर संदेह करतानी। जब आपन संदेह झूठ होता तऽ व्यक्तित्व आ भाव के सत्य आ देखावटी रूप के स्वरूप सोझा आ जाता। वोइसे आज के भ्रष्ट समाज में प्रायः संदेह साचो हो जाता। बाकिर लेखक एगो सकारात्मक भाव लेके कथान्त करऽता। 'राजपथ आ पगडण्डी' आज के नवयुवकन के स्वार्थी,

माता–पिता के प्रति संवेदनशून्यता के भाव के ज्वलन्त समस्या राखता। आजु लइका के आपन सुख प्रमुख लागता। कपटाचरण बढ़ गइल बा। वृद्धावस्था के प्रति निर्भय भाव पसर रहल बा। 'बहुरूपिया' में अभिभावक के प्रति एगो विचित्र उद्दण्ड भाव के समावेश बा कि जब ले लइका कमात नइखे ओकर अनादर, प्रतारणा बा पत्नी तक के स्तर पर। बाकिर नोकरी पावते सबके मन में प्रेम लहाये लागता। नायक के विचार में ई 'बहुरूपियापन' हऽ। देखावा हऽ, सभके पइसा से प्यार बा, व्यक्ति से ना। एहिजा योग्य बनावे के साधनात्मक भाव के नकारात्मकता दीहल उचित नइखे लागत।

लेखक सोद्देश्य के कहानीयन के रचना करऽता। समाज में जागरूकता, जीवन के प्रति स्वस्थ चेतना जगावल ओकरा समकालीन चिन्तन के पृष्ठभूमि में बा। 'तहरे बदउलत', 'प्यार के दू चार दिन', एच. आई. वी. के प्रति समाज आ व्यक्ति (स्त्री–पुरुष दूनू) में जागरूकता होखे के आवश्यकता बतावता, साथ ही पाजिटिव भइला पर निराश न होके स्वस्थ जीवन बितावे के प्रति लालसा राखे के भाव देता। 'ऊहापोह' कहानी में हरखनाथ के अंतर्मथन के दुविधा रूपायित बा। पत्नी के त्याग आ प्रेरणा से आगे बढ़े वाला हरखनाथ पत्नी के दिवंगत भइला पर जब दोसर बिआह के मंडप पहुँच गइलन तबे उनुका कान में पत्नी के शब्द गूँजे लागल कि– "बड़ आदमी भइला पर रउआ हमरा के भुला तऽ ना देब!" पत्नी के प्रति उनुकर प्रेम के लहर अइसन प्रखर भइल कि ऊ 'ना पंडी जी! ई बिआह ना होई' कहि के ठाढ़ हो जा तारन। ई भलहीं प्रेम के तीव्रता होखो बाकिर नायक के अस्थित चित्त के उभारता, जवन सामाजिक दृष्टि से बहुत अच्छा ना कहाई। उनुका ई निर्णय पहिलहीं लेबे के चाहत रहे। काहें कि बिआह के सपना सजवले लइकी के एमे कवन दोष रहे?

लेखक समकालीन लगभग कुल्ही संवेदनशील, विषय, लक्ष्य, वाक्य आ सामाजिक दायित्व के बिन्दुअन के आधार बनवले बाड़न। 'बोझा', 'लड़की पढ़ाओ' के प्रपूर्ति हऽ, त 'जंगल में मंगल' पर्यावरण सुरक्षा के आवश्यकता बोध के प्रकाशन। यद्यपि एमे नाटकीयता बा। अंतिम शीर्षक कहानी 'भिहिलात बताशा जइसन' लेखक के किशोरावस्था के तरल–स्वाभाविक रागात्मकता के माधुर्य भाव के अविस्मरणीय भाव–बोध के सशक्त अभिव्यक्ति हऽ। प्रारम्भिक वाक्य 'चिन्हल कि ना?' से कथा के प्रवाह प्रेयसी के रूप–वर्णन से आरम्भ होके नायक के मन के अन्तर्जाग्रत तार के झंकार आ प्रेम के रंग–सुगंध के तीव्र आकर्षण के व्यंजना से परिपूरित बा। दूगो वाक्य में प्रेम–मधु के मिठास भरि गइल बा– "तहरा ओठ के दूधिया चाननी–अस निश्छल हँसी के निरेखि के हमरा आँतर में रजनीगंधा के अनगिनत फूल अनसोहाते गमगमा उठलन स। अइसन लागल जइसे, सेवाती के बूनी नियर तहार सबद बून–बून रिसत हमरा सीप–अस हिरदया में पइसि गइल होखऽस आ भितरी–बहरी अनगिनत जोन्ही मतिन मुक्तादीप जगमगा उठल होखऽस।" एह भाव वर्णन के प्राकृति भंगिमा के समानान्तर राखि के पवित्रता, प्रेम के सान्द्रता, गम्भीरता, प्रफुल्लता, प्रतीक्षा आ ज्योतित भाव के अविरलता के जवन अंकन बा ऊ प्रथम प्रेमांकुर के प्रखरता के अंतर्घोष बनि गइल बा। लेखक के स्वीकारोक्ति बा कि– "हमार किशोर मन तहरा रूप के सरोवर में गोता लगावे के बेचैन हो उठल रहे।"

आजुओ विवाहित भइलो पर मन अतीत में चलि जाता। मेहरारू पति के आँखि में देखि के भाव के ताड़ि के शशि के गृहस्थी के दिसाईं प्रश्न उठा के ओह प्रेम के आकाश में झाँकत मन के यथार्थ के भूमि पर ले आवे के प्रयास करतिया। बाकिर पति के पहिला प्यार के प्रकाशन आ ओकर परिणति नइखे भुलात। नायिका आजुओ ओतने सुन्दर लउकतिया। शशि के ई कहल कि– "छिः! भला इहो कवनो प्यार हऽ?" एगो भटकाव रहल। अमीरी–गरीबी के खाई के ओर एगो संकेत रहल। दोस्ती सम्भव हो सकेले बाकिर पति–पत्नी के संबंध समाज परिवार ना स्वीकारी। शशि पवित्र मन से अपना पति से मिलवली। उनुकर मन गंगाजल अइसन पवित्र रहल। आजु सालन के बाद मिलला पर ऊहे भाव नायक के मन में जागता एगो कृतज्ञता के साथ कि– "हमरा के व्यवहार के नया ज्ञान देबे वाली तूँही बाड़ू। हमरा बेमारी में तूँ तन–मन–धन से हमार सेवा कइलू। ई तहरे जीवनदान हऽ।" कतना भाव नायक के मन में आवता ऊ शशी के तरहत्थी के अपना लिलार से छुआवता। फेरू एगो चुंबन लेबे के भाव छटपटाता। तले पत्नी कचौड़ी के प्लेट लेके आ धमकल, भाव बँटा जाता– "भीतरे ना जानी का सदबदाता। पसीजत भिंहिलात बताशा जइसन। बहरी झमाझम बरखा होखे लागत बा।"

ई मिठास मानसिक भावात्मक अभिसार के संकेतक हऽ। पूरा कथा नायक के भाव के भोग आ अतृप्ति, दूनू के अभिव्यक्त करऽतिया। जेमे शशी के संयमित व्यवहार अपना उदात्तता से खड़ा बा।

एह संग्रह में द्विवेदी जी के भाषाधिकार के प्रशंसा करे के पड़ी। प्रकृति के चित्र भाविक वर्तमान स्थिति के अभिव्यक्ति में सफल बा। मुहावरा के प्रयोग से कथन आ अर्थ में चारुता आइल बा। 'हँसुआ के बिआह में खुरपी के गीत', 'किस्मत पर झाड़ू फेरावल'

अर्थ के भंगिमा देता। 'अन्हरिया के अजगर फन काढ़ि के फुँफकारे लागल', 'सपना में जइसे केहू कील ठोक दे' अइसन प्रयोग स्थिति, भाव, वातावरण कुल्ही के व्यक्त कऽ देता। कहानी में गति आ रोचकता ले आवे में संवाद के विशेष महत्त्व होला। लेखक एह दृष्टि से संक्षिप्त आभा में संवादन के सृष्टि कइले बा।

'सरकारी प्रयास आ समकालीन समस्या के अनेक बिन्दुअन के स्पर्श वाली ई कहानी संग्रह खाली वर्तमान के कथ्य ना बनि के विकास के सार्वकालिक प्रयोजनीयता के सशक्त उत्तर बा। अइसन श्रेष्ठ संग्रह खातिर श्री द्विवेदी जी बधाई के अधिकारी बानी।' ●●

❑ 142, बाघम्बरी गृह योजना,
भरद्वाजपुरम्, प्रयाग-211006

''किसिम-किसिम के फूल'' के काव्य-दृष्टि

✍ कृष्ण कुमार

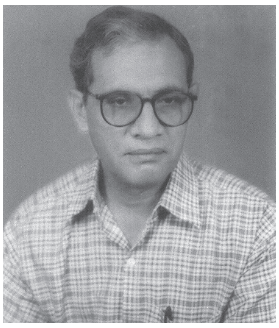

(**'किसिम-किसिम के फूल' (काव्य-संग्रह), लेखक : श्री भगवान पाण्डेय 'निरास'**, नवजागरण प्रकाशन, नई दिल्ली, मूल्य—200/—)

श्री भगवान पाण्डेय 'निरास' के कृति 'किसिम—किसिम के फूल' के कवि के जिनिगी टीस आ बिथा से लबरेज बा। कहे के ढेर बा, बाकिर कह नइखीं पावत। एइजा लातिन अमेरिकी कवि निकानोर पार्रा के कहल बात हमरा इयाद आवऽता, जे अपना पाठक लोग से कहले रहंन कि मुअला का बाद हमरा किताब के जरा दिहऽ लोग। निकानोर पर्रा के ऐंटीपोएट धारा के अगुआ कहल गइल बा। अपना एगो महान कृति के अपना पाठक लोग से ओह किताब के जरावे के आग्रह का पाछा कारन रहे। ऊ ई सोचत रहले कि उनकर कविता, उनका भीतरी चले वाला तूफानी लहरन के नुमाइंदगी नइखे करत। ऊहाँ के ईहो कहनी कि आजु तक जवन कुछ कहनी—लिखनी ऊ सभ हम वापस ले तानी। श्री भगवान पाण्डेय के कर्मक्षेत्र से लेले साहित्य तक जवन ऊहाँ के बारे में अबले हम अनुभव कइले बानी, ओह में निकानोर पार्रा के विचारधारा से मिलत—जुलत पवले बानी। जीवन आ समाज खातिर ऊहाँ के करेजा में आग विचार के हमेशा तलफत रहेला...।

'किसिम—किसिम के फूल' के पढ़ल हमरा खातिर एगो दुर्लभ अनुभव रहल। अपना सहयात्री कवि के कृति पर सहयात्री कथाकार के प्रतिक्रिया कबहूँ आलोचनात्मक सिद्धान्तन आ माप—दण्डन प आधारित ना होला। ऊ हमेशा रचनाकार के निजी आग्रहन आ प्रवृतियन से प्रेरित होला। हमरो हो सकेला।

हजार शब्दन से बिनाइल एगो कहानी के बजाय कबो—कबो सइ शब्दन के एगो कविता के प्रभाव अधिका होला। हालाँकि जीवन के अनुभव, उतार—चढ़ाव के कविता में व्यक्त कर पावल आसान त नइखे, बाकिर निरास जी एकरा के सम्भव क के देखवले बानी। जीवन जात्रा में ऊहाँ के कवना—कवना तरह के समस्यन से लोहा लिहले बानी बाकिर समस्यन के सोझा कबो झुकल नइखीं। उहाँ का अपने—आप में ढेर सारा सकारात्मक परिवर्तन ले आके, अवरू सशक्त बन के मुठभेड़ कइनी। कथ्य में एह सभ बातन के ऊहाँ के अलगा—अलगा गीत आ गजलन के माध्यम से बतवले बानी।

ई कइसन आधुनिकता के दौर आइल कि जवना में संवेदना गुम होत जा रहल बा। एह निष्ठुर आ आतताई समय मे साँच के बार—बार सलीब पर लटकावे

के ताबड़तोड़ मानवीय कोशिश हो रहल बा। अकरावन दमघोंटू समय में, निरास जी के काव्य–संग्रह एगो उम्मेद के अँजोर निअन लागऽता। आजु के जहवाँ रिश्ता–नाता के अहमियत आ तासीर खतम हो रहल बा, ओहिजा साहित्य से कविता के लोप होखल स्वाभाविक बा। उहो भोजपुरी में। लिखला के बाद छपवावल। मटियो ढोअला से भारी काम। कतना पहलवान कलम उठा के ध देलें। ई बुरबकाही काहें खातिर...? बाकिर कहाब हऽ– "शान–बलिदान मातृभाषा खातिर नाहीं, त नाम मत लिहऽ, ओइसन नमकहराम के....।" माई आ मातृभाषा ई दूनों जीवन के अमूल्य पहिचान हऽ। एह दूनों के छोड़ देनी, त सभ छोड़ देनी। अइसन विकट समय में 'किसिम–किसिम के फूल' लेके आइल, आश्चर्य के साथे सकूनो देता। इहाँ के कंठ के मधुरता आ शब्दन के सटीक प्रयोग के हम अंदाजन चालीस बरिस से हिमायती रहल बानी। एह संग्रह के गीत आ गजल पत्र–पत्रिकन में प्रकाशित हो चुकल बा....।

निरास जी एगो संवेदनशील आ उदारमना कवि हईं जे, अपना कविता में जनजीवन के प्रभावित करे वाली ओह सभ घटनन के एगो मानवीय रूपक रचले बानी, जवन ऊहाँ के लउकल बा। काल्पनिक दृश्य विस्तार के जगहा यथार्थवादी तत्व इहाँ के काव्य में उपस्थित बा। ओज, शौर्य, प्रेम आ सौंदर्य सभ ऊहाँ के कविता में एके साथ आकार पवले बा। आंदोलितो करऽता आ आहलादित। उत्प्रेरित करऽता आ आश्वस्तो। कठोरता आ कोमलता दूनों बा। हमरा कहे के अरथ ई बा कि कई गो काव्य–प्रवृति एह किताब में एके साथे विस्तार पावऽतारी सऽ। एह से हम निरास जी के द्वंद्वात्मक ऐक्य के कवि मानऽतानी। ऊहां के गजलन में गद्यात्मकता ना हावी होके, भीतरी स्तर प एगो लय, धुन आ संगीत हाजिर बा। संप्रेषणीय आ अर्थगर्भित। ऊहाँ के शिल्प, भाषा, मुहाबरा आ वैचारिक दृष्टि के लेके संग्रह महत्वपूर्ण हो गइल बा। पाठक लोग के आपन निजी घर आ पड़ोसिया से संवाद लेखा लागऽता। एह संग्रह में सामाजिक उत्तरदायित्व के बोध, मानवीय संवेदनन के तलाश आ आत्मालोचन के प्रवृति सहजे लक्षित होता। हालाँकि कवि के पहचान मधुर गीतन के वजह से बा। बाकिर ओकरा से पहिले एह संग्रह के गीत–गजलन के पढ़ि के ऊहाँ के बहुआयामी व्यक्तित्व के पता चलऽता। किताब के भूमिका 'आपन हारल' में निरासजी स्पष्ट क देले बानी–

"आजु–काल्हु–परसों–तरसों में, बरिसो–बरिस खिंचाइल बा।

रहे छिटाइल जहाँ–तहाँ जे, सभे कहाँ बटुराइल बा।

मिलल जवन आ सँपरल जतना, भाव जवन छपिटइल बा।

किसिम–किसिम के फूल समेटत, उहे रूप ले आइल बा...।"

'निरास' जी एह चार पंक्तियन के माध्यम से अपना किताब के कथ्य का ओर संकेत कइले बानी। ई काव्य–संग्रह उनका विचार से एगो छिंटाइल छिंटिका हऽ। धार अभी बाकी बा। कल्पना मिश्रित यथार्थ के लपेटत छोट–बड़ गीत–गजल पाठक लोग के अपना साथे एगो अलग दुनिया में ले जाता। खड़ा–तिरछा बिम्ब सहसा अचंभित त करते बा, साथे बिना आभास के पाठक लोग के अपना लय में बान्हि के राखऽता। हर मौसम आ हर तरह के अनुभूतियन से जनमल गीत–गजलन के उनवान 'किसिम–किसिम के फूल' बा, जवना में पाठक स्वयं के जुड़ल पावऽतारें। ई किताब, पाठकन खातिर, इहो संभावना जगावत बा कि श्री भगवान पाण्डेय आवे वाला समय में अवरू–अरथवान सिरिजन करिहें। ●●

❑ महावीर स्थान के निकट, करमन टोला, आरा, बिहार

समकालीन भोजपुरी साहित्य के सोगहग लेखा–जोखा

विजय शंकर पाण्डेय

(समकालीन भोजपुरी साहित्य कऽ समीक्षात्मक अध्ययन', लेखक : डॉ. अर्जुन तिवारी, प्रकाशन वर्ष– 2018, मूल्य–290/–, प्रकाशक : हिन्दुस्तानी एकेडेमी, 12डी, कमला नेहरू मार्ग, प्रयागराज, 211001)

भोजपुरी साहित्य संवाद के साहित्य हऽ 'परस्परं भावयन्तः' के खांटी रूप भोजपुरिया भाई जानेले। कुछ सुने के मन, कुछ सुनावे के मन, सुन–सुना के एक होखे तब असली मन के बातचीत होला – मतलब इहे कि द्वैत (दू) मिलके अद्वैत (एक) भइल, भोजपुरी साहित्य के असली मर्म हऽ। 'तर्ज और तरन्नुम है शायरी की शान' से बढ़के शाश्वत मनोहारी साहित्य तबे होई जब मुक्तिबोध के कहलका के समझल जाई– "कला–शरीर की नसों में नया रक्त और नवस्फूर्ति का संचार जनता के अथाह हृदय के सम्पर्क में आने से ही होगा।" जन आ जन पक्षधरता से आगे भोजपुरी साहित्य बा जवना में 'जन' से बढ़के 'जान' खातिर क्रौंच पक्षी, पवन, बादल से आत्मीय भाव साधल गइल बा। अपना माटी, माई, मानुस खातिर जेतना ऊँचा भाव भोजपुरी में बा ओतना कहीं ना लउके; जइसे– / गउवाँ गिरउवाँ सहर भये बाबा/सहर भये बाबा जहर भये बाबा।/ एही के चलते समकालीन भोजपुरी साहित्य के कवि 'सुन्दरजी' के गोहार सुनीं–

खेतवा जगावे, खेतनिया जगावे
अमवा–महुइया बगनिया जगावे
फटही लुगरिया में धनिया जगावे
सुसकेले अँचरा पसार।
बतावऽ भइया, जगबऽ त कहिया ले जगबऽ?

भोजपुरी जगत के जगावे खातिर 'गरिमामयी भोजपुरी : अनमोल संस्कृति थाती', 'समकालीन भोजपुरी साहित्य कऽ स्वरूप–विवेचन', 'समसामाजिकता आ भोजपुरी काव्य–जगत', 'आधुनिक नाटक', 'उपन्यास', 'कहानी', 'पत्रकारिता', 'निबंध', 'फिल्म', 'आलोचना', 'विविधा' नामक एगारह अध्याय में भोजपुरी भाषा आ साहित्य के विविध विधा के लेखा–जोखा प्रस्तुत करे में डॉ. अर्जुन तिवारी अपना नाम के सिद्ध कइले बाड़े अउर परिश्रम से साहित्येतिहास के जानकारी दिहले बाड़ें।

लेखक भोजपुरी के बहाने भोजपुरी बोले वालन के सुभाव, चरित्र क बहुत बारीकी से बखान कइले बाड़न। इहाँ तक कि औरत लोगन के गीत के जगह–जगह देखवला के साथ भोजपुरी भाषा समाज में केतना अन्दर तक ओनके मानस में घुसल हौ ओके बहुत बढ़िया तरीके से छान के लिया के लोगन के दिखाये बाड़न। सुख में दुःख में हर जगह भोजपुरी गति पावल जाले। ई लेखक प्रमाणित कइले बाड़न।

ग्रियर्सन अपने किताब में भोजपुरी बोले वालन के विषय में जवन लिखले बाड़न, ओहू के लेखक कोट कइले बाड़न। एहसे त एह बात के बल मिलत हौ कि खाली भोजपुरी बोले वाले एह भाषा क इहाँ के लोगन क प्रशंसा नइखीं कइले, एक बिदेशी विद्वानो कइले बाड़न– "ग्रियर्सन कहलन कि भारत में दू कौम बंगाली बोले वाले आ भोजपुरी बोले वाले ये लोग महान नागरिक हवन, भारत में एक अपने कलम से, दूसरा अपने लाठी से महान हवन।"

महापंडित राहुल बाबा के कहनाम रहे कि "हिन्दी हमार बड़ी माई हौ, ओसे

नेह तोरे के काम नइखे। ए बात के लेखक इहाँ उद्धृत कइके ई सनेस देवल चाहत बाड़न कि हिन्दी भाषा से भोजपुरी के कवनो परहेज आ बिरोध ना हौ। हिन्दी के पक्षधर लोगन के भय न खाये के चाहीं।" ई लेखक के पैनी निगाह के सबूत बा कि ऊ लोकस्वर में नारी समाज के प्रचलित सोहर गीत के बँधले बाड़न– / अमवाँ की नाई बाबू मउरे, महुअवा कच लागे/पुरइन पात अस पसरे, कँवल अस बिहसे।'

ई सोहर भोजपुरी भाषा के मिठास अउर ओकरे व्यंजक शक्ति क व्यापक असर के देखावत हौ। डॉ. अर्जुन तिवारी अइसहीं तमाम गीतन के पुस्तक में चर्चा कइले बाड़न जवन ओनके सूक्ष्म निगाह अउर समन्वय के देखावत बा। साहित्य का हर विधा में भोजपुरी के विपुल साहित्य मौजूद बा, चाहे काव्य हो निबन्ध, नाटक, कहानी, उपन्यास आदि हो। साहित्य में जेतना ओकर रूप बा सब विधा में भोजपुरी सम्पन्न बा, एह के डॉ. तिवारी विवरण दे के प्रमाणित कइ दिहले बाड़न। ओही तरह गद्य विधा के रूप में लेखकन के नाम सहित पुस्तक आदि क नाम, बरिस के चर्चा कर के भोजपुरी भाषा में गद्य के गहराई अच्छी तरह नपले बाड़न। सन् 1948 से लेके आज तक सिनेमा के प्रमुख गीतन के मुखड़ा लिख के अपने भाषा आ साहित्य के व्यापकता के प्रदर्शित कइ दिहले बाड़न।

डॉ. अर्जुन तिवारी के परिश्रम के अंदाज ओनके संदर्भ ग्रन्थ के देखले से पता चल जात हौ। भोजपुरी पत्रिकन के उन्नीसवीं सदी से बीसवीं सदी तक एक–एक पत्रिका के नाम बरिस देके अपने सूचनात्मक अध्ययन से व्रर्ण्य–विषय के बलिष्ट कर दिहले बाड़न। एह में 'सरस्वती' पत्रिका के सम्पादक विद्वान महावीर प्रसाद द्विवेदी के पत्रिका वरिस 1914 में छपल हीरा डोम के कवितो के जिक्र कइल बा। हमरे विचार से डॉ. अर्जुन तिवारी के आँखी से साइते कवनो प्रतिनिधि लेखक बँचल हौ, जवने कऽ आप एह पुस्तक में चरचा न कइले हों। भोजपुरी भाषा–साहित्य के अध्ययन करे में ऐतिहासिक संदर्भ पुस्तक का रूप में ई पुस्तक बहुत सहायक होई। ●●

❑ चितईपुर, सुन्दरपुर, वाराणसी

लघुकथा

डाक्टर

कन्हैया पाण्डेय

नौकरी से रिटायर भइला का बाद मास्टर दीनानाथ घर के रंगाई–पोताई करवलें, आ ना जाने केकरा सलाह पर फर्श पर टाइल्स बिछवा दिहलें, घर के रौनक त जरूर बढ़ल, बाकिर फिसल के गिरे के सम्भावना ढेर बढ़ि गइल। एक दिन त उनकर बूढ़ महतरिये घाही भइला से बचली। ओह दिन का बाद जेही उनका घरे आवे, दीनानाथ जी फर्श पर सम्हरि के चले के हिदायत जरूर देसु।

एक दिन भोरही–भोरे उहो घटना घटि गइल, जवना के डर हरदम बनल रहे, जइसे मास्टर साहब अपना शौचालय से बहरिअइलें, पानी गिरला के कारन फिसलि गइलें, आ आहि–माई, आहि बाप करे लगलें। परिवार वाला उनके तुरन्त अस्पताल पहुँचा दिहलें, जहाँ उनका पैर पर प्लास्टर चढ़ा दिहल गइल। एकरा बादो मास्टर साहब के दर्द कम ना भइल, बलुक अउरी बढ़बे कइल, दरअसल प्लास्टर उनका टुटलका गोड़ पर ना, दोसरा गोड़ पर चढ़ा दिहल रहे। दर्द से छपिटात अपना बाप के देखि के उनकर लड़िका डाक्टर के लग्गे जाके बोलल– "डाक्टर साहब! बाबूजी के गोड़ के दर्द त जाते नइखें, बलुक बढ़ले जाता, देखत बानी, प्लास्टर उनुका दायाँ पैर पर चढ़ावल बा, जबकि टूटल बायाँ रहल ह।"

उनका लड़िका के बात सुनि के डाक्टर साहब जबाब दिहलें– "ई बतावऽ! डाक्टर तूं हवऽ कि हम।"

– "आप हवीं!" लड़िका बोलल।

– "इलाज हमरा करे के बा कि तोहरा?"

– "आप के।"

– "त, तूँ चुपचाप शान्त बइठऽ।" – एतना कहि के डाक्टर साहब, अपना काम में व्यस्त हो गइलन। उनका अपना भूल के कुछ एहसास भइल। फिर भी अपना इत्मीनान खातिर उनकर एक्सरे रिपोर्ट दोहरउवा देखलन। लड़िका के शंका साँच रहे। ऊ तुरन्त कर्मचारियन से रोगी दीनानाथ के आपरेशन रूप में ले आवे के आदेश दिहलें आ आनन–फानन में ओह गोड़ के प्लास्टर हटाके, दूसरा पर चढ़ा दिहलें फेरू कर्मचारी उनके उनका बेड पर सुता दिहलें, तनिक देर बार दीनानाथ जी नींद में सूति गइलन फजिरे जब उठलन, तऽ उनकर दर्द काफी कम हो चुकल रहे। दीनानाथ के लड़िका त बुझिये गइल रहे कि ई डाक्टर साहेब अपना काम का दिसाईं कतना सचेत बाड़न। ●●

❑ म.नं.-2ए/298, आ०वि०कालोनी, हरपुर, बलिया।

रिगना

विजय मिश्र

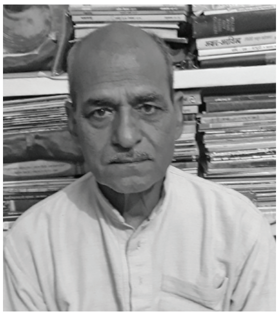

मंगलवार के दिन रहल, हमरा घर के सामने महाबीर जी के मंदिर में सुन्दरकाण्ड के पाठ चलत रहल। हम अपना कोठरी में बइठल पाठ के आनन्द लेत रहनी, तले तीन–चार गो, पाँच–सात साल के लइका झाल बजावत हँसत–कूदत दुआरी पर आइ–आइ, उधम मचावे लगलन सऽ। अचानक रंग में भंग अस बुझाइल, तबो हम सहज भाव में कहनी, "बस–बस हो गइल, अब मंदिर पर जा के बजावऽ लोग।" बाकिर ऊ नधिया गइलन सऽ। बराण्डा से दरवाजा तक हुड़दंग मचा दिहलन सऽ। अब त हमरा उठे के परल। डाँट डपट के उन्हन के भगवनी। कुछ समय बाद ऊ फेरू आ गइलन सऽ। अबकी–जँगला से झाँकि झाँकि झाल पीटे लगलन सऽ। खुनुस त खूबे बरल, बाकिर अचके इयाद आइल अपना गाँवे के बड़ बुजुर्ग रिगना रमन बाबा के हाल। तब समझ में आइल कि हो न हो इन्हन के मंशा हमके रिगावल बाटे। ई हमरो के उनहीं अस, पिनकावल चाहत बाड़ें सऽ।

हम सोचे लगनी इन्हन में अइसन भाव आइल कइसे? हमरा इयाद परत बा कि कबो–कबो रमन बाबा के पक्ष लेके, हम लइकन के लहेंटले बानीं। डाँटल, डेरवावल, सीख दिहल, हमरा सोभावे में रहल बा। सयान लोग उसुका देला तऽ लइका पोंछ धऽ लेलन सऽ। ढेर चल्हांक लोग लइकन के माथे खेलेला, ओही सब के चाल बुझाता। इहे सोचि के हम महटिया गइनी। हारि थाकि के लइका अपने हटि गइलन सऽ, बगदा लोगन के ना लहल। बाकिर मन के चिन्ता ना गइल। केहू के हिरदया के ठेस लगाके, कउँचाइ के मनोरंजन करे के ई कवन रेवाज?

आजुओ हमरा टोला में कुछ लोगन के मनोरंजन के साधन बाड़न 'रमन बाबा'। लइका त लइका सयानो सामिल बा लोग, बलुक लइकन के बहाने सयाने लोग बा। बेमतलब रिगावल, चिढ़ावल आ उनुका के पिनिकावे खातिर लइकन के उकसावल एह लोगन के आदत बन गइल बा। हालत ई बा कि रमन बाबा रिगना बनि गइल बाड़न। आखिर बनिहन काहें ना? जब केहू उत्तेजित करे भा खिसियाये खातिर एके बतिया बार–बार दोहराई भा मजाक उड़ाई त केहू के खीसि बरी। रमन बाबा त सिधवा–सोझिया अदिमी ठहरलन। ऊ जानि बूझि के ना खिसियास। इन्हनी के पिनिकवला से चिढ़ जाले।

जइसे रमन बाबा लउकि जालन त कवनो लइका बोली– " गोड़ लागीं बाबा", 'जीयऽ'। तलहीं दुसरका आ जाई, "गोड़ लागऽ तानी बाबा", 'खुश रहऽ'। फेरु तिसरका बोली– "पांव लागी बाबा", बाबा मौन मूड़ी डोला दिहन। अभी ई चलते रही तले आगि में घी डालत केहू अऊर केहू आ जाई, ऊ लइका ना सयान रही– 'तहार धोतिया त बड़ा साफ चहकदार बा ए बाबा।' "हँ, हो।" ओकरा पाछहीं दोसरका बोली– "नील टीनोपाल लगावल बुझाता?" बाबा पिनिक जइहें, "त का कह तारऽ फारि दीं?" तले तीसर सयान कहीं– "ना ए बाबा, गमछिया नाया किनाइल हा का?" "ना मनबऽ सऽ रुकि जो"– बाबा कट कटइले खीसिन गमछा फेंकि दिहलें, धोती फारि चीरि दिहले। बाबा सचमुच खीसि करत–करत पगलाइये जासु। शरीर पर एगो सुबहित वस्त्र नइखन रहे देस। एह हाल पर ऊ त हँसत भगबे करिहें सऽ, दोसरो लोग, ए पिनिक लीला के मजा लेबे लागी।

हमरा ई बुझाइल कि रमन बाबा हँसी के पात्र नइखन, बलुक हँसी के पात्र ऊ सभ लोग बा, जे इनिका के हँसी के साधन बनवले बा। हमरे ना, रउरो गाँव में अइसनका कुछ लोग होइहें, जेकरा के रिगाइ के, ओकरा सम्मान के ठेस लगाइ के बहुत लोग आपन मनोरंजन करत होइहें। रउआ एह बारे में का सोचत बानीं? ●●

❑ ग्राम : टण्डवा, पो० बंकवा, बलिया।

इतिहास/धरोहर

शेरशाह का सासाराम

स्वयम्बरा बक्सी

घुमक्कड़ी के मोका आ अवसर हमके कम्मे मिलेला बाकिर जिज्ञासु मन, अइसन अवसर गँवावे ना देला। हमरा मन में कई दिनन से सासाराम में शेरशाह के मकबरा देखे के इच्छा रहे। शेरशाह का बारे में हम पहिलहीं से बहुत कुछ सुनले–पढ़ले रहलीं। छुट्टी मिलते हम अपना संस्था 'यवनिका' का चार साथियन का सँगे योजनानुसार चल दिहनी। अइसे त हमनी का योजना में पहिले रोहतासगढ़ के किला देखे के रहे बाकि किला ले पहुँच के समयाभाव में प्लान बदल गइल। ओह बेरा साढ़े तीन बजे वाला रहे आ सासाराम के मकबरा पाँच बजे बन्द होखला का बारे में हमनी के जानकारी रहे, फेर ओही लगले, हमनी का सासाराम मुड़ गइनी जा। चाढ़े चार बजत–बजत हमनी का सामने महान शासक शेरशाह के मकबरा रहे।

शेरशाह के मकबरा बिहार प्रदेश के प्रमुख ऐतिहासिक पर्यटन स्थलन में से एगो हवे। ई रोहतास जिला के, सासाराम में बा आ जिला के मुख्यालय बनल बा। एकरा के सहसरामो कहल जाला। हमनी का शहर आरा से 70 किलोमीटर दूर आ राजधानी पटना से एकर दूरी 180 किलोमीटर बा। सासाराम रेलवे आ सड़क–मार्ग दूनों से जुड़ल बा। राष्ट्रीय राजमार्ग सासाराम शहर का बीच से गुजरेला। एह कारन इहवाँ आवे खातिर सरकारी आ निजी दूनो वाहन के सुविधा बा। मकबरा का अलावा इहाँ, निकट का पहाड़ी गुफा में सम्राट अशोक के लघुशिलालेख सं0–1 अजुओ एह क्षेत्र के ऐतिहासिक महत्व के दरसावत बा। मकबरा का बाहर करिया रंग का सीमेन्टेड बोर्ड पर शेरशाह के परिचय आ अन्य जानकारी का साथ मकबरा के खासियत लिखल/खुदल बा। ई भारत सरकार का पुरातत्व विभाग का संरक्षन में बा (–प्राचीन संस्मारक–पुरातत्वीय स्थल–अवशेष अधिनियम 1958 आ संशोधित अधिनियम 2010 से)।

शेरशाह के बचपन के नाँव फरीद खाँ रहे आ ओकर जनम 1486 ई0 में सासाराम में भइल रहे। एक तरह से ई भारते में जनमल पठान रहले। एगो छोट क्षेत्र के सरदार सेना नायक के रूप में उभर के, शेरशाह अपना के एगो सक्षम सेनापति और शासक के रूप में प्रतिष्ठित कइलन। मुगल शासक हुमायूँ के 1540 ई0

में चौसा, बक्सर में पराजित कइले का बाद उनका बुद्धि– चतुराई आ कूटनीतिक क्षमता के लोहा मुगलिया सल्तनत माने लागल। 1540–1545 का अपना पंचवर्षीय शासन में ऊ नया नगरीय–व्यवस्था आ सैन्य–नियंत्रण के तंत्र विकसित कइलन। वित्त आ संचार (डाक) के संगठित कइला का साथ–साथ बंगाल के चटगाँव तक ग्रान्ड ट्रंक रोड के मार्ग विकसित करे खातिर उनका ऐतिहासिक योगदान के भुलाइल ना जा सके।

सासाराम स्थित शेरशाह के मकबरा स्थापत्य कला के सुन्दर नमूना बा जवना के हिन्दू–इस्लाम मिश्रित शैली में सादगी से बनावल गइल बा। कुछ विद्वान एके अफगान–स्थापत्य–कला से जुड़ल उत्तम नमूना मानेला। एगो विशाल तालाब का बीचोबीच पत्थरन से बनल विशाल चबूतरा के आधार बना के ईंट से एगो भव्य इमारत बनावल बा। 9.15 मीटर ऊँच एह चबूतरा के चारो ओर देवाल बनल बा। चारो कोन पर अष्टकोणी भू–योजना वाला गुम्बदनुमा मण्डप बनावल गइल बा। चबूतरा का बीच अष्टकोणी बिनावट में मुख्य मकबरा बनल बा। एक भाग के लम्बाई सत्रह मीटर बा आ ओकरा चारो ओर 3.18 मीटर चौड़ा बरामदा बा। मुख्य इमारत का ऊपर बनावल गइल गुम्बद के आठ कोना पर खम्भा वाला आठ गो छोट–छोट गुम्बदनुमा छतरी, मकबरा का स्थापत्य–शैली आ सुन्दरता के परिचायक बाड़ी सन। चबूतरा पर बनल एह गुम्बदनुमा मकबरा के ऊँचाई 375 मीटर बा।

मकबरा का भीतर ऊँजोर के कमी का वजह से सब कुछ धुँधला लउकत रहे, ओही में विशेष तौर पर सजल एगो कब्र लउकल। साइत ऊहे शेरशाह के रहे। हालाँकि मकबरा का ऊपरी भाग में कई गो झरोखा, भीतरी भाग का अँजोर आ हवा खातिर बनल लउकल, बाकि ऊ बन्द क दिहल गइल रहे। गार्ड बतवलस कि पहिलें एही झरोखन से हवा आ अँजोर आवे आ भीतर सब कुछ साफ–साफ लउके, बाकिर ऊपरी मंजिल पर भइल कवनो दुर्घटना का कारन कूल्हि झरोखा बन्द करा दिहल गइल।

मकबरा का पच्छिमी देवाल का ऊपरी भाग में बनल मुख्य मेहराब के ऊपरी हिस्सा में छोट–छोट मेहराबनुमा ताखा बाड़न सऽ ओमे एगो अभिलेख खुदल बाटे –''हिजरी संवत् 352 के जुमदा के सातवाँ दिन शेरशाह के बेटा सलीम शाह ने (16 अगस्त 1545 में) शेरशाह की मृत्यु के तीन माह बाद यह निर्माण संपन्न कराया। ओह मकबरा आ ओकरा भीतरी कारीगरी के देखला का बाद हमके थोड़ी देर खातिर ई जरूर अनुभव भइल कि इतिहास आ गुजरल अतीत का ओह कालखण्ड के स्थापत्य–शिल्प–कला कतना उन्नत रहे आ अपना समय के महानायक का कीर्ति–प्रतिष्ठा के अमर बनावे खातिर ऊ लोग केतना संवेदनशील आ चिन्तित रहे।

प्रवेश खातिर टिकट काउन्टर से टिकट लेबे के नियम बा, कैमरा ले जाये खातिर अतिरिक्त शुल्क देबे के व्यवस्था बनावल बा। मोबाइल पर रोक नइखे। प्रवेश द्वार पर चेकिंग का बाद भीतर गोड़ धरते दुर्गन्ध के भभका आइल। दरसल उहाँ पानी में लोगन द्वारा फेंकल फालतू कूड़ा करकट का सडाँध का कारन आवत रहे हालाँकि आगा तालाब के पानी आ मकबरा के भीतरी हिस्सा साफ–सुथरा रहे। प्रवेश का बाद पत्थरन से बनल सीढ़ियन से नीचे उतरे के रहे, फेरू सीढ़ियन से चढ़ के ऊपर चबूतरा पर जाये के रहे। ओही सीढ़ियन से क्षितिज का ओरी बढ़त सूरज का प्रकाश में हम मकबरा के फोटो अपना मोबाइल में कैद कइनी।

साँझ साढ़े पाँच बजे मकबरा बन्द होखे का पहिले हमनी का छतरी वाला मण्डपन का साथ विशाल चबूतरा वाला देवाल में बनल जालीदार झरोखन आ मेहराबदार आकर्षक गुम्बदन के देखनी जा। मधुमक्खियन के बड़का छत्ता आ चारू ओरी जीवन फूँकत कबूतर आ तोतन के देखनी जा। किनारे किनारे लागल बगइचा आ पार्क के लोगन के आवाजाही आ लड़िकन क खेल लउकल। बगले के मस्जिद के प्रांगण में लोगन के हजूम अलगे रहे। सबकुछ का बादो हमन के एह खास स्थल पर कुछ कमियो लउकल। शेरशाह जइसन विलक्षण योद्धा आ शासक का नाँव से, एह इलाका के नाँव ओकरे पर्याय बनल बा, लेकिन एकर देख–भाल जवना चेतना से होखे के चाहीं ना लउकल, ना त सरकारी तौर पर आ नाहिंये जनता का ओर से। गुम्बद करिया हो रहल बा काई से आ उहाँ स्वच्छता सुन्दरता खातिर हमनी नियर दर्शको लोग के कुछ जिमवारी बा। ●●

❑ बक्सी हाउस(रेनबो किड्स प्ले स्कूल), राजेन्द्र नगर,
मोती सिनेमा के सामने, आरा–802301, बिहार

नयका जमाना के तर्क

हीरालाल 'हीरा'

बीगन ई सुनि के बड़ा खुस भइले, कि उनकर लकिरा महेश कमाये खातिर गुजरात जाये वाला बाड़न। बीगन तऽ मजदूरे रहलन। लगान, बटाई पर थोर बहुत खेती करसु आ जब मोका मिले त बेर–बागर मजदूरियो कइ लेसु। आपन जाँगर ठेठा के परिवार चलावत ऊ महेश के पढ़वले, बाकिर महेश दस पास ना कइ पवले। उनुका घुमला आ मटरगस्ती से फुरसते ना मिले। उनुका के ना केहू डाँटे, ना बोले, काँहे कि ऊहे एगो आँखी के लकड़ी रहले। कबो मन में आवे त दू–चार दिन कही सफियाना मजदूरी करसु, नाहीं त बहाना मारि के घर में सूतल रहसु।

बीगन उनकर बियाह ई सोचि के कइ दिहले कि बियाह बाद जब बेकति आई त खुद सुधरि जइहें, बाकिर उनकर सोच गलत निकलल। कुकुर के पोंछि सोझ ना भइल। उल्टे कुछ टोकला कहला पर ऊ बाप से जबानो लड़ावल शुरू कइ देले रहले। समय के साथ, उनुका दू गो संतानो पैदा हो गइल। बोझा एही तरे न बढ़ेला।

ऊहो दिन आ गइल जब महेश आजिज आके खरचा–पानी जुटाइ के गुजरात के गाड़ी धइ लिहले। घर भर लोर चुआवत उनकर विदाई कइल। बीगन कहले, "जा ठीक से कमइहऽ–खइहऽ आ नीरोग रहिहऽ। भुलइहऽ जिन।" महेश के भागि साथ दिहलस। एगो लोहा के कारखाना में नोकरी मिल गइल। देहन बरियार रहले। मन लगा के डिउटी करसु। पगार मिलला पर घरहूँ कुछ रूपया भेंजे लगले। गाँव पर बाबू, माई आ मेहरारू सभे खुश भइल। मेहरारू से रोज मोबाइल पर बातो होखे लागल।

कुछ दिन का बाद गँवें–गँवे मनीआडर कम होखत गइल। माई–बाबू फिकिरमंद भइले, बाकिर उनुका मेहरि पर कवनो असर ना लउके। उनकर बाजार–हाट आ खरीद बेसाह दिनों–दिन बढ़ते गइल। अब त लइकवो स्कूले जाये लगलन सऽ त खर्चा बीगन के बढ़ल।

जाड़ा के दिन रहे। महेश छुट्टी आइल रहले। सभ केहू कउड़ा पर आगी तापत रहे। महेश बहकत रहले। पासो–पड़ोस के दू चार लोग रहे। एही बीच बीगन महेश से कहले – "ए बबुआ! तनी हमनियों पर खियाल करऽ। तूँ घर के हाल बुझते होइबऽ। जाड़ में तन पर गरम कपड़ा आ ओढ़ना बिछौना लागेला। घर क खरचा बढ़ले जाता। बेर–बागर करजो गुलाम के नउबति आ जात बा।"

"का करीं? बतावऽ जब हमरे के नइखे आँटत, त कहवाँ से इन्तजाम करीं। कइसो जवन बाँचता, भेंजते बानी।" ऊ निठोठे जबाब दिहले।

"बड़ा मेहनत से मर मजूरी कइके तोहके एही दिन खातिर पालि–पोसि के सेयान कइले बानी। तूँ ना हमनी के खियाल करबऽ तऽ दोसर के बा जेकरा से उमेद कइल जाई।"

"त ई कवन बड़ काम कइले बाड़? ई त दुनियादारी हऽ आ सभे करेला। तोहरो बाप, तोहरा के पोसले, तू हमरा के पोसलऽ, आ हम अपना बाल बच्चन के पोसत बानी।" बीगन चुपा गइले। ई नया जमाना के तर्क रहे। ●●

❑ रामपुर, नई बस्ती, बलिया–277001